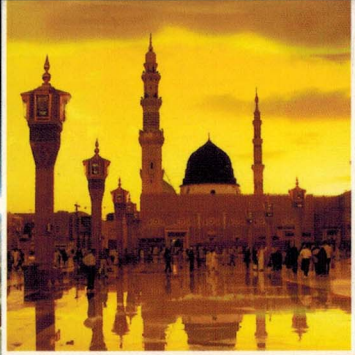

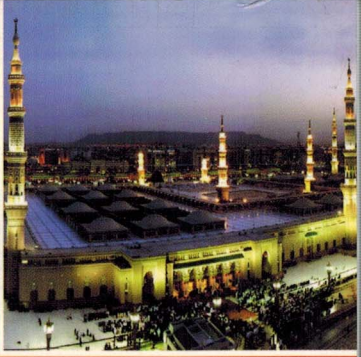

# पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद ﷺ का जीवन

मौलाना वहीदुद्दीन खाँ

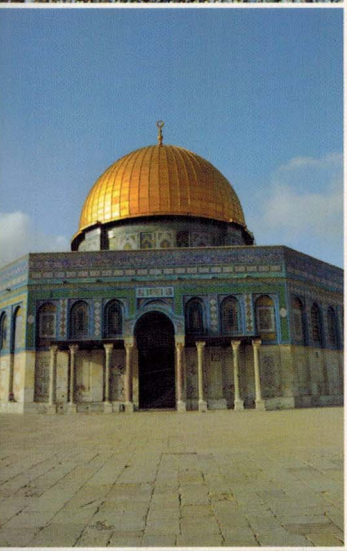

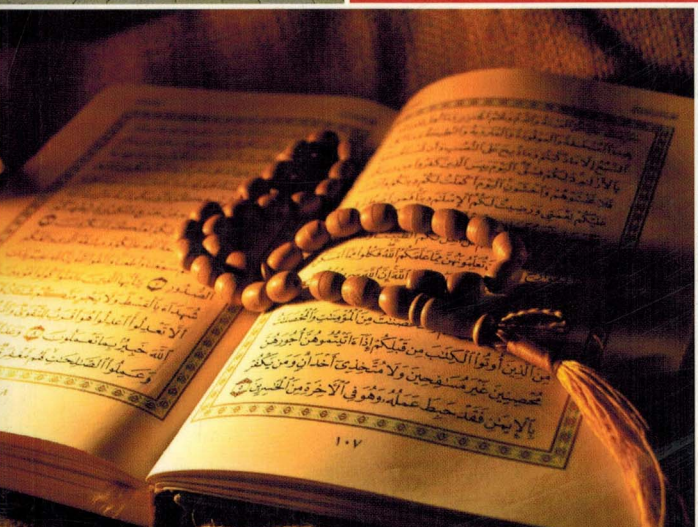

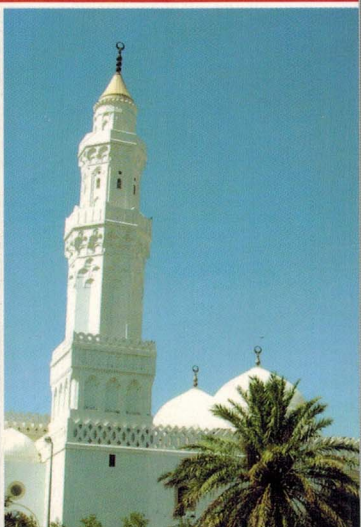

# पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद ﷺ का जीवन

मौलाना वहीदुद्दीन खाँ

अनुवाद

डा० मुस्लिमा सिद्दीक़ी

गुडवर्ड बुक्स

*Payghambar-e-Islam Hazrat Muhammad Ka Jiban*
(Hindi translation of *'Seerat-e-Rasool'*)
First published 2013
This book is copyright free

Goodword Books
1, Nizamuddin West Market
New Delhi-110 013
e-mail: info@goodwordbooks.com

see our complete catalogue at
www.goodwordbooks.com

Printed in India

# विषय सूची


| | |
|---|---|
| प्रारंभिक परिस्थितियां | 5 |
| मुहम्मद (स०) को पैग़म्बरी मिलना | 15 |
| मक्का में इस्लाम का प्रचार | 20 |
| विरोधी प्रतिक्रिया | 24 |
| आहवानपरक घटनाएं | 26 |
| कबूले इस्लाम | 36 |
| सार्वजनिक प्रचार | 40 |
| अंतिम प्रयास | 46 |
| हबश प्रवास | 53 |
| हज़रत मुहम्मद का निष्कासन | 58 |
| अबू तालिब के निधन के पश्चात | 65 |
| मदीने में इस्लाम का आरंभ | 71 |
| मदीने की ओर हिजरत (प्रवास) | 79 |
| मदीने में प्रवेश | 84 |
| मस्जिद का निर्माण | 91 |
| मुवाख़ात (बन्धुत्व) | 93 |
| मदीने का समझौता | 97 |
| मुहाजिरीन के दस्ते | 100 |
| हिजरत के बाद | 104 |
| ग़ज़्व–ए–बद्र ऊला | 107 |
| ग़ज़्वः बद्र सानिया | 109 |
| ग़ज़्वः कुरकुरतुल कुदर | 117 |
| ग़ज़्वः बनी क़ैनुक़ाअ | 117 |
| ग़ज़्वः सवीक़ | 118 |
| विवाह सैयदा फ़ातिमा | 119 |
| ग़ज़्वः ग़तफान | 120 |
| ग़ज़्वः नजरान | 121 |
| ग़ज़्वः उहुद | 121 |
| ग़ज़्वः हमरा अल–असद | 128 |
| सरिया अबि सलमा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद | 129 |
| रजीअ की घटना | 130 |
| सरिय्यतुल कुर्रा अर्थात बिअ्रे मऊना की घटना | 131 |
| ग़ज़्वः बनी नज़ीर | 132 |
| ग़ज़्वः ज़ातुर्रिक़ाअ | 133 |
| ग़ज़्वः बदर मौइद | 134 |
| ग़ज़्वः दूमतुल–जन्दल | 134 |
| ग़ज़्वः मुरयसीअ या बनी–अल मुस्तलक़ | 135 |
| इफ़्क वाली घटना | 135 |
| ग़ज़्वः ख़न्दक़ या ग़ज़्वः अहज़ाब | 136 |
| ग़ज़्वः बनू क़ुरैज़ा | 139 |
| सरिय्या मुहम्मद बिन मुस्लिमा अनसारी (रज़ि०) | 140 |
| ग़ज़्वः बनी लेहयान | 141 |

गज़्वः ज़ी क़िरद 141
सरिय्या उकाशा–बिन मुहसिन 142
सरिय्या मुहम्मद बिन सलमा 142
सरिय्या अबू उबैदा बिन
अल–जर्राह 143
सरिय्या जमूम 143
सरिय्या–ईस 143
सरिय्या तरिफ 144
सरिय्या–हिमा 144
सरिय्या वादी–उलकुरा 145
सरीया दूमतुल–जन्दल 145
सरिय्या फिदक 146
सरिय्या उम्मे क़िरफा 146
सरिय्या अब्दुल्लाह बिन रवाहा 147
सरिय्या कुर्ज़ बिन जाबिर
अल–फेहरी 147
बअस उमर बिन उमय्या ज़मुरी 148
हुदैबिया संधि 149
सरदारों का इस्लाम क़बूल करना 152
विश्व के शासकों के नाम पत्र 153
क़ैसर–रोम के नाम पत्र 154
खुसरो परवेज़ के नाम पत्र 156
गज़्वए ख़ैबर 156
गज़्वए मुअतः 158
सरिय्या अम्र बिन अल–आस 159
मक्का की फ़तह (विजय) 160
गज़्वः हुनैन, औतास और तायफ 168
तायफ का मुहासिरा 170
सरिय्या उययना 171
बअस वलीद बिन उक़बा 172
गज़्वः तबूक 173
अबू बक्र सिद्दीक के
नेतृत्व में हज यात्रा 177
आमुल वुफूद (प्रतिनिधिमंडल
के आने का वर्ष) 177
हज्जतुल वदाअ 179
जिब्राईल की आमद 180
सरिय्या उसामा बिन ज़ैद 181
अंतिम समय 181
बीमारी की शुरूआत 181
रसूलुल्लाह की अंतिमसामूहिक
नमाज़ और हज़रत अबू बक्र को
इमामत का आदेश 182
निधन 182
सहाबा में बेचैनी 183

# ikjfHkd ifjfLFkfr;k

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के वंशज हज़रत इबराहीम थे। हज़रत इबराहीम का समय 2160 से 1985 ई० पूर्व है। चार हज़ार वर्ष पूर्व वे अपने देश इराक़ से निकले और अपने छोटे पुत्र इस्माईल को हिजाज़ (अरब) के एक निर्जन स्थान (मक्का) में बसा दिया। हज़रत इस्माईल बड़े हुए तो उन्होंने जुरहुम समुदाय की एक सुचरित्रा कन्या से विवाह कर लिया। उनके द्वारा इस रेगिस्तानी वातावरण में एक नस्ल तैयार हुई जिसके अन्दर उच्च मानवीय गुण थे, क्योंकि वहाँ सामाजिक जीवन और सभ्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। यह स्थान शहर से काफ़ी दूरी पर होने के कारण सामाजिक सभ्यता के सारी बुराईयों से दूर था। प्राकृतिक वातावरण में रहने के कारण उनके अन्दर सत्य–निष्ठा, साहस, वीरता और ईमानदारी जैसे मानवीय गुण पूरी तरह विद्यमान थे। यही सबब था कि सभ्य समाज की तुलना में, उनके अन्दर यथार्थ को समझने की योग्यता बहुत अधिक थी।

हज़रत इबराहीम अपने धार्मिक प्रचार की यात्रा के बीच कभी कभी मक्का आते और घर वालों की देख रेख करते। जब हज़रत इस्माईल बड़े हुए तो हज़रत इबराहीम ने उनको साथ लेकर मक्का में एक–अल्लाह की इबादत के लिए एक छोटा सा घर अपने हाथों से बनाया। हज़रत इबराहीम ने उस घर की देख–रेख और उसका उत्तरदायित्व हज़रत इस्माईल को सौंपा और खुदा से इस्माईल के वंश के विस्तार (proliferation) के लिए दुआ की। काबा पृथ्वी पर पहला घर था जो केवल एक ख़ुदा की इबादत के लिए बनाया गया।

हज़रत इस्माईल की साठवीं पीढ़ी के अंतराल के बाद अबदुल मुत्तलिब ने जन्म लिया। इस समुदाय का नाम कुरैश था। अरब के सारे परिवारों में कुरैश का परिवार सर्वाधिक आदरणीय एवं श्रेष्ठ समझा जाता

था। इस परिवार में बड़े बड़े और सम्मानित व्यक्तियों ने जन्म लिया था। उदाहरणार्थ (अदनान, नज़्र, फ़िह्र, कुसइ बिन किलाब) इत्यादि। कुसइ अपने समय में ख़ाना काबा (मक्का में ख़ुदा का घर) के अधीक्षक बनाए गए। इस कारण से उनके यश एवं कीर्ति में बहुत अधिक वृद्धि हुई। कुसइ ने बहुत बड़े बड़े कार्य किए।

कुसइ से पूर्व कुरैश के पारिवारिक जन विभिन्न स्थानों पर अव्यवस्थित तौर पर थे। कुसइ ने इन सबको मक्का में काबा के निकट बसाया। उनके लिए मकान बनवाए और उनको संगठित कर एक छोटा सा साम्राज्य स्थापित किया। इस से अरब में उनको राजनेतिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई। यहां से उनका एतिहासिक युग आरंभ होता है।

काबा समस्त अरब का केंद्र था। हज के अवसर पर हज़ारों लोग यहां दर्शन के लिए आते थे। कुसइ से पूर्व यहां उनके आदर–सत्कार का कोई उचित प्रबन्ध न था। कुसइ ने कहा इन हाजियों का आदर–सत्कार करना हमारा कर्तव्य है। इस कार्य के लिए उन्होंने नियमित धनराशि नियुक्त की। इस धन से हाजियों के भोजन का प्रबंध किया जाता था।

यह कार्य उनके बाद उनके परिवार जन करते रहे। यही कारण था कि कुरैश का समूचे अरब में अत्यधिक आदर था। अरब में अधिकांश लूट–मार का रिवाज था जिसके कारण मार्ग सुरक्षित न थे। काबा के प्रबंधक होने के कारण कुरैश के क़ाफ़िले को कोई नहीं लूटता था। और वे शान्तिपूर्वक व्यापार की सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाते थे। अबदुल मुत्तलिब जो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के दादा थे, उन्होंने काबा के अधिक्षक कार्य–काल में बहुत से कार्य किए। उनमें सर्वश्रेठ कार्य यह था कि ज़मज़म का कुआँ जो बंद होकर गुम गया था उसको कठोर परिश्रम से साफ कराया। इससे उनका सम्मान और अधिक बढ़ गया।

अबदुल मुत्तलिब के दस पुत्र थे जिन में से पांच अत्यधिक प्रसिद्ध हुए। एक अबदुल्लाह जो पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पिता थे। दूसरे

अबू तालिब जो यद्यपि इस्लाम नहीं लाए परन्तु वे अपने अंतिम समय तक आप के अभिभावक बने रहे। तीसरे हज़रत हमज़ा और चौथे हज़रत अब्बास। आप के इन दोनों चचाओं ने इस्लाम कुबूल किया। पांचवें अबू लहब– अबू लहब अपनी इस्लाम दुश्मनी में बहुत मश्हूर हुआ।

अबदुल मुत्तलिब के पुत्र अबदुल्लाह में अरब के सारे विशिष्ट गुण थें। अबदुल्लाह का विवाह आमना से हुआ जो ज़ोहरा वर्ग के मुखिया वहब बिन अबद मुनाफ की पुत्री थीं। वे कुरैश के एक उच्च वर्ग की श्रेष्ठ और आदरणीय स्त्री मानी जाती थीं इन्हीं अबदुल्लाह और आमिना से मुहम्मद बिन अबदुल्लाह बिन अबदुल मुत्तलिब का जन्म हुआ जो मानवता के सारे उत्कृष्ट गुणों का संपूर्णतया उदाहरण थे। आपके जन्म से पूर्व ही आपके पिता अबदुल्लाह का देहांत हो चुका था।

मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म 9 रबी अल अव्वल (22 अप्रेल 571ई०) को हुआ। आपके जन्म का समाचार दादा अबदुल मुत्तलिब को मिला तो वह आपको लेकर काबा गए। वहां उन्होंने नवजात शिशु के लिये अल्लाह का धन्यवाद किया और दुआएं मांगीं। आपके जन्म के सातवें दिन अबदुल मुत्तलिब ने आपका अक़ीक़ा (बच्चा पैदा होने के बाद बाल मुंडवाने और खाना खिलाने की रीति) किया और आपका नाम मुहम्मद रखा। अक़ीक़ा के इस समारोह में समस्त कुरैश वर्ग सम्मिलित था।

मुहम्मद का नाम अरब में नया था। कुरैश ने इस असमान्य नाम रखने का कारण पूछा तो अबदुल मुत्तलिब ने कहाः ताकि सारे संसार में मेरे बेटे की प्रशंसा की जाए।

अरब के सम्मानित घरानों में यह चलन था कि वे अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए किसी रेगिस्तान में रहने वाली महिला को सौंप देते थे। ताकि बच्चे का आरंभिक पालन पोषण खुले वातावरण में हो सके। और वो अरबी भाषा का स्पष्ट उच्चारण भी सीख जाए। बद्दु (Bedowin) लोग जो गांव और कसबों में रहते थे उनकी भाषा बहुत सरल और सुंदर

होती थी। इस प्रथा के अनुसार आपको क़बीला बनी बक्र की एक महिला हलीमा बिनत अबी ज़ुवैब के हवाले कर दिया गया। यही वह महिला हैं जो हलीमा सादिया के नाम से विख्यात हुईं।

हलीमा सादिया के वर्णन के अनुसार ''मैं अपने गांव से अपने परिवार की कुछ महिलाओं के साथ इस खोज में निकली कि दूध पीने वाला बालक मिले तो उसको अपने साथ ले आऊं। मैं एक गधी पर सवार थी। हम लोग कठिन यात्रा के बाद मक्का पहुंचे। हम में कोई महिला ऐसी नहीं थी जिसके सामने मुहम्मद को न रखा गया हो। परन्तु जब उनको यह ज्ञात होता कि मुहम्मद अनाथ हैं तो उनको लेने से इनकार कर देतीं। इसका कारण यह था कि हम लोग बालक के पिता से व्यवहार विशेष की आशा रखते थे। हर महिला यह सोचती कि जब मुहम्मद अनाथ है तो उसकी माँ और उसके दादा से उदारता की क्या आशा की जा सकती है। इसी कारण उनको लेने में किसी की रूचि नहीं थी।''

हलीमा सादिया कहती हैं कि मेरे साथ आई हुई महिलाओं में से हर एक महिला को कोई न कोई दूध पीने वाला बालक मिल गया। केवल मैं रह गई। जब हमारे लौटने का समय आ गया तो मैंने अपने पति से कहा ''खुदा की क़सम, मुझे यह पसन्द नहीं कि मैं किसी बालक को लिए बिना यहां से वापिस जाऊं। अब मैं उस अनाथ बालक के पास जाऊंगी और उसको ले आऊंगी''। मेरे पति ने कहा ''ऐसा करने में कोई हानि नहीं है। संभवता अल्लाह उसको हमारे लिए भाग्यशाली बना दे।'' इस तरह मैं दोबारा मुहम्मद के घर गई और उन्हें ले आई। उस समय मेरे इस कार्य का कारण इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि मुझे मुहम्मद के अतिरिक्त कोई और बालक न मिला था।

मुहम्मद (सल्ल०) दो वर्ष और कुछ महीने हलीमा सादिया के पास रहे। यह समय स्वंय हलीमा सादिया के लिए लाभ एवं समृद्धि के थे। उसके बाद हज़रत मुहम्मद को उनकी माता के पास मक्का पहुंचा दिया गया।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) अपनी मां और अपने दादा अबदुल मुत्तलिब के साथ ख़ुदा के संरक्षण में थे। ख़ुदा ने आपकी जो नियति निर्धारित कर रखी थी, वो उसके अनुसार आपका बेहतरीन पालन–पोषण कर रहा था। जब आप की आयु 6 वर्ष की हुई तो आपकी मां का देहांत हो गया।

अब मुहम्मद (सल्ल०) अपने दादा अबदुल मुत्तलिब बिन हाशिम के साथ रहने लगे। अबदुल मुत्तलिब मक्का के आदरणीय लोगों में से थे। उनके लिए काबा के पास ग़ालीचा बिछाया जाता था। मुहम्मद (सल्ल०) जब वहां आते तो वो भी इस ग़ालीचे पर बैठ जाते। यदि कोई आपको हटाता तो अबदुल मुत्तलिब कहते मेरे बच्चे को छोड़ दो। ख़ुदा की क़सम, वह बहुत शान वाला है। मुहम्मद (सल्ल०) जब आठ वर्ष के हुए तो दादा अबदुल मुत्तलिब का भी देहांत हो गया। यह घटना आमुल फील (हाथी वाला साल) के आठ वर्ष के अंतराल के बाद हुई।

अबदुल मुत्तलिब के देहांत के पश्चात मुहम्मद (सल्ल०) अपने चचा अबू तालिब के साथ रहने लगे। अबू तालिब एक व्यापारी थे। वे अपने व्यापार के लिए शाम जाने लगे तो मुहम्मद (सल्ल०) ने भी जाने की इच्छा प्रकट की। यद्यपि उस समय आप की आयु कम थी। परन्तु अबू तालिब ने स्नेह के कारण आपको अपने साथ ले लिया।

उनका व्यापारी क़ाफ़िला शाम के नगर बूसरा में उतरा। यहां के कलीसा में एक ईसाई धर्म का पुरोहित रहता था जिसका नाम बोहिरा था। बोहीरा ने प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में पढ़ा था कि अरब से एक पैग़म्बर प्रकट होंगे। जब मुहम्मद (सल्ल०) को देखा तो कुछ निशानियों से उसने पहचान लिया कि यह वही बच्चा है जिसको खुदा की और से अन्तिम पैग़म्बर बनाया जाने वाला है। इस कारण उसने आपकी ओर पूरे यात्रीगण के भोज की व्यवस्था की। बहीरा ने अबू तालिब से पूछा इस लड़के से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। उन्होंने कहा यह मेरा बेटा है। बहीरा ने कहा

यह तुम्हारा बेटा नहीं हो सकता। इस लड़के का पिता जीवित न होना चाहिए। जब अबू तालिब ने बताया कि आप के पिता का देहांत हो चुका है तो बहीरा ने कहा तुम अपने भतीजे को लेकर अपने देश वापस जाओ और यहूद से उनकी रक्षा करो। ख़ुदा की क़सम यदि उन्हों ने उसको पहचान लिया तो वे अवश्य उसको हानि पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।

जब हज़रत मुहम्मद 25 वर्ष के हुए तो कुरैश की एक विधवा महिला, खदीजा बिन्त खुवैलिद की ओर से आपको विवाह का आमंत्रण आया। ख़दीजा की आयु उस समय 40 वर्ष की थी। मक्का में उनकी गणना उच्च वर्ग तथा धनवान महिलाओं में की जाती थी। उनका संबंध एक व्यापारिक परिवार से था। और वे स्वंय भी लोगों के द्वारा व्यापार करती थीं और लाभ का एक भाग उनको दे देती थीं।

आरंभ में जब उनको मुहम्मद (सल्ल०) की विनम्रता और विश्वासनीयता की जानकारी हुई तो उन्हों ने कहा आप मेरा सामान लेकर मेरे गुलाम मयसरह के साथ शाम जाएं मैं आपको दूसरों से अधिक पारिश्रमिक दँगी। आप सामान बेच कर जब मक्का वापस आए और धनराशि खदीजा को दी तो वे अति प्रसन्न हुईं क्योंकि उन्हें इस बार दूना लाभ हुआ था।

इन अनुभवों के पश्चात ख़दीजा पर आपके व्यक्तित्व और सत्यनिष्ठा का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यहां तक कि उन्होंने आपसे विवाह का संदेश भेजा। आपने अपने चचा से परामर्श करके इसको स्वीकार कर लिया। ख़दीजा पहली महिला थीं जिनसे मुहम्मद (सल्ल०) ने विवाह किया। उनके जीवन काल में आपने दूसरा कोई विवाह न किया। आपके बेटे इब्राहीम जिनकी मृत्यु छोटी आयु में ही हो गई, उनके अतिरिक्त आपकी सब संताने ख़दीजा बिन्त खुवैलिद से थीं।

हज़रत मुहम्मद के सारे पुत्रों की मृत्यु किशोरावस्था में ही हो गयी थी। पुत्रियों में से रुकय्या, ज़ैनब, उम्मे कुलसूम, और फ़ातिमा सब आप पर ईमान लाईं और आपके साथ मदीना की ओर हिजरत (प्रवास) की।

मुहम्मद (सल्ल०) की आयु जब 35 वर्ष थी, उस समय कुरैश ने काबा के नव निर्माण का निश्चय किया। उन्होंने अतीत की इमारत को ढा दिया और पत्थर इकट्ठा करके नई दीवार को बनाना आरंभ किया। जब दीवार की ऊंचाई वहां तक पहुंची जहां हजरे असवद (असवद शिला) को स्थापित करना था तेा क़बीलों में विवाद खड़ा हो गया। प्रत्येक क़बीले की मंशा यह थी कि हजरे असवद को उठा कर उसके स्थान पर वही रखे। कोई क़बीला यह अधिकार दूसरे को देने पर तैयार नहीं था। यह मतभेद यहां तक बढ़ा कि लोग युद्ध पर उतारू हो गए। यह स्थिति सम्भवतः पांच दिन तक चलती रही। अंततः कुछ बड़ों ने हस्तक्षेप करके उन्हें राज़ी किया कि वे आपस में विचार–विमर्श करके समस्या का शान्तिपूर्ण समाधान खोजें।

कहा जाता है कि अबू उमय्या बिन मुग़ीरा जो कुरैश का एक वृद्ध व्यक्ति था, उसने यह सुझाव दिया कि कल प्रातः जो व्यक्ति सर्वप्रथम मस्जिद में प्रवेश करे उसको निर्णायक पंच बना लिया जाए। और उसके निर्णय के अनुसार इस विवादित समस्या का समाधान किया जाए। इस विचार पर सब सहमत हो गए।

अगले दिन जब लोग बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) में आए तो उन्होंने देखा कि उसके भीतर आने वाले सबसे पहले व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल०) हैं। वे आपको देख कर कह उठे यह तो अमीन (सत्यात्मा) हैं। हम उनके निर्णय पर सहमत हैं। लोगों के निवेदन पर आप ने कहा मेरे पास एक चादर ले आओ। जब चादर लाई गई तो आपने हजरे असवद को उठा कर उस चादर में रख दिया। और कहा कि प्रत्येक क़बीले का सरदार चादर के किनारे को पकड़ ले। इस प्रकार सब मिल कर उसे उठाएं। उन्होंने ऐसा ही किया। यहां तक कि जब उसे लेकर उसके निश्चित स्थान तक पहुंचे तो आपने अपने हाथों से उठा कर उसको स्थापित कर दिया। उसके बाद काबा का पुनर्निमाण आरंभ हो गया।

मुहम्मद (सल्ल०) की पैग़म्बरी से पूर्व के जीवन के बारे में बहुत

सी घटनाएं सीरत की किताबों में आई हैं। यहां कुछ और घटनाओं का संक्षिप्त में विवरण है–

प्राचीन अरब में 3 व्यक्ति थे– फुज़्ल बिन फुज़ाला, फज़्ल बिन वदाआ, फ़ज़्ल बिन हारिस– उन्होंने परस्पर एक संधि तैयार की। क्योंकि उन लोगों के नाम के आरंम्भ में (फज़्ल) था इस कारण यह समझौता (मुआहिदा हिल्फुल फुजूल) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इबने हेशाम ने इस प्रकरण में जुबैर बिन अबदुल मुत्तलिब की कुछ पंक्तियों का उल्लेख किया है। उसकी एक पंक्ति का अर्थ यह है कि ''फ़ज़्ल नाम के व्यक्तियों ने आपस में शपथ ली और यह समझौता किया कि मक्का में कोई अत्याचारी न रहने पाए।''

उपरोक्त व्यक्तियों के देहांत के बाद व्यवहारिक रूप से यह समझौता समाप्त हो गया। मुहम्मद (सल्ल०) की आयु प्रायः 15 वर्ष की थी कि अरब में गृहयुद्ध हुआ जिसको हरबुल–फिजार कहा जाता है। इस में कुरैश और क़ैस वर्ग आपस में लड़े थे। उसके पश्चात अव्यवस्था बहुत बढ़ गई। उस समय लोगों का विचार हुआ कि हिल्फुल–फुजूल का नवीनीकरण किया जाए।

कहा जाता है कि यमन का एक व्यक्ति मक्का आया। उसने अपनी व्यापारिक सामग्री अलआस बिन वायल अलसहमी को बेच दी। परन्तु अलआस ने सामान का पूरा भुगतान न किया। उसके उपरांत उपरोक्त व्यक्ति ने कविता की कुछ पंक्तियां कहीं जिनमें न्याय–याचना थी। इस से मक्का वालों का स्वाभिमान जाग उठा। जुबैर बिन अबदुल मत्तलिब के प्रस्ताव पर बहुत से लोग अबदुल्लाह बिन जुदआन के निवास स्थान पर एकत्रित हुए। विचार–विमर्श के पश्चात समझौते के नवीनीकरण का निश्चय हुआ। इस प्रकार लोगों ने दूसरी बार यह प्रतिज्ञा की कि मक्का में अगर किसी के साथ अन्याय किया जाए, चाहे वह यहां का निवासी हो या बाहर से आया हो, सारे लोग उसका साथ देंगे और अत्याचारी को विवश करेंगे कि पीड़ित को उसका अधिकार मिले।

मुहम्मद (सल्ल०) ने भी पैगम्बरी से पूर्व इस संधि में भाग लिया था। आप ने एक बार कहा अबदुल्लाह बिन जुदआन के घर पर संधि के समय में भी उपस्थित था। मैं सुर्ख़ ऊंटों (लाल ऊंट) को लेकर भी उस समझौते को तोड़ना पसन्द नहीं करूंगा। और यदि इस्लाम के समय में भी मुझे उसकी ओर बुलाया जाए तो मैं अवश्य उसका अनुमोदन करूंगा।

उस समय अरबों के बीच और भी इस प्रकार के सुधारक और संशोधक संबंधी समझौते थे। उदाहरणार्थ बनू–अबद अलदार और उनके समर्थकों ने एक बार काबा के पास एकत्र हो कर शपथ ली और यह संकल्प किया कि एक दूसरे को असहाय न छोड़ेंगे और एक को दूसरे के सुपुर्द न करेंगे। मुहम्मद (सल्ल०) ने इस प्रकार के सुधारक समझौतों को समाप्त नहीं किया बल्कि उनकी पुष्टि की। आपने कहा अज्ञानता के समय जो भी समझौते थे इस्लाम ने उसको और दृढ़ता प्रदान की है।

मुहम्मद (सल्ल०) पैग़म्बरी से पूर्व व्यापार करते थे। अबदुल्लाह बिन अबी हमसा कहते हैं कि मैंने नबी होने से पूर्व एक बार आपसे लेन–देन का मामला किया था। मेरे ऊपर कुछ बक़ाया था। मैंने उनसे कहा कि आप यहां ठहरिए मैं अभी राशि लेकर आता हूँ। घर आने के पश्चात मैं अपना वचन भूल गया। तीन दिनों के बाद मुझे स्मरण हुआ। मैं तत्काल उस वादे के स्थान पर पहुंचा मैंने पाया कि आप उसी स्थान पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। आपने मुझे डांट–फटकार नहीं लगाई। केवल इतना कहा तुमने मुझे कष्ट दिया। मैं तीन दिन से इसी स्थान पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

अबदुल्लाह बिन सायब कहते हैं कि मैं अज्ञानता के समय मुहम्मद (सल्ल०) से मिलकर व्यापार करता था। बाद में जब मैं ने मदीना आकर आपसे भेंट की तो आपने कहा क्या तुम मुझको पहचानते हो। मैं ने कहा क्यों नही आप तो मेरे साथ व्यापार में साझेदार थे। और आप कैसे अच्छे साझेदार थे। न कभी धोखा देते और न किसी बात पर झगड़ते।

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि कोई नबी ऐसा नहीं जिसने कभी बकरियां न चराई हों। सहाबा ने कहा क्या आपने भी। मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा हां, मैं भी मक्का वालों की वकरियां कुछ कीरात के बदले पर चाराया करता था।

जाबिर बिन अबदुल्लाह कहते है कि हम लोग ज़हरान के स्थान पर मुहम्मद (सल्ल०) के साथ थे। वहाँ हम लोग पीलू के फल चुनने लगे। आपने कहा काले फल देख कर तोड़ो, वे ज़्यादा अच्छे होते हैं। लोगों ने कहा क्या आपने बकरियां चराई हैं, जिसके कारण आप इस बात से परिचित हैं। आपने कहा हां। कोई ऐसा नबी नहीं हुआ जिसने बकरियां न चराई हों। और मैं ने भी बकरियां चराई हैं।

मुहम्मद (सल्ल०) ने शाम की दूसरी यात्रा उस समय की जब आपकी आयु 25 वर्ष की थी उस समय कुरैश के कुछ लोग गुणक के नियम पर व्यापर किया करते थे।

इस व्यापारिक यात्रा में एक बार ऐसा हुआ कि लेन–देन के किसी मामले में एक व्यक्ति से आप का मतभेद हो गया। उसने कहा कि लात व उज़्ज़ा की क़सम खाओ तो मैं मान जाऊंगा। आपने कहा मैंने आज तक कभी लात व उज्ज़ा की क़सम नहीं खाई। यदि कभी संयोगवश मेरा उधर से गुज़र होता तो में बचता हुआ वहां से निकल जाता।

नबी होने से पूर्व भी आप शिर्क (ईश्वर का साझीदार बनाना) और अनैतिकता से दूर रहते थे। इस श्रृंखला में आपकी सीरत (जीवनी) लिखने वाले अबू मुहम्मद अबदुल मालिक बिन हेशाम ने इबने इसहाक़ के इस कथन का उल्लेख किया है।

''मुहम्मद (सल्ल०) इस प्रकार युवावस्था को पहुंचे कि अल्लाह आपकी देख–रेख कर रहा था। और अज्ञानता की गंदगी से आपको बचाए हुए थे। क्योंकि अल्लाह चाहता था कि वो आपको सम्मान और पैग़म्बरी प्रदान करे। यहां तक कि आप इस बुलंदी को पहुंचे कि आप अपनी क़ौम के

अन्दर पौरूष गुणों में सबसे श्रेष्ठ, और सदाचारिता वाले बन गए। वर्ग में प्रतिष्ठित और पड़ोसियों मे सबसे अच्छे पड़ोसी बन गए। शान्त चित्त आचरण गंभीर, सहिष्णुता तथा क्षमावान बन गए। बात चीत में सबसे अधिक यथार्थवादी। अमानतदारी में सबसे आगे, अर्थात दुष्टता और बुराई से आप सबसे अधिक दूर हो गए। यहां तक कि आपको मक्का में अल अमीन (विश्वसनीय) कहा जाने लगाा।'' (सीरत इबने हेशाम–197)

## eqgEen ¼lYyŒ½ dk iSxEcjh feyuk

जब मुहम्मद (सल्ल०) चालीस वर्ष के हुए तो अल्लाह ने आपके पास 'वह्य' (खुदा के द्वारा पैग़म्बरों को भेजा गया संदेश) भेजी और आपको अपना पैग़म्बर नियुक्त किया। आपकी पैग़म्बरी का प्रारंभ सच्चे सपनों से हुआ। आप निंद्रा अवस्था में जो भी सपना देखते वो दिन में पूर्ण रूप से सही सिद्ध हो जाता। उस समय ख़ुदा ने एकांत को आप के लिए प्रिय बना दिया था। अकेलेपन से अधिक प्रिय आपको कुछ न था। मक्का से लगभग तीन मील की दूरी पर ग़ार–हिरा (हिरा नामक गुफा) स्थित है।

प्रायः हज़रत मुहम्मद वहां जाया करते और एकांत में सोच–विचार और इबादत करते रहते। रमज़ान का महीना था और आप नियमानुसार हिरा की गुफा में थे कि रात्रि के समय जिबरईल (फरिश्ता) अल्लाह की ओर से वहां प्रकट हुए, उस समय आप सो रहे थे। उन्होंने आपको निद्रा से जगाया और कहाः ''इक़रा'' (पढ़)। आपने कहाः ''मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।'' उसके पश्चात उन्होंने आपको तीन बार अपने सीने से लगाया। उसके प्रभाव से आपकी स्थिति में बदलाव आ गया। तदुपरांत हज़रत जिबरईल ने आपको वो सूरह पढ़ाई जो आज कुरआन में सूरह अलक़, न० 96 के नाम से सम्मिलित है।

हज़रत मुहम्मद ग़ार–हिरा से लौटकर अपने निवास पर आए और अपनी पत्नी ख़दीजा से पूरी घटना का वर्णन किया। उन्होंने कहाः ''आपको बधाई हो! क़सम उस हस्ती की जिसके क़ब्ज़े में ख़दीजा की जान है,

निःसंदेह, मुझे यह विश्वास है कि आप इस क़ौम के नबी होंगे।'' हज़रत ख़दीजा आपकी सत्यनिष्ठा और गंभीरता का इतना अधिक अनुभव कर चुकी थीं कि उन्हें आपकी कही हुई बात को मानने में तनिक भी विलंब नहीं हुआ, सुनते ही तुरंत आप पर विश्वास कर लिया।

उसके पश्चात हज़रत ख़दीजा उठीं, अपने ऊपर एक चादर डाली और वरक़ा बिन नौफ़ल के पास गईं, जो उनके चचेरे भाई थे। वरक़ा ने मसीही धर्म अपना लिया था। और तौरात एवं इनजील का अध्ययन करते रहते थे। हज़रत ख़दीजा ने जब उनसे मुहम्मद (सल्ल०) के हिरा गुफा की घटना की चर्चा की तो वरक़ा बिन नौफिल ने कहाः ''क़सम है उस हस्ती की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ऐ ख़दीजा! अगर तू ने सत्य कहा है तो नामूसे अकबर (बड़ा और सच्चा) जो मूसा के पास आता था, वह मुहम्मद के पास आ चुका है। और निश्चित रुप से वे इस क़ौम के नबी हैं। उनसे कह दो कि वे दृढ़ रहें।'' तत्पश्चात वे मुहम्मद (सल्ल०) से मिले और आपके मुख से हिरा की गुफा का अनुभव सुनने के बाद कहाः ''आपको झुटलाया जाएगा, आपको कष्ट दिया जाएगा। यहां तक कि आपसे युद्ध किया जाएगा। यदि मैं तब तक जीवित रहा तो आपका साथ अवश्य दँगा''।

उसके बाद मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों के सामने अपनी पैग़म्बरी की घोषणा की और लोगों को इस्लाम के बारे में बताने लगे। लोगों ने आपको झुठलाया और आपकी निन्दा करनी शुरू की। आपको लोगों की अप्रिय बातें सुन कर बहुत अधिक आघात होता और आप बहुत दुःखी अवस्था में अपने घर वापस आते। उस समय हज़रत ख़दीजा आपको सांत्वना देतीं, और आपका दुःख कम करतीं। हज़रत ख़दीजा आपके लिए सर्वश्रेष्ठ जीवन–संगिनी सिद्ध हुईं।

एक दिन मुहम्मद (सल्ल०) अपने घर में थे। हज़रत जिबरईल आए। उन्हों ने कहा कि ख़दीजा को उनके रब का सलाम पहुंचा दीजिए। एक

और वर्णन के अनुसार मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया कि मुझे हुकुम दिया गया है कि मैं ख़दीजा को एक ऐसे मोतियों के घर का शुभ समाचार दे दूँ जिसमें न शोर होगा न कष्ट। आपके विरोधी आपके घर के पास आ कर शोर करते और अपके मार्ग में काँटे डाल देते। इस कारण ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते द्वारा हज़रत ख़दीजा को यह शुभ समाचार भेजा।

पैग़म्बरी के प्रारंभिक समय में जो सूरतें मुहम्मद (सल्ल०) पर उतरीं उनमें से एक सूरह अज़्ज़ुहा (93) थी। इस सूरह की अंतिम आयतों का अनुवाद यह है:

"अल्लाह ने तुम को अन्वेषक पाया तो तुमको राह दिखाई। और तुमको निर्धन पाया तो धनी कर दिया। तो तुम आनाथ पर सख़्ती न करो। और तुम मांगने वालों को न झिड़को। और तुम अपने रब की अनुकंपा का वर्णन करो"।

इस आयात में रब के वरदानों का वर्णन करना, इसकी व्याख्या इब्न–हेशाम ने इस प्रकार की है– कि अल्लाह की ओर से पैग़म्बरी का जो वरदान और सम्मान तुमको मिला है उसकी चर्चा करो, अतः लोगों को उसकी ओर बुलाओ। तब मुहम्मद (सल्ल०) इन बातों को बयान करने लगे जो अल्लाह ने आप पर और आपके द्वारा समस्त इंसानों पर उतारी थीं। आरंभ में आप एकांत में उन लोगों को बताते जिन पर आपका विश्वास था। धीरे– धीरे आपका संदेश सार्वजनिक हो गया।

मुहम्मद (सल्ल०) पर शुरूआत में जब नमाज़ का हुक्म उतारा गया तो प्रत्येक नमाज़ की दो–दो रकअतें फर्ज़ (अनिवार्य) की गईं। फिर खुदा के आदेशानुसार यह अपेक्षित हुआ कि घर में होने की अवस्था में उन्हें पूरी चार रकअत कर दिया और यात्रा की अवस्था में दो रकअत अदा की जाएं।

मुहम्मद (सल्ल०) पर जब नमाज़ फर्ज़ की गई तो हज़रत जिबरईल मक्का में आपके पास आए। उन्होंने आपके सामने वज़ू किया। आप ने

उसको देखा फिर उसी प्रकार वज़ू किया। उसके पश्चात आपने हज़रत जिबरईल के साथ नमाज पढ़ी। घर वापस आ कर आपने हज़रत ख़दीजा को वज़ू और नमाज़ का तरीक़ा सिखाया, जिस प्रकार आपको हज़रत जिबराईल ने सिखया था।

निकट के लोगों में हज़रत अली सबसे पहले इमान लाए। उस समय उनकी आयु 10 वर्ष की थी। हज़रत अली बिन अबी तालिब ने आपके साथ नमाज़ पढ़ी। मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत अली को उनके पिता अबू तालिब से ले लिया था और वो आपके साथ रहने लगे थे।

मक्का की परिस्थति उस समय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के लिए बहुत कष्टदायक थी। इस कारण जब नमाज़ का समय आता तो आप मक्का की घाटी की ओर चले जाते। हज़रत अली भी आपके साथ आते। वहां दोनों छिप कर नमाज़ पढ़ते। एक दिन इसी प्रकार जब दोनों नमाज़ पढ़ रहे थे, अबू तालिब वहां आ गए। उन्होंने आपको अपरिचित कार्य में व्यस्त देख कर कहाः ''ऐ मेरे भतीजे, यह कौन सा धर्म है जो तुमने अपनाया है।'' मुहम्मद (सल्ल०) ने उनको अपने पैग़म्बर बनाए जाने की सूचना दी और उन्हें इस्लाम के लिए प्रेरित किया। अबू तालिब ने उत्तर दियाः ''ऐ मेरे भतीजे! मैं बाप–दादा के धर्म को नहीं छोड़ सकता परन्तु ख़ुदा की क़सम, जब तक मैं जीवित हूँ तुम्हारे ऊपर कोई ऐसी बात नहीं आएगी जो तुम्हें नापसंद हो।''

मुहम्मद (सल्ल०) के एक दास थे, उनका नाम ज़ैद बिन हारिसा था। उन्हें आपसे इतना अधिक लगाव हो गया था कि एक बार उनके पिता आए और ज़ैद बिन हारिसा को अपने साथ ले जाना चाहा। आप ने कहा तुम चाहो तो मेरे पास रहो और यदि चाहो तो अपने पिता के साथ चले जाओ।'' ज़ैद आप के पास ही रहे, यहाँ तक कि अल्लाह ने आपको पैग़म्बर बनाया, उस समय उन्होंने आपकी पुष्टि की और इस्लाम को अपना कर आपके साथ नमाज़ पढ़ी।

अबू बक्र बिन अबी कुहाफ़ा आपके मिलने वालों में से थे। उन्होंने भी बिना किसी संकोच के इस्लाम स्वीकार कर लिया। कोमल व्यवहार के कारण लोगों को उनसे लगाव था। तथा व्यापार की वजह से काफ़ी लोगों से उनके सम्बन्ध थे। उन्होंने अपने जानने वालों में इस्लाम का प्रचार करना शुरू कर दिया। और उनके प्रभाव से बहुत से लोग मुसलमान हो गए। उदाहरणतः उस्मान बिन अफ़्फ़ान, ज़ुबैर बिन अल अव्वाम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़्क़ास, तलहा बिन उबैदुल्लाह, इत्यादि। यह आठ लोग थे जिन्होंने आरंभिक समय में इस्लाम ग्रहण कर लिया था।

मुहम्मद (सल्ल०) ने अबू बक्र बिन अबी कुहाफ़ा के सम्बंध में बताया कि मैंने जिस व्यक्ति को भी इस्लाम के लिए बुलाया उसने उसके मानने में कुछ न कुछ सोच विचार और संकोच किया, अतिरिक्त, अबू बक्र बिन अबी कुहाफ़ा के, जब मैंने उनके सामने इस्लाम की चर्चा की तो उन्होंने बिना किसी विलम्ब और संकोच के उसको मान लिया।

अब आप और आपके सहयोगी व्यक्तिगत रूप से लोगों के बीच इस बात का प्रचार करने लगे कि लोग मूर्ति पूजा को छोड़ दें और एक ख़ुदा की इबादत करें। उनके प्रयासों से मुसलमानों की संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि होने लगी। सीरत इबने हेशाम में इन इस्लाम क़बूल करने वालों के नाम क्रमिक रुप से लिखे गए हैं। इन्हीं में फातिमा बिन्त उमर बिन खत्ताब भी थीं, जो बाद में उमर फ़ारुक़ के इस्लाम लाने का कारण बनीं। इन्ही में सुहैब रुमी थे जिनके सम्बंध में मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि – सुहैब रुमियों से पहले हैं।

प्रारंभिक समय में मुहम्मद (सल्ल०) किस प्रकार प्रचार करते थे, उसका अनुमान इस घटना से होता है। अम्र बिन अबसा नामक व्यक्ति ऊँट पर सवार हो कर आपके पास आए और उन्होंने कहाः ''ऐ मुहम्मद! क्या अल्लाह ने आप को पैग़म्बर बना कर भेजा है?'' आपने कहाः ''हां''। उन्होंने कहाः ''ऐ ख़ुदा के पैग़म्बर! मुझको वो बात बताइए जो अल्लाह

ने आपको बतायी है।'' आप ने उत्तर दियाः ''एक अल्लाह की ईबादत की जाए, उसके साथ किसी को साझेदार न बनाया जाए और सिलए–रहम (दूसरों से प्रेम और यथाशक्ति उनकी सहायता की जाए), रक्त न बहाया जाए, मार्गो में शांति स्थापित की जाए, बुतों को तोड़ दिया जए।''

अम्र बिन अबसा ने यह सुन कर कहाः ''कितनी अच्छी बात है जिसको लेकर अल्लाह ने आपको भेजा है। मैं गवाही देता हूँ कि मैं आप पर इमान लाया और आपके पैग़म्बर होने की पुष्टि करता हूँ।''

## eDdk e bLyke dk ipkj

हज्ज के अवसर पर प्रत्येक वर्ष जब सारे अरब के लोग मक्का में एकत्र होते, आप घूम–घूम कर उनके बीच प्रचार करते थे। इसी प्रकार उकाज़, मजन्ना और ज़ुलमजाज़ के मेलों में जाकर लोगों तक अपनी बात पहुँचाते थे।

अबदुल्लाह बिन वाबिसा अल–अबसी अपने पिता से और वे अपने दादा से कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद मिना में हमारे शिविर पर आए। हम लोग जमरा ऊला के निकट खैफ़ के पास रूके हुए थे। आप ऊँटनी पर सवार थे और पीछे ज़ैद बिन हारिसा को बिठा रखा था। आप ने हम लोगों को इस्लाम के बारे में बताया। खुदा की क़सम हम ने आपको उत्तर न दिया। हमने आपके और आपके प्रचार के बारे में पहले ही सुन रखा था कि हज्ज के अवसर पर आप घूम–घूम कर अरब समुदाय को इस्लाम का संदेश देते हैं। आप खड़े–खड़े कहते रहे और हम चुपचाप सुनते रहे। हमारे साथ मयसरा बिन मसरुक़ अबसी भी थे। उन्होंने कहाः ''मैं खुदा की क़सम देकर कहता हूँ, कि यदि हम इस आदमी की पुष्टि करें और इसको ले जा कर अपने क़ाफ़िले के बीच में ठहराए तो बहुत अच्छी बात होगी। मैं फिर ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि इस की बात विजयी होकर रहेगी। यहां तक कि हर स्थान पर पहुँच जाएगी।'' उनके लोगों ने

उत्तर दियाः इन बातों को छोड़ो, ऐसी बात क्यों कहते हो जिसको मानने के लिए हममें से कोई तैयार नहीं।'' मयसरा की बातें सुन कर आपको उन से कुछ आशा होने लगी थी। और आप ने मयसरा से कहाः ''तुम ही मान लो।'' मयसरा ने कहाः ''इस में संदेह नहीं कि आप की बात बहुत भली है परन्तु क्या करूँ मेरी जाति मेरी विरोधी हो जाएगी। और आदमी अपने समुदाय के साथ ही जीवित रह सकता है।''

आपके सम्बंधी जो कुरैश से थे, आपका उपहास करने लगे। जब उन्होंने देखा कि आप पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है, तो वे सामान्य रुप से कष्ट देने पर उतारू हो गए। एक दिन जब कि हज़रत मुहम्मद और हज़रत ख़दीजा घर में थे, देखा कि आपकी दो पुत्रियाँ जिनका विवाह अबू लहब के लड़कों से हुआ था, वो सामान लिए चली आ रही हैं। उन्हों ने अपने मां बाप से कहा कि हमारे पतियों ने हमको ''तलाक़'' दे दी है और कहा है कि अपने पिता के घर चली जाओ। हज़रत ख़दीजा ने लड़कियों से पूछा तुम्हें तलाक़ क्यों दी। लड़कियों ने उत्तर दिया कि हमारे पतियों ने अबूलहब और उसकी पत्नी जमीला के कहने पर तलाक़ दी है। उन्होंने अपने लड़कों पर दबाव डाला कि यह उचित नहीं कि अबू लहब के घर में मुहम्मद की लड़कियां हों।

एक दिन हज़रत मुहम्मद को कुरैश के लोगों ने पत्थरों से इतना ज़्यादा मारा कि जब वो घर पहुंचे तो वह खून में लिप्त थे। दूसरे दिन भी आपको इतनी अधिक पीड़ा और कष्ट था कि आप उठ कर ख़ाना काबा न जा सके कि वहां नमाज़ अदा करें। उस दिन जो मुसलमान काबा में इकट्ठा हुए थे उन्होंने आपके बिना ही नमाज़ पढ़ी। यह लोग जब सजदे में गए तो कुरैश ने उन पर आक्रमण कर दिया। जो मुसलमान घायल हुए उन में से एक हारिस भी थे जो आपकी पत्नी हज़रत ख़दीजा के लड़के थे। जिनका जन्म उनके पूर्व पति से हुआ था। हारिस पहले व्यक्ति हैं

जो इस्लाम के मार्ग में शहीद हुए। उनका हरमे काबा में सजदे (नमाज़ में माथा टेकने) की हालत में वध कर दिया गया।

अबू लहब और उसकी बीवी न केवल हज़रत मुहम्मद के निकट सम्बंधी थे बल्कि सम्मानित वर्ग से भी थे। परन्तु वे आपके घर में पत्थर फेंकने लगे। लड़कों को उकसाते कि वह आपके घर में पत्थर फेंकें और पशुओं की मुर्दा लाशें और दूसरी गन्दी वस्तुएं पैग़म्बर के मकान में डालें। अबू लहब की बीवी जमीला आपके मार्ग में कांटे बिछा देती ताकि आपके पैरों में गड़ जाएं। आप घर वापस आकर पैरों से कांटे निकालते, उन जगहों से रक्त बहने लगता। कोई दिन ऐसा न था कि आप काबा से वापस हों और खून न बह रहा हो। क्योंकि कुरैश पूरी निर्ममता से आपकी ओर पत्थर फेंकते थे। कुरैश को आपसे इतनी अधिक शत्रुता थी कि काबा के सम्मान की भी परवाह नहीं करते थे। हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास कहते हैं कि उस समय कुरैश की निरंतर चौकसी के कारण न तो काबा में इकट्ठा होकर नमाज़ पढ़ना सम्भव था और न ही इबादत के लिए किसी दूसरे स्थान पर एकत्रित होना। यदि बस्ती वाले मुसलमानों को किसी के घर एकत्र होते देख लेते तो वे हमारे ऊपर आक्रमण कर देते। इस कारण हमने ऐसा किया कि हम शहर से बहुत दूरी पर ईकट्ठा हो कर इबादत करते, इबादत समाप्त होने पर दूसरा स्थान निर्धारित कर लिया जाता ताकि अगले रोज़ मुसलमान वहां जमा हो सकें। क्योंकि कुरैश के लोग इस प्रकार हमारे पीछे पड़े हुए थे कि यदि निरंतर दो दिन भी किसी एक स्थान पर एकत्रित हों तो उन्हें पता चल जाता था।

अबूज़र ग़िफ़ारी मक्का से दूर क़बीला ग़िफ़ार की बस्ती में रहते थे। वो पहले से ही सत्य की खोज में थे। अबदुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं कि अबूज़र ग़िफ़ारी को ज्ञात हुआ कि मक्का में एक ऐसा व्यक्ति है जो अपने आपको पैग़म्बर बताता है तो उन्होंने अपने बड़े भाई उनीस से कहा कि आप मक्का जाइए और उस व्यक्ति की सूचना लाइए जिसका वहां जन्म हुआ है और जो कहता है मैं खुदा का दूत हूँ और मेरे पास

आकाश से संदेश आता है। उसका कथन सुनिए और उसकी जानकारी प्राप्त कीजिए।

उसके बाद उनैस ग़िफ़ारी ऊँट पर सवार होकर मक्का आए और उन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) से भेंट की और आवश्यक जानकारी प्राप्त कर के वापस चले गए। जब वह अपने भाई के पास पहुंचे तो उन्होंने पूछा मक्का से क्या सूचना लाए हो।

उनैस ने बताया कि जब मैं मक्का पहुंचा तो मैं ने मुहम्मद बिन अबदुल्लाह को इस स्थिति में पाया कि वहां कोई उनको झूठा बताता है, कोई उनको जादूगर बताता है, कोई मायावी कहता है और कोई कवी कहता है। (परन्तु उनैस बहुत ज्ञानी और अनुभवी थे और कवी भी थे।) उन्हों ने कहा कि मैंने जादूगरों का कथन सुना है पर मुहम्मद का कथन जादूगरों के कथन जैसा नहीं। यह कथन कविता के तुल्य भी नहीं। खुदा की क़सम वो एक सत्यपुरूष हैं। उन्होंने इसके अतिरिक्त कहाः

मैने उनको देखा कि वह भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं। और मैं ने देखा कि वह सदाचारिता का हुक्म देते हैं और मैंने उनसे ऐसा कथन सुना जो कविता नहीं।

अबूज़र गिफ़ारी ने यह बातें सुनीं तो उनकी जिज्ञासा और बढ़ गई कि वो स्वंय मक्का जाएं और स्थिति की व्यक्तिगत रूप से जांच–पड़ताल करें। उन्हों ने अपनी सवारी का ऊँट तैयार किया और पानी की मशक (पानी भरने के लिए चमड़े की थैली) और कुछ खाने का सामान लेकर मक्का की ओर प्रस्थान किया।

सर्वप्रथम उनका परिचय अली बिन अबी तालिब से हुआ। वह उनको मुहम्मद (सल्ल०) के पास ले गए। अबूज़र ग़िफ़ारी ने आप से भेंट की और आपके कथन को सुना। वह पहले से ही सत्य की खोज में थे इसलिए पहली ही भेंट में आपकी सच्चाई को पा गए और कलिमा पढ़कर इस्लाम का इक़रार कर लिया।

इस्लाम को स्वीकार करने के पश्चात वह हरम में गए। वहां उन्होंने नमाज़ पढ़ी और अपने इस्लाम का एलान किया। यह बात मक्का के मुशरिकों को अत्यन्त बुरी लगी। उन्हों ने अबूज़र ग़िफ़ारी को मारना शुरू कर दिया। यहां तक कि वे ज़मीन पर गिर पड़े। अबदुल्लाह बिन अब्बास ने आकर उन्हें बचाया।

उसके बाद मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि तुम अपनी क़ौम की ओर लौट जाओ और वहां अपने लोगों का इस्लाम से परिचय कराओ। जब तुम सुनो कि अल्लाह ने मुझको अपने विरोधियों पर सफलता दे दी है, उस समय मेरे पास दोबारा आ जाना। अबूज़र ग़िफ़ारी अपने लोगों में वापस चले गए। वहां सर्वप्रथम उनके भाई उनैस ने इस्लाम कबूल किया। फिर दोनों भाईयों ने अपनी मां को इस्लाम के बारे में बताया, उनको इस्लाम की सच्चाई समझ में आ गई और उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया। इसी प्रकार उन्होंने अपने क़बीले के लोगों को इस्लाम के लिए प्रेरित किया और कुछ वर्षों में क़बीले के लगभग आधे लोगों ने इस्लाम अपना लिया।

## foj/kh ifrfØ;k

मुहम्मद (सल्ल०) ने जब मक्का वालों को स्पष्ट रूप से एक ख़ुदा की ओर बुलाया तो उनको लगने लगा कि आप ख़ुदा में साझेदार बनाने को ग़लत और निराधार बता रहे हैं। इस कारण से वो लोग आपके विरोधी हो गए। अब यहां से आपका कठिनाइयों भरा समय आरंभ होता है। एक बार अबूबक्र के कहने पर आप उनके साथ काबा में आए। मुसलमान काबा के परिसर में एकत्रित हुए तो मक्का के दूसरे लोग भी बड़ी संख्या में वहां पहुंच गए। इस समूह में प्रारंभिक चर्चा हज़रत अबूबक्र ने खड़े होकर की। क़ुरैश के कुछ लोग चर्चा के बीच में ही क्रोधित हो गए और उन्होंने उनपर और दूसरे मुसलमानों पर सहसा आक्रमण कर दिया। उतबा बिन रबीआ ने हज़रत अबू बक्र को इतना मारा कि उनका चेहरा खून से

लतपत हो गया। इस बीच जबकि लोग चारों ओर से अबू बक्र को घेरे में लिए हुए थे तो एक व्यक्ति आया और उसने पूछा कि यह कौन है? समूह से एक व्यक्ति ने उत्तर दियाः ''मजनून बिन अबी क़हाफ़ा''। कुछ समय बाद हज़रत अबूबक्र के परिवार–जन वहां आए और बड़ी कठिनाई से उन्हें छुड़ा कर घर पहुंचाया। धीरे–धीरे मुहम्मद (सल्ल०) के पास मुसलमानों का एक छोटा सा दल बन गया। जिसमें महिलाएं, पुरूष, युवक और वृधावस्था–प्रत्येक वर्ग के लोग सम्मिलित थे परन्तु अभी भी इन लोगों को इस्लाम के विरोधियों का सर्वाधिक भय था। इस कारण मुसलमान मक्का से बाहर पहाड़ की घाटी में जाकर नमाज़ पढ़ा करते थे। तीन साल तक इस्लाम का प्रचार व्यक्तिगत बात चीत द्वारा किया जाता रहा। नए मुसलमानों में एक अरकम बिन अबी अल–अरक़म थे जिनका घर सफ़ा पहाड़ी पर दूर एक ओर स्थित था। इस आरम्भिक समय में यही घर इस्लाम के प्रचार का केंद्र बन गया, यहां मुसलमान इकट्ठा होते और इस्लाम के प्रचार के संद्रर्भ में विचार–विमर्श किया जाता। पैग़म्बरी मिलने के पश्चात आरंभिक तीन वर्ष तक यही दार–अरक़म इस्लाम की शिक्षा और निर्देश का मुख्यालय बना रहा।

इस समय मक्का में आपकी छवी यह थी कि एक ऐसा व्यक्ति जो अपना जातीय धर्म छोड़ कर एक नया धर्म लेकर खड़ा हो गया है। इस समय आपके साथ जो कुछ घटा उसकी एक झलक निम्नलिखित वर्णन में मिलती है।

एक सहाबी (companion) कहते हैं कि युवा वस्था में मैं अपने पिता के साथ मिना के स्थान पर था। मैंने देखा कि एक जगह लोगों की भीड़ इकट्ठा है। मैंने अपने पिता से कहा कि यह क्या है? उन्हों ने कहाः ''एक साबी (अधर्मी) है, जिसके इर्द गिर्द लोग इकट्ठा हैं।'' मैं ने झांक कर देखा तो वहां मुहम्मद (सल्ल०) थे। आप लोगों को 'अल्लाह एक है' बता रहे थे और लोग आपका उपहास कर रहे थे।

## vkgokuijd ?kVuk,a

मुहम्मद (सल्ल०) ने प्रारंभ में व्यक्तिगत रूप से इस्लाम का प्रचार किया। आप अपने परिचित लोगों से भेंट करते और उनको शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के स्थान पर एक खुदा को मानने का उपदेश देते। यहां तक कि सूरह अश–शुअरा में सार्वजनिक रूप से प्रचार करने का निर्देश दिया गया।

मक्का के क़रीब सफ़ा पहाड़ी थी। हज़रत मुहम्मद एक दिन उसके ऊपर खड़े हो गए और ऊँची आवाज़ से पुकाराः ''या सबाहा!'' यह आवाज़ अरबों में उस समय दी जाती थी जब किसी शत्रु के आगामी आक्रमण से सचेत करना हो। इसलिए इस ऊँचे स्वर को सुन कर कुरैश के लोग सफ़ा के पास इकट्ठा हो गए।

जब जनसमूह वहां इकट्ठा हो गया तो हज़रत मुहम्मद ने कहाः ''ऐ लोगो, यदि मैं तुम्हें इस बात की सूचना दूँ कि इस पहाड़ के पीछे सेना खड़ी है और वह तुम पर आक्रमण करना चाहती है तो क्या तुम मेरी बात का विश्वास करोगे,'' लोगों ने कहाः ''हाँ, हमने आपके बारे में अब तक केवल सत्य का ही अनुभव किया है।'' आपने कहाः ''फिर सुन लो कि तुम एक घोर यंत्रणा के द्वार पर खड़े हुए हो और मैं तुम को उससे सावधान करने वाला हूँ।''

मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि जिस तरह तुम सोते हो उसी तरह तुम मरोगे, और जिस तरह तुम जागते हो उसी तरह दोबारा तुम हिसाब–किताब के लिए उठाए जाओगे, उसके बाद या तो सदा के लिए जन्नत है या सदा के लिए आग की यातना। लोग आपकी यह बात सुन कर मौन रहे। परन्तु आपके चचा अबूलहब ने कहाः ''तुम्हारा बुरा हो! क्या तुमने यही कहने के लिए हमको बुलाया था।''

मुहम्मद (सल्ल०) की घटनाओं से यह ज्ञात होता है कि आपके सामने सबसे बड़ा चिंता का विषय यह था कि लोग कैसे आग के अज़ाब से बचें

और अल्लाह के वरदानों के भागीदारी बन सकें। कुरआन में अल्लाह ने आपको संबोधित करते हुए कहा है कि संभवता तुम अपने आपको इस ग़म से हलाक कर डालोगें कि लोग ईमान कबूल नहीं करते (अश–शुअराः 3)

मुआविया बिन हैयदा अलकुशैरी कहते हैं कि मैं मुहम्मद (सल्ल०) के पास आया और कहाः ''ऐ खुदा के रसूल मैं ने अपनी उंगली के पोरों की संख्या से भी अधिक बार यह क़सम खाई थी कि मैं आप से नहीं मिलूँगा और न मैं आपके धर्म को अपनाऊँगा। अब मैं आपके पास आया हूँ और मैं आपको अल्लाह सर्वोपरी के माध्यम से पूछता हूँ कि रब ने आपको हमारे पास किस चीज़ के साथ भेजा है?'' आपने कहाः ''इस्लाम धर्म के साथ।'' उन्हों कहा कि ''इस्लाम धर्म क्या है।'' आपने कहाः ''तुम कहो कि मैंने अपना चेहरा और ध्यान अल्लाह की ओर किया और तुम नमाज़ पढ़ो और ज़कात (इस्लाम धर्म के अनुसार मालदार लोगों से लेकर ग़रीबों को दी जाने वाली ढाई प्रतिशत राशी) दो, और एक मुसलमान का खून दूसरे मुसलमान के ऊपर हराम है। मुसलमान एक दूसरे के भाई और सहायक हैं। शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के बाद कोई व्यक्ति जो इस्लाम का अनुसरण करे तो अल्लाह के यहां उसका कार्य तब तक मान्य नहीं होगा जब तक वह अनेकश्वरवाद से स्वंय को अलग न कर ले।''

फिर आपने कहा कि मुझे क्या आवश्यकता थी कि मैं तुम्हारी कमर पकड़ कर तुम को आग से बचाऊँ। परन्तु बात यह है कि मेरा रब मुझको बुलाने वाला है और वो मुझसे पूछने वाला है कि क्या तुमने मेरे बन्दों तक पहुँचा दिया? मैं कहूँगाः ''हाँ मेरे रब मैं ने पहुँचा दिया। सुन लो कि तुम में से जो उपस्थित है वह अनुपस्थित को पहुँचा दे''। उसके बाद मुआविया बिन हैयदा ने इस्लाम कबूल कर लिया।

अबूबक्र बिन कुहाफ़ा अपने घर से निकले ताकि हज़रत मुहम्मद से भेंट करें। वह अज्ञानता के समय से आपके मित्र थे। अबू बक्र ने कहा कि ऐ अबुलक़ासिम मैं आपको पारिवारिक बैठकों में नहीं पाता। लोग आप पर

यह दोष लगातें हैं कि आपने हमारे देवताओं को छोड़ दिया है और हमारे पूर्वजों को मूर्ख बताया और हमारे बाप–दादा को भटका हुआ बताया।

हज़रत मुहम्मद ने कहा हाँ! मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, और मैं तुमको भी एक अल्लाह की ओर और उसकी आज्ञाकारिता की ओर बुलाता हूँ। खुदा की क़सम यही सत्य है। तुम किसी को अल्लाह के साथ साझीदार न ठहराओ और केवल उसी की उपासना करो।'' उसके बाद आपने कुरआन का कुछ भाग पढ़ कर सुनाया। हज़रत अबूबक्र ने उसी समय आप के पैग़म्बर होने को मान कर इस्लाम कबूल कर लिया। हज़रत अबूबक्र के इस्लाम ग्रहण कर लेने से आप इतना अधिक प्रसन्न हुए कि उस समय मक्का की दो पहाड़ियों के बीच आपसे अधिक प्रसन्न कोई न था।

अम्र बिन अब्सा कहते हैं कि मैं अज्ञानता के समय से ही बाप–दादा के धर्म पर सन्तुष्ट न था। मैं बुतों की वास्तविक्ता को नहीं मानता था। कुछ समय के पश्चात मैं ने सुना कि मक्का में एक व्यक्ति ने जन्म लिया है। वह नई–नई बातें बताता है। मैं अपनी ऊँटनी पर सवार होकर मक्का पहुँचा। वहाँ पहुँच कर मुझे जानकारी मिली कि मुहम्मद (सल्ल०) छिप कर प्रचार करते हैं और लोग उनके पीछे पड़े हुए हैं।

खोजते हुए अंततः मैं हज़रत मुहम्मद के पास पहुँच गया। मैं ने प्रश्न किया कि आप कौन हैं। हज़रत मुहम्मद ने कहाः ''मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूँ।'' मैंने पूछा पैग़म्बर किसको कहते हैं। आप ने कहाः ''अल्लाह का रसूल जो अल्लाह की ओर से उसका संदेश लाए।'' मैंने कहाः ''क्या वास्तव में अल्लाह ने आपको भेजा है?'' आप ने कहाः ''हाँ''। मैंने कहाः ''अल्लाह ने क्या चीज़ लेकर आपको भेजा है?'' आप ने कहा यह कि अल्लाह को एक माना जाए, उसके साथ किसी को साझेदार न बनाया जाए, बुतों को तोड़ दिया जाए और संबंधियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए।

उसके पश्चात मैंने मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा कि इस कार्य में आपके साथ कौन है। आपने कहा एक आज़ाद और एक गुलाम (अर्थात अबू

बक्र और बिलाल) मैंने कहा कि मैं आप के साथ हूँ। आपने कहा कि इस समय तुम में साथ देने की शक्ति नहीं है। अभी तुम अपने घर वापस चले जाओ। जब तुम सुनो हम अधिक हो गए, तब आकर तुम मेरे साथ हो जाना। अम्र बिन अबसा कहते हैं कि मैंने इस्लाम कबूल कर लिया और मैं अपने घर वापस आ गया।

कुरआन में यह निर्देश दिया गया कि अपने निकट संबंधियों को सावधान करो (अश–शुअरा : 214) उसके पश्चात मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने चचा के बेटे अली इबने अबी तालिब से कहा कि कुछ खाना तैयार करो और बनी हाशिम के लोगों को मेरी ओर से निमंत्रण दो। इसके लिए गोश्त और दूध की व्यवस्था की गई। और लोगों को बुलाया गया। प्रायः चालीस लोग इकट्ठा हुए।

जब लोग खा चुके तो हज़रत मुहम्मद ने उनके सामने एकेश्वरवाद का संदेश रखा और कहा कि मुझको अल्लाह ने इस कार्य के लिए अपना पैग़म्बर बनाया है। तुम लोग इस कार्य में मेरा साथ दो। आपने यह भी कहा कि तुम में से कौन मेरे ऋण का ज़िम्मा लेता है और मेरे बाद मेरे घरवालों का सरपरस्त बनने के लिए तैयार है?

हज़रत अली कहते हैं यह सुनकर सारे लोग मौन रहे। किसी ने कोई उत्तर न दिया। आप ने तीन बार यही बात कही? परन्तु उपस्थित गण में से किसी व्यक्ति ने मदद का वादा न किया। जब मैंने सबको मौन देखा तो मैं ख़ड़ा हो गया। मैंने कहा ऐ खुदा के रसूल यद्यपि मेरी आँखें दुख रही हैं और मेरी टांगें पतली हैं, परन्तु इस मार्ग में मैं आपका साथ दूँगा। यह सुनकर आपने कहा कि तुम ऐ अली, तुम ऐ अली!

ज़िमाद का संबंध इज़दशनूअह वर्ग से था। वह काबा के दर्शन के लिए मक्का आए। एक बैठक में अबू जहल और उतबा बिन रबीआ और उमय्या बिन खल्फ़ थे। वे लोग बातें कर रहे थे। ज़िमाद भी उनके पास बैठ गए। अबू जहल ने कहा इस व्यक्ति (मुहम्मद) ने हमारे दल में फूट

डाल दी है। उसने हम सबको मूर्ख कहा और हमारे पूर्वजों को ग़लत बताया और हमारे बुतों को बुरा कहा। उमय्या बोला कि इसमें कोई संदेह नहीं कि उस आदमी की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है।

ज़िमाद कहते हैं उन लोगों की बातें सुनकर मुझे लगा कि मुहम्मद (सल्ल०) पर कदाचित भूत–प्रेत का असर हो गया है क्योंकि मैं भूत–प्रेत का निवारण जानता था, मैं मुहम्मद (सल्ल०) की खोज में निकल पड़ा। पहले दिन का प्रयास विफल रहा पर जब अगला दिन आया तो मैं ने आपको मुक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ते हुए पा लिया। जब आपकी नमाज़ पूरी हो गई तो मैं आपके पास गया और मैंने कहाः ''ऐ मुहम्मद, मैं इन समस्याओं का निवारण जानता हूँ। यदि आप अनुमति दें तो मैं आपका उपचार करूं। संभवतः अल्लाह आपको स्वस्थ कर देगा।''

मुहम्मद (सल्ल०) ने ज़िमाद की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। आपने कहा कि सारी प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है। हम उसी से सहायता मांगते हैं। अल्लाह जिसका पथ प्रदर्शक हो कोई उसको भटकाने वाला नहीं, जिसको वह पथ भष्ट कर दे उसका कोई मार्ग दर्शक नहीं। मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि केवल एक अल्लाह इबादत के योग्य है। उसका कोई साझी नहीं, यह बात आपने तीन बार कही।

ज़िमाद ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मैंने पुरोहितों और जादूगरों की बातें सुनी हैं और मैं कवियों के कथन से भी भली भांति परिचित हूँ, परन्तु जो आपने कहा, ऐसे शब्द मैंने कभी नहीं सुने। अपना हाथ लाईए, मैं इस्लाम की शपथ लेता हूँ और वह उसी समय इस्लाम ले आए।

हुसैन कहते हैं कि कुरैश के कुछ लोग उनके पास आए। हसीन वृद्ध थे और कुरैश उनका बहुत आदर करते थे। कुरैश ने हसीन से कहा कि आप उस व्यक्ति (मुहम्मद) से बात कीजिए। वह हमारे देवताओं को बुरा बताते हैं। वे लोग हसीन के साथ आपके पास आए। हसीन ने कहा यह क्या बात है जो हमको आपकी ओर से पहुँच रही है। आप हमारे देवताओं को बुरा कहते हैं। यद्यपि आप के पिता तो बहुत सज्जन पुरूष थे।

मुहम्मद (सल्ल०) ने हसीन से कहा कि यह बताओ कि तुम लोग कितने देवताओं की पूजा करते हो। हसीन ने कहा सात देवताओं की ज़मीन पर और एक देवता जो आसमान में हैं। आप ने कहा जब तुम्हारे ऊपर कोई विपदा आती है तो किस भगवान को पुकारते हो। हसीन ने कहा आसमान वाले भगवान को। आप ने दोबारा कहा कि जब तुम्हारे धन में हानि होती है उस समय किस को पुकारते हो। हसीन ने कहा आसमान वाले को।

मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा तुम्हारी सहायता करने वाला खुदा तो एक है और तुम उसके साथ दूसरों को साझेदार बनाते हो। हसीन कहते हैं मुझे ऐसा आभास हुआ कि ऐसे व्यक्ति से मैं ने कभी बात नहीं की। उसके पश्चात आप ने कहा कि ऐ हसीन इस्लाम को स्वीकार करो, तुमहारी बख़्शिश हो जाएगी। हसीन ने कहाः ''मेरे और भी घर वाले हैं, तो उनके लिए मैं क्या कहूँ।'' आप ने कहाः ''इस प्रकार प्रार्थना करो – ऐ अल्लाह! मैं तुझ से मार्ग दर्शक का इच्छुक हूँ, तू मेरे मामले को ठीक कर दे और मुझे ऐसा ज्ञान दे जो मुझे लाभ देने वाला हो।'' हसीन ने इस दुआ को देहराया और जाने से पहले इस्लाम को क़बूल कर लिया।

हिजरत (पैग़म्बर मुहम्मद का मक्का छोड़कर मदीना जाना) से पूर्व मदीना से ख़ज़रज वर्ग का एक प्रतिनिधि मंडल आया। उनका उद्देश्य यह था कि कुरैश से सहायता का वचन ले। इस प्रतिनिधिमंडल में इयास बिन मुआज़ भी सम्मिलित थे। मुहम्मद (सल्ल०) को उनके आने की सूचना मिली तो आपने उनके निवास स्थान पर जा कर उनसे भेंट की।

हज़रत मुहम्मद ने उनके पास बैठने के बाद उनसे कहा कि क्या तुम चाहते हो कि जिस कार्य के लिए तुम यहां आए हो, उससे अधिक कल्याणकारी बात मैं तुमको न बता दूँ। उन लोगों ने प्रश्न कियाः ''वो कौन सी बात है?'' आप ने कहाः मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, अल्लाह ने मुझको अपने बन्दों की ओर भेजा है कि मैं लोगों को अल्लाह की ओर

बुलाऊँ और उनसे कहूँ कि वे केवल एक ख़ुदा की इबादत करें और उस के साथ किसी और को साझेदार न बनाए। अल्लाह ने मेरे ऊपर अपने शब्द उतारे हैं।'' उसके पश्चात आपने क़ुरआन का एक भाग पढ़ कर उनको सुनाया।

अयास बिन मुआज़ जो उस समय युवक थे, उन्होंने आपकी बातें सुनकर अपने लोगों से कहा कि ऐ मेरी बिरादरी वालो, ख़ुदा की क़सम, यह चीज़ उससे अच्छी है जिसके लिए तुम यहां आए हो, यह सुनकर प्रतिनिधि मंडल के एक व्यक्ति, अनस बिन राफेअ ने अपने हाथ में मट्टी लेकर अयास बिन मुआज़ के मुख पर फेंकी और कहाः ''इन बातों को छोड़ो। ख़ुदा की क़सम हम तो किसी और ही कार्य के लिए यहां आए हैं।'' अयास बिन मुआज़ चुप हो गए। उसके पश्चात मुहम्मद (सल्ल०) लौट आए और वह लोग अपना कार्य करके मदीना वापस लौट गए।

मदीना पहुँच कर आयास बिन मुआज़ का निधन हो गया। उनकी मृत्यु के समय उनके निकट जो लोग थे उनमें से एक व्यक्ति का कहना है कि अन्तिम समय में उनकी ज़बान पर ला–इलाह–इल्लल्लाह, अल्लाहु–अकबर और सुबहान–अल्लाह के शब्द थे और जो लोग उनके पास थे वे उसको बराबर सुन रहे थे।

अबू तालिब के निधन के पश्चात आप हज के अवसर पर ओकाज़, मजन्ना और ज़ुलमजाज़ के मेले में जाते और लोगों के ठहरने के स्थान पर जाकर उनसे मिलकर उन्हें अपना संदेश देते। इसी के साथ आप यह भी कहते कि तुम लोग मुझे अपने संरक्षण में ले लो ताकि मैं ख़ुदा का संदेश पहुंचाने का कार्य कर सकूँ। जो इस कार्य में मेरी सहायता करेगा, अल्लाह उसके बदले उसको जन्नत देगा।

परन्तु कोई परिवार आपकी सहायता और संरक्षण के लिए तैयार न हुआ। आप अरब के एक–एक वर्ग के पास गए परन्तु किसी ने भी आपकी सुरक्षा का ज़िम्मा नहीं लिया। इसी बीच आप बनू आमिर बिन सअसा के

पास गए। उन्होंने भी आपके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। आप इस हालत में वहां से लौटे कि वे लोग आप पर पत्थर फेंक रहे थे।

आप क़बीला बनू मुहारिब बिन ख़स्फा से मिले। उनकी बिरादरी में एक वृद्ध व्यक्ति था जिसकी आयु सौ वर्ष से अधिक थी। आपने उसको एकेश्वरवाद का संदेश दिया और कहा कि तुम लोग मुझे अपने संरक्षण में ले लो ताकि मैं ख़ुदा के संदेश को पहुंचाने का कार्य कर सकूँ। उस बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया कि तुम्हारी बिरादरी तुमको ज़्यादा अच्छे प्रकार से जानती है। ख़ुदा की क़सम जो व्यक्ति यहां से तुमको लेकर अपने स्थान पर जाएगा, वह मौसम–हज में ले जाई जाने वाली चीज़ें में से सबसे बुरी चीज़ लेकर जाएगा। इसलिए तुम हमको क्षमा करो।

आप का चचा अबू लहब भी वहां उपस्थित था। आप के चले जाने के पश्चात उसने उस वृद्ध व्यक्ति से कहा यदि हज के मौसम में इकट्ठा होने वाले सारे लोग तुम्हारे जैसा उत्तर दें तो यह व्यक्ति (मुहम्मद) जिस नए धर्म को लेकर उठा है उसको छोड़ देगा।

पैग़म्बरी के आरंभिक दिनों में आपके चचा के लड़के अली बिन अबी तालिब मुहम्मद (सल्ल०) के निवास स्थान पर आए। आप और आपकी पत्नी ख़दीजा उस समय नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो अली ने पूछा यह आप क्या कर रहे थे? आपने उत्तर दिया,: ''यह अल्लाह का धर्म है जिसको अल्लाह ने अपने लिए पसन्द किया है और मुझे उसके प्रचार के लिए भेजा है। मैं तुमको एक अल्लाह की ओर बुलाता हूँ। कोई उसके तुल्य नहीं। उसने आदेश दिया है कि केवल उसी की इबादत की जाए।'' किशोर अली ने कहा,: ''यह ऐसी बात है जिसको आज से पहले मैंने नहीं सुना। मैं इस संदर्भ में कोई निर्णय नहीं ले सकता जब तक अपने पिता अबू तालिब से परामर्श न ले लूँ।'' यह पैग़म्बरी का आरंभिक समय था। हज़रत मुहम्मद अभी नहीं चाहते थे कि अबू तालिब को इसकी जानकारी हो। आपने कहाः ''ऐ अली, अगर तुम इस्लाम नही लाते तो

इस मामले को अभी गुप्त रखना।'' इस घटना के थोड़े दिन बाद अली ने इस्लाम को अपना लिया।

हज़रत उसमान बिन अफ्फान कहते हैं कि मैं अपनी खाला उरवा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब के यहां उनका स्वास्थय जानने के लिए गया। वहां हज़रत मुहम्मद भी उपस्थित थे। मैंने आपको ध्यानपूर्वक देखना शरु किया। आपकी पैग़म्बरी का चर्चा उन दिनों हो चला था। हज़रत मुहम्मद मेरा ध्यान अपनी ओर देखकर बोलेः "उस्मान क्या बात है"। मैंने कहा, ''मुझे आप पर बड़ा आश्चर्य है कि आपका हम लोगों में क्या आदर सम्मान था। अब आप पर कितने दोष लग रहे हैं।'' आप ने इसके उत्तर में कुरआन की कुछ आयतें पढ़ीं। इसके बाद जाने लगे, तो मैं भी आपके पीछे चल पड़ा। यहां तक कि आपके सामने उपस्थित हो कर इस्लाम कबूल कर लिया।

क़बीला बनी मालिक बिन कनाना के एक व्यक्ति का वर्णन है कि मैंने मुहम्मद (सल्ल०) को जुलमजाज़ के बाज़ार में चलते हुए देखा। आप कह रहे थे कि लोगो, ला–इलाह–इल्लल्लाह कहो तुम्हारा कल्याण होगा। अबू–लहब आप पर मिट्टी फेंकता और कहताः ''इस से बचो, ऐसा न हो कि वह तुमको तुम्हारे धर्म से दूर कर दे। वह चाहता है कि तुम लोग अपने देवताओं को छोड़े दो।'' परन्तु आप उसकी बात पर कोई ध्यान न देते।

अबू सुफयान अपनी पत्नी हिन्दा को घोड़े पर बैठा कर अपनी खेती की ओर चले। उनके लड़के मुआविया आगे थे। वह उस समय बाल्यावस्था में थे और गधे पर सवार थे। इतने में हज़रत मुहम्मद सामने आते हुए दिखाई पड़े। अबू सुफयान ने कहाः ''मुआविया तुम उतर जाओ ताकि मुहम्मद (सल्ल०) उस पर सवार हो जाए।'' मुआविया कहते हैं कि मैं उतर गया और आप मेरे गधे पर सवार होकर हमारे आगे–आगे थोड़ी दूर चले फिर हम लोगों की ओर रूख़ करके कहाः "ऐ सुफयान बिन हर्ब और ऐ हिन्दा बिन्त उतबा, खुदा की क़सम निःसंदेह तुम्हें मरना है।

इसके पश्चात तुम दोबारा जीवित किए जाओगे। फिर जो अच्छा होगा वह जन्नत में प्रवेश करेगा और जो बुरा होगा वह जहन्नम में जाएगा। अबू सुफ़यान ने कहाः ''क्या आप कह चुके।'' हज़रत मुहम्मद ने कहा ''हां''। और गधे से उतर गए और मैं सवार हो गया। मेरी मां हिन्दा ने अबू सुफ़यान से कहाः "क्या इसी जादूगर के लिए तुमने मेरे बेटे को सवारी पर से उतार दिया था"। अबू सुफ़यान ने कहाः "खुदा की क़सम वह जादूगर नहीं, वह झूठा नहीं"।

अबू जहल की एक दासी थी जिनका नाम सुमय्या था, वह भी मुसलमान हो गईं। अबू जहल को ज्ञात हुआ तो उसने कहा कि नए धर्म को छोड़ दो। सुमय्या ने कहा कि मैं मुहम्मद के धर्म को नहीं छोड़ूँगी। अबू जहल ने उनको बांध दिया और इतने कोड़े मारे कि उनकी हालत बिगड़ गई। हज़रत अबू बक्र जो तब तक छह दासों को ख़रीद कर आज़ाद कर चुके थे। अबू जहल के पास पहुंचे और एक सौ दीनार देने की बात की जब वह नहीं माना तो 150 दीनार देने की बात की। वह अब भी नहीं माना तो हज़रत अबू बक्र ने कहा कि जो भी राशि मांगो मैं देने के लिए तैयार हूँ। वह किसी तरह भी सुमय्या को बेचने के लिए तैयार नहीं हुआ। सुमय्या दाया का काम करती थीं और कुरैश की महिलाओं की, बच्चों के जन्म के अवसर पर सहायत करती थीं। सब ने अबू जहल से अनुरोध किया कि सुमय्या को न मारे परन्तु अबू जहल ने किसी की बात नहीं मानी। अबू जहल ने सुमय्या को इतने कोड़े मारे कि उनका सारा शरीर घायल हो गया, चलने–फिरने लायक नहीं रहीं, परन्तु यही कहती रहीं कि मुहम्मद के दीन को नहीं छोड़ूँगी। अन्ततः अबू जहल एक दिन सुमय्या को काबा के निकट ले गया और सब के सामने कहाः ''मुहम्मद के दीन को छोड़ती है या नहीं?'' सुमय्या ने इन्कार कर दिया। अबू जहल ने अपना नेज़ा उनके सीने पर मारा जो पीठ के पार हो गया और इस प्रकार इस्लाम के इतिहास में सुमय्या को प्रथम शहीद का स्थान प्राप्त हुआ।

## dcy bLyke

मक्का में दो व्यक्ति ऐसे थे जिनमें नेतृत्व के विशिष्ट गुण थे– अम्र बिन हिशाम (अबू जहल) और उमर बिन अल–ख़त्ताब। मुहम्मद (सल्ल०) ने दुआ की कि ऐ खुदा, अम्र बिन हेशाम या उमर बिन अल–ख़त्ताब के द्वारा इस्लाम को समर्थन दे। उस के कुछ समय के बाद उमर बिन अल–ख़त्ताब ने इस्लाम कबूल कर लिया।

उमर बिन अल–ख़त्ताब आरंभ में आपके प्रचार के कड़े विरोधी थे। एक दिन उनको बहुत अधिक क्रोध आया और उन्होंने निश्चय किया कि पैग़म्बर–इस्लाम का वध कर डालेंगे। वह तलवार लेकर अपने घर से बाहर निकले। मार्ग में नुऐम बिन अबदुल्लाह मिले, उन्होंने पूछा कि उमर इस दोपहर में कहां जा रहे हो?'' उमर ने कहाः ''मुहम्मद के वध का निश्चय किया है, उस साबी (अधर्मी) ने कुरैश के भीतर फूट डाल दी है। उसने हमारी समझ को ग़लत बताया, हमारे धर्म पर दोष लगाया और हमारे देवताओं को बुरा कहा है''।

नुऐम ने कहाः ''ऐ उमर, ख़ुदा की क़सम तुम्हारी भावनाओं ने तुम को भ्रमित कर रखा है। क्या तुम समझते हो कि तुम मुहम्मद का वध कर डालोगे और बनू अबद मुनाफ़ तुमको छोड़ देंगे कि तुम ज़मीन पर चलते फिरते रहो।'' फिर उन्होंने कहा मुहम्मद से पूर्व तुम अपने घर की ख़बर लो। उमर ने पूछा कि कौन सा घर। नुऐम ने कहाः ''तुम्हारी बहन फ़ातिमा और बहनोई सईद बिन ज़ैद ने मुहम्मद का धर्म अपना लिया है। पहले तम्हें उनको ठीक करना चाहिए।'' यह सुनकर उमर और भी क्रोधित हो उठे। इसी हाल में वो अपनी बहन के घर पहुंचे। उस समय बहन और बहनोई दोनों घर पर थे और एक मुसलमान, ख़ब्बाब उनको कुरआन की शिक्षा दे रहे थे। उमर की आवाज़ सुन कर ख़ब्बाब छुप गए। उमर ने भीतर प्रवेश करते हुए अपनी बहन और बहनोई से कहाः ''मैंने सुना है कि तुम दोनों ने धर्म परिवर्तन कर लिया है।'' बहनोई ने कहाः

''ऐ उमर, यदि बाप दादा का धर्म उचित न हो और दूसरा धर्म सत्य हो तो ऐसी अवस्था में हमें क्या करना चाहिए?'' यह उत्तर सुनकर उमर का क्रोध और बढ़ गया और उन्होंने बहनोई को मारना शुरू कर दिया। बहन छुड़ाने के लिए आई तो बहनोई को छोड़ कर बहन को मारने लगे यहां तक कि उनके चेहरे से खून बहने लगा। बहन ने कहाः ''ऐ ख़त्ताब के बेटे तुम जो कुछ करना चाहते हो करो, अब तो हम इस्लाम क़बूल कर चुके हैं।''

बहन का खून देख कर उमर का क्रोध शान्त हो गया और उनकी चेतना जाग उठी। उन्होंने बहन से कहाः ''जो किताब तुम लोग पढ़ रहे थे वो मुझको दिखाओ। अब ख़ब्बाब भी बाहर निकल आए। वे लोग इस समय कुरआन में से सूरह ताहा पढ़ रहे थे। यह लिखित सूरह उमर को दी गई और उन्होंने पढ़ना शुरू किया। हर आयत उनके हृदय में उतरती जा रही थी, यहां तक कि विषेश प्रभाव के अंतर्गत उनकी ज़बान से निकला "कितने अच्छे और कितने ऊँचे शब्द हैं, यह।"

उस समय मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथियों के साथ पहाड़ी पर दार–अरक़म में थे। उमर की इच्छा पर ख़ब्बाब उन्हें लेकर दार–अरक़म की ओर चले। पहुँच कर दरवाज़ा खटखटाया। भीतर से एक मुसलमान ने झांक कर देखा तो उमर कंधे पर तलवार लटकाए खड़े थे। उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) से कहा यह तो उमर हैं जो तलवार लेकर आए हैं। हज़रत हमज़ा ने कहाः ''उनको आने दो यदि अच्छे इरादे से आए हैं तो प्रसन्नता की बात है और यदि बुरे इरादे से आए है तो हम उन्हीं की तलवार से उनका वध कर देंगे।''

उमर घर के भीतर आए तो मुहम्मद (सल्ल०) उठ कर उनकी ओर आए। आप ने उनकी चादर पकड़ कर खींची और कहा "ऐ इबन खतताब, क्या चीज़ है जो तुमको यहां ले आई, खुदा की क़सम, ऐसा लगता है कि तुम मानोगे नहीं, यहां तक कि खुदा तुम्हारे ऊपर कोई आपदा ले आए।''

उमर ने कहाः ''ऐ मुहम्मद, मैं आप के पास इस लिए आया हूँ कि अल्लाह और रसूल पर ईमान लाऊँ और उस चीज़ को मानूँ जो आप अल्लाह के यहां से लाए हैं।'' यह सुन कर आप ने ऊँची आवाज़ में अल्लाहु अकबर कहा। इससे घर वालों ने जाना कि उमर ने इस्लाम कबूल कर लिया है।

इस्लाम लाने के बाद हज़रत उमर खाना काबा गए। वहां कुरैश के लोग बैठे थे। उन्होंने सब के सामने अपने कबूले इस्लाम की घोषणा की। इस पर कुछ लोग उठ कर उनको मारने के लिए दौड़े परन्तु हज़रत उमर बहुत बलशाली थे। उन्हों ने सबको धकेल दिया और ऊँचे स्वर में इस्लाम की सच्चाई का ऐलान किया।

हमज़ा बिन अबदुलमुत्तलिब मुहम्मद (सल्ल०) के चचा थे। वह पैग़म्बरी के छटे वर्ष ईमान लाए। मुहम्मद (सल्ल०) एक दिन सफ़ा पहाड़ी की ओर से जा रहे थे। वहां आपकी भेंट अबू जहल (अम्र बिन हेशाम) से हुई। उसने आप से बहुत बुरे तरीक़े से बात की। आप कुछ उत्तर दिए बिना वहां से चले गए। अबदुल्लाह बिन जुदआन की एक दासी यह पूरी घटना देख रही थी। वह आपके चचा हमज़ा के पास आई और उसने उनसे कहा कि ऐ अबू अम्मारा, काश उस समय तुम वहां होते जब अम्र बिन हेशाम तुम्हारे भतीजे को गाली दे रहा था और उनको तकलीफ़ पहुचा रहा था।

हमज़ा अभी शिकार से वापस आए थे और लोहे की कमान उनके हाथ में थी। वह कमान लिए हुए अबू जहल को खोजने निकले। अनको वह काबा के निकट मिल गया। अबू जहल वहां एक दल के साथ बैठा था। हमज़ा ने निकट आकर अबू जहल को अपनी कमान से मारा, उसके सर पर चोट लगी और खून बहने लगा। उन्होंने कहा कि तुम मुहम्मद के शत्रु बने हुए हो और उनको अप–शब्द कहते हो तो सुन लो कि मुहम्मद का धर्म, मेरा धर्म है।

अबू जहल के साथी उठे कि हमज़ा को पकड़ें और उन्हें मारें। परन्तु

अबू जहल ने अपने लोगों को रोक दिया। उसने कहा कि अबू अम्मारा को छोड़ दो, क्योंकि खुदा की क़सम मैंने इनके भतीजे को आज बहुत ज़्यादा बुरा कह दिया था।

विवरण में आता है कि हमज़ा जब घर पहुंचे तो मक्का के कुछ लोग उनसे मिले और उनको लज्जा दिलाई कि तुम अधर्मी हो गए और अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ दिया। इस से हमज़ा को शंका हुई, वे अशांत हो गए। वो सारी रात सो न सके। प्रातः काबा में गए और वहां उन्होंने अल्लाह से दुआ कीः ''ऐ अल्लाह, यदि मुहम्मद का मार्ग सत्य है तो उसकी सत्यता मेरे मन में प्रदर्शित कर दे अन्यथा मेरे लिए इस स्थिति से निकलने का कोई उपाय कर दे। मुझे सत्यदृष्टि प्रदान कर और मेरे मन से शंका और असमंजस दूर कर दे।''

इसी के साथ वह मुहम्मद (सल्ल०) से मिले और आप से अपने मन की दुविधा का वर्णन किया। आप ने उनको समझाया, उनको जहन्नम (नरक) से डराया और जन्नत (स्वर्ग) का शुभ समाचार दिया। इसके पश्चात अल्लाह ने हज़रत हमज़ा की शंका को समाप्त कर दिया और उनके मन में निश्चित्ता डाल दी। इस्लाम की सत्यता पर उनको पूर्णतः संतोष हो गया। उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) से कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप सच्चे हैं। ऐ मेरे भतीजे, अपने धर्म की घोषणा करो। खुदा की क़सम वो सब कुछ जिस पर आकाश छाया किए हुए है, यदि मुझे दिया जाए तब भी मैं तुम्हारे धर्म को नहीं छोड़ूँगा।

मक्का में इस प्रकार एक–एक कर के लोग इस्लाम कबूल करते रहे। कोई व्यक्ति पहले ही से बुतों की पूजा को पसंद नहीं करता था। उसने जब मुहम्मद (सल्ल०) के मुख से एकेश्वरवाद की वाणी सुनी तो उसे यह अपने हृदय की वाणी लगी और वह बिना विलंब उसका मानने वाला बन गया। किसी ने शाम–फिलस्तीन की यात्रा के बीच ईसाई विद्वानों से सुना था कि अरब की भूमि से एक पैग़म्बर जन्म लेने वाला है।

उसने जब उनके व्यक्तित्व को जाना और उनकी वाणी सुनी तो समझ लिया कि यह वही पैग़म्बर है। इस प्रकार वह आप से जुड़ गया। किसी ने स्वप्न देखा कि आप उसको आग की खाई से निकाल रहे हैं। उसके पश्चात उसने आप से भेंट की, उस पर आपकी सच्चाई खुल गई और उसने ईमान ग्रहण कर लिया।

आरंभिक समय में यही स्थिति बनी रही। विभिन्न कारणों से लोगों का ध्यान आपकी ओर आकर्षित होता। जांच–पड़ताल के बाद जब व्यक्ति का हृदय गवाही देता कि वास्तव में आप खुदा के भेजे हुए पैग़म्बर हैं तो वह आप पर विश्वास कर के आपका साथी बन जाता। इस प्रकार मक्का और मक्का के उपनगरवासी व्यक्तिगत रूप से आपकी पैग़म्बरी को मान कर आपके साथ जुड़ते रहे। यहां तक कि आपके पास एक बड़ा दल तैयार हो गया।

## lkoZtfud izpkj

धीरे–धीरे बहुत से लोगों ने इस्लाम को अपना लिया यहां तक कि मक्का में इस्लाम फैल गया और हर स्थान पर वो चर्चा का मुख्य विषय बन गया। अब खुदा ने अपने पैग़म्बर को निर्देश दिया कि इस्लाम की शिक्षा को खुले तौर से बयान करो। इबने इसहाक़ के अनुसार, तीन वर्ष तक मुहम्मद (सल्ल०) व्यक्तिगत रूप से प्रचार करते रहे। तीन वर्ष के पश्चात सूरह मुदस्सिर में यह आदेश दिया गया कि एक अल्लाह की सार्वजनिक घोषणा करो और कुछ घटाए बिना लोगों को उसका संपूर्ण विवरण दो।

अब मक्का के मुश्रिकों (अनेकेशवरवादी) की ओर से कड़ा विरोध होने लगा। उस समय मुहम्मद (सल्ल०) को टकराव से बचने का (अल–हजरः 94) आदेश दिया गया। आप और आपके साथी उस समय में ऐसा करते कि जब नमाज़ का अवसर आता तो आबादी के बाहर घाटी में चले जाते और लोगों से छिप कर नमाज़ पढ़ते।

इबने इसहाक़ कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने जब अपनी कौम के

सामने इस्लाम व्यक्त किया और सार्वजनिक रूप से उसकी घोषणा की (जैसा कि खुदा का आपको निर्देश था) तो आपकी क़ौम ने प्रारंभ में अपने को अलग नहीं किया। जब आप ने, उनके बुतों की आलोचना की तो वे आपके विरोधी और शत्रु बन गए, अतिरिक्त उन लोगों के जिन्हें अल्लाह ने इस्लाम के द्वारा बचा लिया। ऐसे लोग कम थे और छुपे हुए थे।

आपके चचा अबू तालिब यद्यपि ईमान नहीं लाए थे परन्तु इस अवसर पर उन्हों ने पूर्ण रूप से आपका साथ दिया। वह आपकी सुरक्षा और सहायता के लिए डट कर तैयार हो गए।

कुरैश ने जब देखा कि मुहम्मद (सल्ल०) उनके देवताओं पर आलोचना करने से पीछे नहीं हट रहे हैं, तो वे बहुत ज़्यादा नाराज़ हो गए। इसी के साथ उन्होंने यह भी देखा कि अबू तालिब हज़रत मुहम्मद के संरक्षक बने हुए हैं और आपकी सुरक्षा के लिए तत्पर हैं और वह मुहम्मद (सल्ल०) को किसी भी स्थिति में कुरैश को सौंपने के लिए तैयार नहीं। कुरैश के बड़े सरदार अबू तालिब के घर इकट्ठा हुए, उनके नाम हैं – उतबा, शैबा, अबू सुफयान, अबूल बखतरी, अल–असवद, अबू–जहल, अलआस इत्यादि।

उन लोगों ने अबू तालिब से कहा कि आपके भीतीजे ने हमारे देवताओं को बुरा कहा, हमारे समझदारों को मूर्ख बताया और हमारे सम्मानित लोगों को भटका हुआ बताया। अब आप या तो उनको ऐसी बातों से रोक दें या हमारे और उनके बीच हस्तक्षेप न करें, क्योंकि आप भी इसी धर्म पर हैं, हम स्वंय उनका समाधान कर लेंगे।

अबू तालिब ने विनम्रता से उनकी बातें सुनीं और कुशाग्रता पूर्वक उनको वापस कर दिया। मुहम्मद (सल्ल०) अपने तरीक़े पर बने रहे और खुदा के धर्म की ओर लोगों को बुलाते रहे। इसके परिणाम स्वरूप आपके और मुश्रिकों के बीच सम्बन्ध और अधिक बिगड़ गए।

कुरैश के बीच आप का चर्चा रहता, वे एक दूसरे को आपके विरूद्ध

उकसाते।

कुरैश के सरदार दोबारा अबू तालिब के पास आए और कहाः ''ऐ अबू तालिब, आप हम सब से आयु, पद और प्रतिष्ठा में बड़े हैं। हमने आपसे कहा था कि अपने भतीजे को हम से रोकें, परन्तु आपने उनको नहीं रोका। खुदा की क़सम हम इस स्थिति को सहन नहीं कर सकते कि हमारे बड़ों को गालियां दी जाएं, और हमारे समझदारों को मूर्ख बताया जाए और हमारे देवताओं में दोष निकाला जाए। अब या तो हम उनको इस से रोक देंगे या उनसे युद्ध करेंगे फिर आप इस बीच नहीं आएंगे, यहां तक कि दोनों गिरोह में से कोई एक समाप्त हो जाए।'' उसके बाद वे लौट गए। अबू तालिब को अपने संप्रदाय की अलाहदगी और दुश्मनी से बहुत अधिक पीड़ा हुई। उनको यह भी स्वीकार्य नहीं था कि मुहम्मद (सल्ल०) को इस प्रकार निस्सहाय कर के उनके सपुर्द कर दें।

कुरैश ने जब अबू तालिब से इस प्रकार कहा तो उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को बुलाया और आप से कहाः ''ऐ भतीजे, तुम्हारी बिरादरी के लोग मेरे पास आए और मुझ से ऐसा और ऐसा कहा। इसलिए तुम मुझ पर दया करो और स्वंय पर भी और मेरे ऊपर इतना भार न डालो जिसको सहन करने की शक्ति मुझमें न हो।''

मुहम्मद (सल्ल०) को संदेह हुआ कि उनके चचा का विचार उनके बारे में बदल गया है और अब वह उनका पक्ष लेना छोड़ देंगे और उनको कुरैश के सुपुर्द कर देंगे। आप ने अबू तालिब से कहाः ''ऐ मेरे चचा, 'खुदा की क़सम, यदि वे मेरे दाएं हाथ में सूर्य और बाएं हाथ में चंद्रमा रख दें और चाहें कि मैं इस कार्य को छोड़ दूँ, तब भी मैं इसको नहीं छोड़ूँगा, यहां तक कि अल्लाह इसे आगे बढ़ा दे या इसी में मेरी मृत्यु हो जाए।''

यह कहते हुए आप की आँखों से आँसू निकल आए और आप रो पड़े। इसके पश्चात आप उठ कर वहां से जाने लगे तो अबू तालिब ने आपको पुकारा और कहा कि भतीजे यहाँ आओ। उसके बाद आप उनके

पास गए। अबू तालिब ने कहाः ''ऐ मेरे भीतीजे, जाओ और जो कहना चाहते हो कहो। खुदा की क़सम, मैं किसी भी क़ीमत पर तुमको उनके हवाले नहीं करुंगा।''

कुरैश ने समझ लिया कि अबू तालिब मुहम्मद (सल्ल०) को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं और न आपसे अलग होना चाहते हैं। इस संबंध में वह पूरी क़ौम की मुखालिफत का निश्चय किए हुए हैं। तदुपरांत वे अम्मारा बिन अल वलीद बिन अल–मुग़ीरा को ले कर अबू तालिब के पास गऐ और कहा कि यह अम्मारा बिन अल वलीद बिन अल मुग़ीरा है, जो कुरैश में सब से अधिक शक्तिशाली और आकर्षक व्यक्ति है। इसको अपने पास रखिए और अपना बेटा बना लीजिए, यह आपके लिए है, और आप अपने भतीजे को हमें सौंप दीजिए जिस ने आपके धर्म का और आपके पूर्वजों के धर्म का विरोध किया और आपकी क़ौम में फूट डाली और उनके समझदारों को मूर्ख बताया, ताकि हम उसका वध कर दें। आपको हम एक व्यक्ति के बदले एक व्यक्ति दे रहे हैं।

अबू तालिब ने कहाः ''खुदा की क़सम तुम मुझसे कितना बुरा व्यवहार कर रहे हो। क्या तुम मुझको अपना बेटा दे रहे हो कि मैं उसको तुम्हारे लिए खिलाऊँ और तुम को मैं अपना बेटा दे दूँ ताकि तुम उसको मार डालो। खुदा की क़सम ऐसा कदापि नहीं हो सकता।'' मुतइम बिन अदी ने कहाः ''ऐ अबू तालिब, खुदा की क़सम, तुम्हारी क़ौम ने तुम से न्याय की बात की है और जो बात तुम को पसन्द नहीं उस से बचने की पूरी चेष्टा की है। मैं समझता हूँ कि आप उनकी कोई बात मानना ही नहीं चाहते।'' अबू तालिब ने मुतइम से कहाः ''खुदा की क़सम, उन्होंने मेरे साथ न्याय नहीं किया, यदि तुमने निश्चय कर लिया है कि मेरे विरूद्ध अपनी क़ौम का साथ दो, तो फिर जाओ जो तुम्हारे मन में आए करो।''

कुरैश जाति में से कुछ व्यक्तियों ने मुहम्मद (सल्ल०) के हाथ पर इस्लाम कबूल कर लिया था। कुरैश के सरदारों ने आपके उन साथियों

के विरूद्ध लोगों को उकसाया तो हर वर्ग अपने भीतर के मुसलमानों पर टूट पड़ा। वे उन्हें बहुत अधिक कष्ट देते और उनको उनके धर्म से वापस लौटाने का प्रयास करते परन्तु खुदा ने अपने पैग़म्बर को अपने चचा अबू तालिब के द्वारा सुरक्षित रखा। जब अबू तालिब ने कुरैश की यह कार्यवाहियां बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब में देखीं तो वह उठ खड़े हुए और मुहम्मद (सल्ल०) के समर्थन के लिए उन सबको पुकारा जिस पर वो स्वंय डटे हुए थे। इसके बाद सारे बनू हाशिम आपकी हिमायत पर आ गए और उन्हों ने अबू तालिब की पुकार का अनुमोदन किया केवल अबू लहब ने इस मामले में साथ नहीं दिया।

इसके बाद कुरैश के कुछ लोग वलीद बिन अल–मुग़ीरा के पास इकट्ठा हुए, वह आयु में सबसे वृद्ध व्यक्ति थे। कुछ समय में हज्ज होने वाला था। वलीद ने उनसे कहा ऐ कुरैश के लोगो, हज का अवसर निकट आ चुका है। थोड़े समय में अरब के लोग तुम्हारे पास आएंगे। वे मुहम्मद (सल्ल०) से परिचित हो चुके हैं। तुम लोग इस मामले में कोई एक मत बना लो। ऐसा ना हो कि तुम अलग–अलग बातें करो और इस प्रकार एक दूसरे की काट करने लगो। उन्होंने कहाः ''ऐ अबू–अबदुश–शम्स तुम ही कुछ कहो और हमको एक सुझाव दो ताकि हम वही कहें।'' वलीद ने कहाः ''नहीं। तुम कहो मैं सुन रहा हूँ।''

उन्होंने कहा कि हम कहेंगे कि वह जादूगर हैं। वलीद ने कहा नहीं, ख़ुदा की क़सम वह जादूगर नहीं। हमने जादूगरों को देखा है। उसका कथन जादूगरों जैसा नहीं। फिर उन्होंने कहा कि हम उसको दीवाना बताऐंगे। वलीद ने कहा नहीं, वह दीवाना भी नहीं। हमने दीवानों को देखा है। उसमें किसी प्रकार का बुद्धि–विकार नहीं, न ही वो बुरे स्वभाव का व्यक्ति है, न ही भ्रमित है। उन्होंने कहा फिर हम उसको कवि कहेंगे। वलीद ने कहा वह कवि भी नहीं हम काव्य संबंधी सारी रचनाओं को जानते हैं। उसका कथन काव्यात्मक नहीं। उन्हों ने कहा फिर हम उसको ओझा कहेंगे। वलीद ने कहा वह ओझा भी नहीं, हम ने ओझा को भी देखा है

उसके यहां न झाड़ फूँक है और न ओझा जैसा तंत्र मंत्र है।

लोगों ने कहा ऐ अबू अबद शमस फिर हम क्या कहें। वलीद ने कहा खुदा की क़सम उसके कथन में एक मीठापन है उसका आधार बहुत मज़बूत है। उसका वृक्ष फलों वाला है तुम उन बातों में से जो भी कहोगे उसका निराधार होना स्पष्ट हो जाएगा। उसके संबंध में निकटतम बात यह है कि तुम कहो कि वह एक मायावी है और अपने कथन के इन्द्रजाल में फंसा कर बाप और बेटे, भाई और भाई, मियां और बीवी आदमी और उसके परिवार के बीच मतभेद उत्पन्न कर देता है। सब लोगों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की और वहां से चले गए।

फिर जब हज्ज का अवसर आया और लोग आस पास से आने लगे तो यह लोग उनके मार्ग पर बैठ जाते। जो व्यक्ति उनके निकट से गुज़रता, उसको मुहम्मद (सल्ल०) से डराते और आपके बारे में बताते।

हज्ज के पश्चात जब लोग अपनी–अपनी बस्तियों को लौटे तो वे मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में समाचार भी लेकर गए। इस प्रकार आपकी ख्याति अरब की सारी बस्तियों में फैल गई। जिस धर्म को अरब के केवल कुछ लोग जानते थे, उसको पूरे अरब समुदाय ने जान लिया।

मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्का में एककेश्वरवाद की ओर लोगों को बुलाना प्रारंभ किया तो आरंभ में आपका तरीक़ा यह था कि आप अपने परिचित लोगों से और निकट सम्बंधियों से भेंट करके कहते कि अल्लाह ने मुझको अपना पैग़म्बर बनाया है। मैं तुमको दावत देता हूँ कि तुम मेरा अनुसरण करके खुदा की जन्नत के भागीदर बनो। कुछ व्यक्तियों ने आप पर विश्वास किया और कुछ लोगों ने इसे अनावश्यक समझ कर उसकी उपेक्षा की।

उसके बाद हज़रत मुहम्मद सामूहिक सम्मेलनों में जाने लगे। जब आपको ज्ञात होता कि कुछ व्यक्ति जमा हैं तो वहां आप जाते और उन लोगों के सामने एक खुदा की बात कहते और उन्हें कुरआन का कोई

भाग पढ़ कर सुनाते। उदाहरणार्थ हरम (काबा) का सम्मेलन, मेले और बाज़ार इत्यादि। कभी उनको इस प्रकार उपदेश देते "ऐ लोगो, कहो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तुम्हारा कल्याण होगा"। परन्तु बहुत कम ऐसा हुआ कि कोई व्यक्ति आपके उपदेश को गंभीरतापूर्वक सुने और स्वीकारे।

## vfre i;kl

उस समय मक्का के मुसलमानों में केवल एक व्यक्ति था जो बिना भय और आशंका के अपने घर से निकलता और वो स्वंय पैग़म्बरे इस्लाम थे। नियमानूसार आप काबा में जाकर नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू जहल ऊँट की आंतें (अमाश्य) हाथ में लिए हुए आया जो कि खून और गंदगी से भरी हुई थी। अरब में अपराधी को कई तरीक़ों से फांसी दी जाती थीं उन में से एक यह था कि ऊँट की आँते जो खून या पानी से भरी हुई होती थीं, अपराधी के सिर पर इस प्रकार डालते थे कि उसका सिर और चेहरा आंतों के अंदर चला जाता और नीचे का भाग जो थैली के समान होता है गर्दन में बांध दिया जाता था। दोषी का मुंह और नाक आंत के भीतर बन्द हो जाता तथा, परिणामवश दम घुटने से उसकी मृत्यु हो जाती थी। उस दिन अबू जहल और उसके साथियों ने यही दुर्व्यवहार मुहम्मद (सल्ल०) के साथ किया। उन्होंने चुपके से काबा में प्रवेश किया और ऊँट के उदर और आमाशय को आप पर इस प्रकार डाल दिया कि आपका सर और चेहरा उसके अन्दर चला गया उसके पश्चात अबूजहल ने उसका अंतिम भाग आपकी गर्दन के चारों ओर बांध दिया।

हज़रत मुहम्मद को इस पीड़ा से स्वंय को छुड़ाने का असफ़ल प्रयास करते हुए देख कर एक कुरैशी महिला को दया आ गई। वो आप के हाथ पांव मारने का यह दृष्य देख नहीं पा रही थी किंतु वो स्वंय उनकी सहायता नहीं कर सकती थी क्योंकि उसको अबू जहल का भय था। वो

तीव्र गति से चल कर आप के घर आई और आपकी पुत्री हज़रत रूक़ैय्या से कहा कि अपने पिता को बचाने के लिए दौड़ो, यदि विलंब किया तो उनको जीवित न पाओगी। हज़रत रूक़य्या रोती हुई ख़ाना काबा पहुंचीं। अबू जहल और दूसरे लोगों ने जैसे ही हज़रत रूक़य्या को देखा पीछे हट गए। हज़रत रूकय्या ने ओझ को खोला और हज़रत मुहम्मद के सिर और चेहरे को निकाल कर अपने कुर्ते से साफ़ किया। आप लगभग एक घंटे तक अचेत रहे। उसके पश्चात अपनी पुत्री रूक़य्या की सहायता से घर आए।

अगले दिन आप फिर उसी प्रकार काबा जाने लगे जैसे कोई घटना ही न घटी हो। कुरैश ने देखा तो उन्होंने दूसरा उपाय किया। एक दिन उक़बा नाम का व्यक्ति हाथ में चादर लिए, मंद गति से चलता हुआ आपके निकट पहुंच गया और जैसे ही आप सजदे में गए, उसने अपनी चादर अचानक हज़रत मुहम्मद के सर पर डाल दी और दोनों हाथों से इस प्रकार ज़ोर ज़ोर से मारने लगा कि उनका पूरा चेहरा खून से भर गया। कुछ देर के संघर्ष के बाद आप स्वंय को उसकी पकड़ से छुड़ा पाए और दोबारा खून में लिप्त घर वापस आए। क्या कारण था कि इतनी कट्टर शत्रुता के उपरांत मक्का वालों ने आपको सीधे सीधे तलवार द्वारा वध करने का साहस नही किया? उसका कारण उस समय की जातिय व्यवस्था थी। कुरैश वाले दस जातियों में बटे हुए थे। जिन में से एक वर्ग हाश्मि था। हज़रत मुहम्मद उसी वर्ग के व्यक्ति थे। यदि दूसरे क़बीलों में से कोई एक आप का वध करता तो क़बाइली परंपरा के अनुसार या तो आपके खून का मूल्य क़बीला हाशिम को देना पड़ता या उनसे युद्ध के लिए तैयार होना पड़ता। यही कारण था कि वे आपकी हत्या का दूस्साहस नहीं कर पाते थे।

अंततः विचार विमर्श से यह सुनिश्चित हुआ कि कुरैश के सारे मुखिया आप के चचा अबू तालिब के पास जाएं और उनसे कहें कि मुहम्मद को

अपने क़बीला से निष्कासित कर दें और इसकी पूर्ति के लिए किसी दूसरे वर्ग से एक या दो युवा अपने वर्ग में सम्मिलित कर लें। अबू तालिब यदि आपको अपने वर्ग से निष्कासित करने की घोषणा कर देते तो जातिय व्यवस्था के अनुसार आपका वध करना वैधानिक रूप से उचित हो जाता। कुरैश का प्रतिनिधि अबू तालिब के पास गया और उन्हें अपने वर्ग की बात पहुंचाई। अबू तालिब ने कहा "जहां तक मेरा संबंध है" मैं तुम से कहता हूँ कि मैं मुसलमान न हूँगा, मेरी मृत्यु अपने बाप दादा के धर्म पर होगी परन्तु अपने भतीजे का बहिष्कार नहीं कर सकता कि तुम उसका वध कर डालो। मैं तुम को वचन देता हूँ कि मैं उन से बात करूंगा, कदाचित मैं उनको नए धर्म को छोड़ने पर राज़ी कर सकूँ। तुम लोग कल मेरे पास आओ, अबू तालिब ने जब हज़रत मुहम्मद से बात चीत की तो उन्हों ने स्पष्ट कह दिया कि "ऐ चचा मैंने जिस दिन से यह कार्य आरंभ किया है उसी दिन से मेरा विश्वास खुदा के अतिरिक्त किसी और पर नहीं है, यदि आप क़बीले से मेरा बहिष्कार करना चाहें तो कर दें।" इसके बाद अबू तालिब ने कुरैश वालों से कह दिया कि "मैं मुहम्मद को क़बीले से अलग नहीं करूंगां परन्तु जब तक मैं जीवित हूँ उनका धर्म भी नहीं अपनाऊँगा।"

कुरैश वालों ने जब देखा कि अबू तालिब के यहां उनका प्रयास विफल हो गया तो उन्होंने निश्चय किया कि हज़रत मुहम्मद से सीधे तौर पर बात चीत की जाए। मक्का में कुरैश वर्ग के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने एक दिन एकत्र होकर कहा कि एक ऐसे व्यक्ति का पता लगाओ जो तुम में सब से बड़ा जादूगर, बड़ा ओझ और बड़ा कवि हो, वह मुहम्मद के पास जाए जिस ने हमारे दल में मतभेद पैदा कर दिया है, सब ने कहा इस कार्य के लिए उत्बा बिन रबीअ से बढ़ कर कोई व्यक्ति नहीं।

इस सहमति के बाद उत्बा ने आपके पास आकर कहा– ''ऐ मुहम्मद, तुम श्रेष्ठ हो या तुम्हारे पिता अब्दुल्लाह। आपने कोई उत्तर न दिया। फिर पूछा तुम श्रेष्ठ हो या अब्दुल मुत्तलिब। आपने कोई उत्तर न दिया।

उसके बाद उत्बा ने कहा कि यदि तुम यह मानते हो कि यह लोग श्रेष्ठ थे तो इन लोगों ने इन्हीं देवताओं की पूजा की जिनको तुम बुरा कहते हो। यदि तुम्हारा यह दावा है कि तुम उन लोगों से श्रेष्ठ हो तो कहो हम भी तुम्हारी बात सुनें। खुदा की क़सम हमने कभी किसी भेड़ के बच्चे को अपने रेवड़ के लिए तुमसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण नहीं पाया। तुमने हमारे दल में फूट डाल दी, और हमारे धर्म को कलंकित किया। हमको अरब में यहाँ तक बदनाम किया कि चारों ओर यह चर्चा है कि कुरैश में एक जादूगर ने जन्म लिया है। खुदा की क़सम हम गर्भवती महिला की चींख के जैसे प्रतीक्षक हैं कि हमारे में तलवार चल जाए और हम आपस में कट मरें।'' फिर उत्बा ने कहाः ''ऐ व्यक्ति तू इच्छुक है तो हम तेरे लिए धन का इतना ढेर लगा दें कि तू मक्का में सबसे बड़ा धनवान हो जाए, यदि कोई बीमारी है तो हम उसके उपचार के लिए अपना कोष तक खर्च कर दें, यदि विवाह की इच्छा है तो कुरैश की जिस महिला से चाहो विवाह करा दें, और यदि तुम राजा बनना चाहते हो तो हम तुम को अपना राजा बना देंगे।''

आप चुपचाप उसकी बातों को सुनते रहे, अंत में बोलेः ''तुम कह चुके'', उत्बा ने कहाः ''हां''। फिर आपने कुरान की इकतालीसवी सूरह आरंभ से पढ़नी शुरू की। आप तेरहवीं आयत तक पहुंचे थे कि उत्बा ने आपकी पीठ पर हाथ रख दिया और कहाः ''बस''। फिर पूछाः ''क्या इसके अतिरिक्त कुछ और कहना है''। आपने कहाः ''नहीं''। उसके बाद उत्बा लौट कर अपने घर बैठ रहा और लोगों के पास न गया। अबू जहल को जब ज्ञात हुआ तो उसने कहाः ''ए कुरैशी भाईयो, मेरा उत्बा के बारे में इसके अतिरिक्त और कोई विचार नहीं कि वो मुहम्मद की ओर आकर्षित हो गया और उसको मुहम्मद का खाना पसंद आ गया।''

उसके पश्चात अबू जहल और उसके साथी उत्बा के यहां गए। अबू जहल ने उत्बा से कहाः "ऐ उत्बा, खुदा की क़सम, हमको इस कारण

आना पड़ा कि संभवतः तुम मुहम्मद की ओर आकर्षित हो गए। यदि तुम्हारे पास धन का अभाव है तो हम तुम्हारे लिए इतना धन इकट्ठा कर दें कि फिर तुमको मुहम्मद के खाने की आवश्यक्ता न रह जाए।'' उत्बा यह सुनकर क्रोधित हो उठा, उसने कहाः ''तुम लोग भली भांति जानते हो कि मैं कुरैश में सबसे अधिक धनवान हूँ परन्तु ख़ुदा की क़सम मुहम्मद ने मुझको ऐसा उत्तर दिया कि वो न जादू है, न कविता और न ज्योतिष। उसने मुझसे ऐसे शब्द कहे कि खुदा की क़सम, मेरे कानों ने उस जैसे शब्द कभी नहीं सुने, मैं आश्चर्यचकित रह गया, कि क्या उत्तर दूँ। तुमको पूर्णतः ज्ञात है कि मुहम्मद झूठ नहीं बोलता। मुझको भय है कि तुम पर आसमान से कोई आपदा न आ जाए।''

इसके पश्चात कुरैश ने एक दिन हज़रत मुहम्मद को बुलाया और आपके सम्मुख कुछ प्रस्ताव रखे। उन्होंने कहाः ''आप जानते हैं कि हमारे नगर से अधिक असुविधाजनक कोई नगर नहीं है। हमारे यहां पानी नहीं है। हमसे ज़्यादा व्यथित जीवन किसी का नहीं। इस कारण जिस रब ने आपको भेजा है उससे प्रार्थना कीजिए कि वो इन पर्वतों को यहां से हटा दे जिससे हमारे कष्टों का निवारण हो जाए। हमारे नगर का विस्तार कर दें और हमारे लिए शाम और इराक़ जैसी नदियां बहा दे। इसी प्रकार हमारे पूर्वज जिनकी मृत्यु हो चुकी है उनको हमारे लिए जीवित कर दे। उन जीवित होने वालों में कुसइ बिन किलाब भी हों क्योंकि वे महान और सत्यवादी थे। फिर हम उनसे पूछेंगे कि जो तुम कहते हो वह सत्य है या असत्य। यदि उन्होंने तुम्हारी पुष्टि कर दी और तुमने वो सुविधाएं दीं जिन का हमने प्रश्न किया है तो हम तुम्हारी पुष्टि कर देंगे और उसके अनुसार हम तुम्हारा वो रूतबा भी मान लेंगे जो तुम्हारा दर्जा खुदा के यहां है। और हम पूर्ण रूप से यह भी जान लेंगे कि आप वास्तव में खुदा के पैग़म्बर हैं जैसा कि आप कहते हैं।''

यह सुनकर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहाः मैं इन चीज़ों के साथ तुम्हारी

ओर नहीं भेजा गया हूँ। मैं तो वही चीज़ लेकर तुम्हारे पास आया हँ जिस के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है, और वो मैंने तुम तक पहुंचा दी। यदि तुम उसको मानो तो दुनिया और आख़िरत में तुम्हारा हिस्सा है और यदि तुम उसका खंडन कर दो तो मैं खुदा के निर्देश की प्रतीक्षा करूंगा, यहां तक कि वो मेरे और तुम्हारे बीच निर्णय कर दे।''

कुरैश के लोगों ने कहाः ''यदि तुम हमारे लिए ऐसा करने पर सहमत नहीं हो तो स्वंय अपने लिए ही करो। तुम अपने रब से प्रार्थना करो कि वो तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता (दूत) भेज दे। जो उन बातों की पुष्टि करे, जो तुम कहते हो। और अपने रब से कहो कि भवन, बगीचे और सोने चांदी के कोश तुम्हें दे दे, ओर इस प्रकार तुम को उन कार्यों से निर्वित कर दे जिसमें हम तुम को व्यस्त देखते हैं। क्योंकि तुम उसी प्रकार बाज़ारों में जाते हो जिस प्रकार हम जाते हैं। तुम भी उसी तरह काम ध न्धे की तलाश करते हो जिस तरह हम करते हैं। तब हम तुम्हारी उस पदवी तथा श्रेष्ठता को जान लेंगे जो तुम्हारा तुम्हारे रब के यहाँ है। और यह कि तुम पैग़म्बर हो जैसा कि तुम दावा करते हो।

मुहम्मद (सल्ल०) ने उनसे कहाः ''मैं ऐसा करने वाला नहीं और न मैं ऐसा व्यक्ति हूँ कि अपने रब से इन चीज़ों के लिए प्रश्न करूँ। खुदा ने तो मुझको डराने वाला और खुशखबरी देने वाला बना कर भेजा है। यदि तुम उस चीज़ को स्वीकार कर लो जिसको लेकर मैं आया हूँ तो दुनिया और आख़िरत में तुम्हारा हिस्सा है। और यदि तुम इसको मेरी ओर लौटा दो तो मैं खुदा के निर्णय की प्रतिक्षा करूँगा। यहां तक कि मेरे और तुम्हारे बीच फैसला हो जाए।''

कुरैश ने कहाः ''फिर तुम ऐसा कर दो कि हमारे ऊपर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो जैसा कि तुम्हारा दावा है। अगर तुम्हारा रब चाहे तो ऐसा भी कर दे। हम उस वक्त तक ईमान नहीं लाएंगे जब तक कि तुम ऐसा न करो।'' आप ने कहा यह खुदा पर है यदि उसने तुम्हारे साथ

ऐसा करना चाहा तो वो ऐसा ही करेगा।''

कुरैश ने कहाः ऐ मुहम्मद, क्या तुम्हारे रब को ज्ञात न था कि हम तुम्हारे साथ बैठेंगे और तुमसे वो प्रश्न करेंगे जो हम ने किया है और हमारी वो मांगें होंगी जो हम ने की, कि वो पहले से ही इन प्रश्नों के उत्तर दे देता जो हमने किए और वो तुमको बता देता कि इस विषय में हमारे साथ क्या सलूक करने वाला है।''

फिर कुरैश ने कहाः ''हम तो तुम्हारी बातें मानने के लिए तैयार नहीं है और हमें जानकारी मिली है कि इन बातों की शिक्षा तुमको यमामा का एक व्यक्ति दिया करता है जिसका नाम रहमान है। और हम तो खुदा की क़सम कभी भी रहमान पर ईमान न लाएंगे। ऐ मुहम्मद हमने अपना तर्क दे दिया। खुदा की क़सम हम तुमको नहीं छोड़ेंगे, यहां तक कि या तो हम तुम्हारी हत्या कर दें या तुम हमें खत्म कर दो। उनमें से किसी ने कहा कि हम तो फरिश्तों को पूजते हैं और वे खुदा की लड़कियां हैं, इसलिए हम तब तक सहमत नहीं होंगे जब तक कि आप हमारे सामने खुदा और फरिश्तों को प्रस्तुत न कर दो।''

जब उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) से यह कहा, तो आप उनके पास से उठ खड़े हुए। आपके साथ अबदुल्लाह बिन अबी उमय्या भी उठ खड़ा हुआ, वह आपकी फूफी आतिका बिनत अबदुल मुत्तलिब का लड़का था। उसने कहाः ''ऐ मुहम्मद, क़ौम ने आपके सामने जो बातें रखीं आपने उनको अस्वीकार कर दिया तब उन्होंने अपने लिए आप से कुछ मांगें रखीं ताकि उसके द्वारा वह आपका दर्जा जान सके जो आपके दावे के अनुसार खुदा के यहां हैं ताकि वे आपको पहचान कर मान्यता दें, और अनुसरण करें। परन्तु आपने उसको नहीं किया।

फिर उन्होंने आपसे कहा आप स्वंय अपने लाभ के लिए वह चीज़ें अपने रब से प्राप्त करें जिस से वे लोग खुदा के यहां आपके दर्जे और श्रेष्ठता को समझ पाएं, परन्तु आपने ऐसा भी नहीं किया, फिर उन्होंने आपसे यह मांग की कि आप उन पर आकाश से कोई आपदा उतारें जिस

से आप उन्हें डराते हैं। परन्तु आप वो भी न कर सके।''

अबदुल्लाह बिन उमय्या ने कहाः ''खुदा की क़सम, मैं तो कदापि आप पर ईमान लाने वाला नहीं, यहां तक कि आप ऐसी सीढ़ी लाएं जो आसमान तक जाती हो, फिर आप उस पर चढ़ें और मैं आपको उस पर चढ़ते हुए देखूँ। यहां तक कि आप आसमान पर पहुंच जाएं फिर आप आसमान से अपने लिए कोई लेख लाऐं और आपके साथ चार फरिशते हों जो गवाही दें कि आप वहीं हैं जो आप अपने बारे में कहते हैं। खुदा की क़सम यदि आप ने ऐसा कर दिया तब भी मैं नहीं समझता कि मैं आपकी पुष्टि करूंगा।''

उसके उपरांत मुहम्मद (सल्ल०) घर की ओर लौट आए, परन्तु आप निराश और दुःखी थे क्योंकि आप अपनी कौम के पास जो आशा ले कर गए थे वो पूरी नहीं हुई थी। बल्कि उसके बाद वे लोग आप से और भी अधिक दूर हो गए।

## gc'k iokl

मक्का के लीडरों के विरोध के उपरांत मक्का में इस्लाम फैल रहा था। प्रतिदिन किसी न किसी व्यक्ति के इस्लाम लाने की ख़बर फैलती। यह देखकर मक्का के सरदार अत्यधिक क्रोधित हो उठें और तब मुसलमानों पर उनके अत्याचारों ने और उग्र रुप धारण कर लिया। उस समय मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने साथियों से कहा कि तुम मक्का छोड़ कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाओ। लोगों ने पूछा कि कहां जाएं। आपने हाथ से हबश की ओर इशारा किया।

आप ने कहा हब्श में एक निष्पक्ष राजा है। उसके राज्य में कोई व्यक्ति किसी के ऊपर अन्याय नहीं कर सकता। तब लोगों ने मक्का से जाना आरंभ कर दिया। रजब 5 नबवी (मुहम्मद (सल्ल०) को पैग़म्बरी मिलने के बाद का रिकार्ड) को मुसलमानों के पहले यात्री दल ने प्रस्थान

किया। उसमें ग्यारह पुरूष और पांच महिलाएं थीं।

यह लोग छिप कर चुप चाप मक्का से निकले। मक्का से गुज़र कर जद्दा के तट पर पहुंचे। वहां से दो व्यापारिक नौकाएं हबश जाने के लिए तैयार थीं। वे भाड़े के पांच दिरहम दे कर उस पर सवार हो गए। मक्का वालों को सूचना मिली तो मुसलमानों को पकड़ने के लिए आदमी दौड़ाए। परन्तु यह लोग जब तट पर पहुंचे तो मुसलमानों को लेकर नौकाएं वहां से जा चुकी थीं। कुछ समय बाद ही मुसलमानों का एक और दल हबश की ओर रवाना हुआ। दूसरे प्रस्थान में 86 पुरूष और 17 महिलाएं थीं।

कुरैश ने जब देखा कि मुसलमान हब्श पहुंच कर सुख से रह रहे हैं और वहां उनके इस्लाम पर कोई रोक लगाने वाला नहीं तो उन्होंने फिर आपस में सलाह मश्विरा किया। निश्चय हुआ कि अम्र बिन अल आस और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ को पारितोषिक देकर हबश भेजा जाए, जो जाकर हबश के राजा नजाशी को दे और राजदरबार में उपस्थित गण को भी भेंट दें ताकि उनका विश्वास जीता जा सके।

इस संकल्प को लेकर अम्र बिन अल आस और अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ दोनों हब्श पहुचे। उन्होंने सर्वप्रथम राज सभासदों और राजा के निकटवर्ती लोगों को उपहार भेंट किए और उन से परसपर वार्तालाप करके उनको अपने साथ सहमत करने की चेष्टा की ताकि वे राजा के समक्ष उनका समर्थन करें। उन्होंने कहा कि हमारी नगरी के कुछ मूर्ख लोगों ने अपने पूर्वजों का धर्म छोड़कर तुम्हारे राज्य में शरण ली है। वह न हमारे धर्म पर हैं और न तुम्हारे धर्म (ईसाई) पर हैं बल्कि उन्होंने एक नया धर्म अपनाया है जिससे हम और तुम दोनों परिचित नहीं। हमारी क़ौम के लोगों ने हमको इसलिए यहां भेजा है ताकि हम दोबारा उन्हें अपने राज्य में वापिस ले जाएं। आप आदरणीय लोग राजा से आग्रह करें कि वह उन लोगों को हमें सौंप दें।

वे लोग सहमत हो गए। इसके पश्चात अम्र बिन अल–आस और

अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ ने नजाशी के राजसभा में प्रवेश किया और उन्होंने राज्य प्रथा के अनुसार राजा के सामने सजदा किया। उसको उपहार देकर कहा कि हमारे कुछ लोग अधर्मी होकर आपके राज्य में आ गए हैं। उनकी क़ौम के लोगों ने हमें भेजा है कि हम उनको यहां से वापस ले जाएं। राजा के दरबारियों ने वादे के अनुसार उनका अनुमोदन किया और कहा कि उन लोगों को इन्हें सौंप देना चाहिए।

अम्र बिन अल आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ चाहते थे कि राजा, मुसलमानों से वार्तालाप किए बिना ही उन्हें उनको सौंप दें। जब उन्होंने नजाशी से यह बात कही तो नजाशी क्रोधित हो उठा उसने कहा कि मैं उन लोगों से बात किए बिना इस संदर्भ में कोई निर्णय नहीं ले सकता। उसने अपने एक आदमी को आदेश दिया कि वह मुसलमानों को दरबार में ले आए।

मुसलमानों ने आपस में परामर्श किया कि नजाशी ईसाई राजा है उससे हमें किस ढंग से बात करनी चाहिए। आपसी राय मश्विरे से यह तय पाया कि हम दरबार में वही कहेंगे जो हमारे पैग़म्बर ने हमको सिखाया है। वे दरबार में आए तो उन्होंने राजा को केवल सलाम किया। राज्य प्रथा के अनुसार उन्होंने उसको सजदा नहीं किया। मुसलमानों से पूछा गया कि तुम लोगों ने राजा को सजदा क्यों नहीं किया। जाफर बिन अबी तालिब ने मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि हम एक अल्लाह के अतिरिक्त किसी को सजदा नहीं करते। हमारे पैग़म्बर ने हमको यही बताया है। नजाशी ने पूछा कि ईसाइयत (Chrishtianity) और बुतप्रस्ती के अतिरिक्त वो कौन सा धर्म है जो तुम ने अपनाया है। हज़रत जाफर उठे और राजदरबार में उन्होंने यह तक़रीर (वक्तव्य) की:

''हे राजा! हम लोग बहुत सारे देवताओं को मानते थे हम बुतों की पूजा करते थे और मृतक खाते थे, पड़ोसी के साथ दुर्वयवहार करते थे। हम हराम (अवैध) को हलाल (वैध) किए हुए थे। और हमारे कुछ हमारे

कुछ का खून बहाते थे। न हम हलाल को जानते थे न हराम (अवैध) को। फिर अल्लाह ने हमारे पास हमारे जैसे एक व्यक्ति को पैग़म्बर बना कर भेजा। हम उसकी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी को जानते थे। उसने बताया कि हम निकट संबंधियों से अच्छा व्यवहार करें और पड़ोसियों का साथ दें। सत्यवादी बनें ईमानदारी अपनाऐं, झूठ न बोलें और बेसहारा का माल न खाएं और उसने आदेश दिया कि हम एक अल्लाह की ईबादत करें, किसी और को उसका साझी न बनाएं, उसी के लिए रोज़ा रखें उसी के लिए ज़कात दें। फिर हमने उसकी पुष्टि की और जो कुछ वह अल्लाह की ओर से लाया था उसका अनुसरण किया। इस पर हमारी क़ौम ने हमको कष्ट देना शुरू कर दिया। हमारे साथ दुर्व्यवहार किया। इन्होंने चाहा कि हम दोबारा छोड़े हुए धर्म पर लौट जाएं। जब हम उनके अत्याचारों से तंग आगए तो अपना देश छोड़ कर आपके राज्य में इस आस के साथ आये हैं कि हम पर अत्याचार नहीं किया जाएगा।

हज़रत जाफ़र के इस वक्तवय से राजा बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहाः ''तुम्हारे पैग़म्बर अल्लाह की ओर से जो कथन लाए हैं उसका कोई भाग पढ़ कर सुनाओ।'' हज़रत जअफर ने सूरह मरयम की आरंभ की आयतें पढ़कर सुनाईं। यह रूकूअ हज़रत मसीह के बारे में है। उसको सुनकर नजाशी की आँख से आँसू निकल पड़े। यहां तक कि रोते–रोते उसकी दाढ़ी भीग गई। उसने कहाः ''यह कथन और वो कथन जो मसीह लेकर आए थे उनकी उतपत्ति का स्रोत एक ही है।'' इसके बाद नजाशी ने कुरैश के प्रतिनिधि से कहा तुम लोग वापस जाओ मैं इन लोगों को कदापि तुम्हें नहीं सौपूँगा।''

मक्का के इन लोगों ने अब भी हार नहीं मानी। अगले दिन वे दोबारा नजाशी के दरबार में गए और उससे कहा कि यह लोग हज़रत ईसा के प्रकरण में बड़ी कठोर बाते कहते हैं। आप उनको बुला कर इस संदर्भ में पूछ–ताछ करें। नजाशी ने दोबारा मुसलमानों को बुलाया और उनसे

प्रश्न किया कि तुम लोग हज़रत ईसा के विषय में क्या कहते हो। हज़रत जाफर ने बताया कि हम वही कहते हैं जो हमारे पैग़म्बर ने हमें बताया है। वो यह कि हज़रत ईसा अल्लाह के बंदे और उसके पैग़म्बर थे। वह ख़ुदा की रूह (संकेत) और उसका कलमा (वचन) थे। नजाशी ने ज़मीन पर से एक तिनका उठाया और कहा ख़ुदा की क़सम तुम ने जो कुछ कहा हज़रत ईसा उससे एक तिनके के बराबर भी ज़्यादा न थे। इस से राजा के दरबारी काफी क्रोधित हो उठे लेकिन राजा ने किसी की परवाह न की। तत्पश्चात उसने मुसलमानों से कहा कि तुम यहां सुख–शान्ति से रहो। तुम को कष्ट देने के लिए सोने का पहाड़ भी मिले तो मैं उसको लेना पसंद नहीं करूँगा। उसने आदेश दिया कि कुरैश के सारे भेंट और उपहार लौटा दिए जाएं। राजदरबार समाप्त हुआ तो मुसलमान प्रसन्नता से बाहर निकले और कुरैश दूत लज्जित और अपमानित होकर।

इसके बाद मुसलमान शांतिपूर्वक हब्शा में रहने लगे। जब मुहम्मद (सल्ल०) की मक्का से मदीना की ओर प्रवास की सूचना मिली तो अधिकांश लोग हब्शा से मदीना चले आए। शेष हज़रत जाफ़र के साथ सात हिजरी में खैबर की विजय के अवसर पर मदीना पहुंचे।

कहा जाता है कि राजा नजाशी ने मुहम्मद (सल्ल०) की पैग़म्बरी की पुष्टि की। और मुसलमानों को साक्षी बना कर कलमा पढ़ा। मुसलमान जब मदीना लौटने लगे तो उसने उनको यात्रा में होने वाला खर्च दिया और कहा कि अपने पैग़म्बर के पास पहुँच कर उनसे कहना कि मेरी मग़फिरत उस (ख़ुदा से क्षमा की दुआ) के लिए दुआ करें। आपको जब यह समाचार मिला तो आप उसी क्षण उठे, वज़ू किया और तीन बार कहा "ऐ अल्लाह तू नजाशी को क्षमा कर दे"।

मुसलमान जब तक हब्शा में रहे अमन से रहे। नजाशी उनकी देख रेख करता रहा। एक बार नजाशी ने मुसलमानों को बुला कर पूछा कि क्या यहां कोई तुम को सताता है? मुसलमानों ने कहाः ''हाँ''। नजाशी

ने आदेश दिया कि जो व्यक्ति किसी मुसलमान को सताए, उससे चार दरहम जुर्माना लेकर उस मुसलमान को दिया जाए। फिर नजाशी ने मुसलमानों से पूछा कि क्या यह काफ़ी है? मुसलमानों ने कहाः ''नहीं,'' उसके बाद नजाशी ने जुर्माने की राशि बढ़ा कर आठ दरहम कर दी और इसकी लोगों में घोषणा करा दी।

मुसलमान, नजाशी के राज्य में उसके शुभ चिंतक बने रहे। उस समय में नजाशी के राज्य पर एक शत्रु ने आक्रमण किया। मुसलमान इस घटना से बहुत दुखी हुए। वे नजाशी के विजय की प्रार्थना करते रहे। जब उनको नजाशी के शत्रु की पराजय का समाचार मिला तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्हों ने अल्लाह का धन्यवाद किया।

## gt jr egEen dk fu"dklu

जब कुरैश को जानकारी हुई कि कुछ मुसलमान मक्का छोड़ कर हब्श चले गए हैं तो जो मुसलमान मक्का में रह गए थे उनपर उनका आक्रोश और अधिक बढ़ गया। मुसलमानों के प्रतिपक्ष का प्रतिनिधित्व अबू जहल कर रहा था। जो मुसलमान मक्का के सम्मानित वर्ग से होता तो वह उस से कहता कि क्या तुम को लज्जा नहीं आती कि तुम ने अपने बाप–दादा के धर्म को छोड़ दिया। यदि मुसलमान व्यापारी होता तो वह उसको आशांकित करता कि अब इस नगर में कोई व्यक्ति तुमसे लेन–देन नहीं करेगा और तुम्हारी देय–राशि का भुगतान भी नहीं करेगा। यदि वह साधारण जनता से होता तो अबू जहल उसको कोड़े मारता और उसका अनादर करने की चेष्टा करता।

कुरैश ने प्रयत्न किया कि हबश का राजा मुसलमानों को उन्हें सौंप दे। परन्तु इसमें उन्हें सफ़लता नहीं मिली। मुसलमानों के साथ कठोर व्यवहार करके धर्म परिवर्तन का प्रयास भी असफल रहा। तो उन्हों ने चाहा कि हज़रत मुहम्मद का वर्ग बनू हाशिम आपको संरक्षण देने से

इंकार कर दे ताकि वे आपका वध कर सकें। परन्तु अरब की गरिमा ने बनू हाशिम को इसकी अनुमति न दी कि कि वो आपको त्याग देने की घोषणा कर दें और कुरैश आपकी निर्मम हत्या कर दें। अन्ततः उन्हों ने 616 ई० में आपके परिवार (बनू हाशिम) को निष्कासित करने का निश्चय किया। उन्होंने काबा की दीवार पर एक एलान (विज्ञप्ति) लगा दी। जैसे कि यह प्रशासन की ओर से अधिसूचना हो। इसमें वर्णित था कि–

1. मक्का के किसी व्यक्ति को यह अनुमति नहीं कि मुसलमान पुरूष या मुसलमान स्त्री से बात–चीत करे।
2. मक्का के किसी व्यक्ति को आज्ञा नहीं कि वह किसी मुसलमान से मुसाफा (मिलने पर हाथ मिलाना) करें।
3. मक्का के किसी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं कि वो मुसलमानों से व्यापार करे।
4. मक्का के प्रत्येक व्यक्ति का मुसलमान पुरूष या मुसलमान स्त्री से विवाह करना निषिद्ध है।
5. किसी व्यक्ति पर अगर किसी मुसलमान का क़र्ज़ (देय–राशि) है तो उसके भुगतान से उसको निर्वित किया जाता है।
6. यह घोषणा पत्र तब तक लागू रहेगा, जब तक मुहम्मद (सल्ल०) अपने धर्म को न छोड़ दे या हाशिम वर्ग उनको संरक्षण देना बन्द कर दे, ताकि कुरैश मुहम्मद का वध कर सकें।

इस लेख के विषय को मनसूर बिन इकरमा ने लिखा और उस पर मोम लगा कपड़ा चढ़ा कर बन्द कर के काबा की भीतरी दीवार पर लगा दिया गया। इस प्रकार 616 ईस० में हज़रत मुहम्मद और उनके साथियों को मक्का से निकल जाने पर विवश कर दिया गया। उस समय भी बनू हाशिम वर्ग ने आपका संरक्षण नहीं छोड़ा। वो भी मुसलमानों के साथ मक्का से निकल गए। उनमें आपके चचा अबू तालिब भी थे जो अन्त तक बुतों की पूजा करते रहे। इन लोगों ने एक घाटी में शरण ली जो शअब अबी तालिब के नाम से प्रसिद्ध थी। आपके वर्ग में अकेला अबूलहब था

जो आपके साथ नहीं निकला।

मक्का के बाहर इन पहाड़ियों में घास तक नहीं थी। पूरे वर्ष वहां एक पक्षी भी दिखाई नहीं पड़ता था। क्योंकि पक्षी वाहां जाते हैं जहां हरियाली और पानी हो। मुसलमान उपरोक्त घोषणा पत्र के अनुसार खाने–पीने की कोई वस्तु मक्का वालों से नहीं ख़रीद सकते थे। शअब अबी तालिब के मार्ग पर कोई क़ाफ़िला भी नहीं गुज़रता था कि मुसलमान उनसे कुछ ख़रीद सकें। मुसलमानों ने वहां भीषण भूख सहन की। बच्चे भूख से व्याकुल होते तो उनके चिल्लाने की आवाज़ पहाड़ियों से टकरा कर दूर दूर तक जाती।

भूख से न मरने का कारण यह हुआ कि प्रति वर्ष चार महीने हराम (लड़ाई से वर्जित महीने) समझे जाते थे। उन दिनों मुसलमान बस्ती में आ–जा सकते थे और आवश्यक वस्तुऐं ख़रीद सकते थे। काबा के दर्शन के लिए आए लोग जो जानवर की कुरबानी (पशु भेंट) करते यह लोग उनकी चमड़ी सुखा लेते और साल के शेष महीनों में उन खालों को उबाल कर खाते। हज़रत ख़दीजा जो किसी समय मक्का की सब से ध नवान महिला थीं, हज़रत मुहम्मद के साथ इसी घाटी में जीवन व्यतीत कर रहीं थीं।

हज़रत मुहम्मद और आपके साथी इसी प्रकार तीन साल तक घाटी में पड़े रहे। इस समय हज़रत ख़दीजा के घर की पूरी संपत्ति केवल एक पतीली और एक कटोरा रह गई। एक दिन कटोरा टूट गया और नया न ख़रीद सकीं, तो उन्होंने धैर्य रखा यहां तक कि एक कारीगर वहां से गुज़रा तो उन्होंने उसको दिया कि वह उसको जोड़ दे। इसी भूख और ग़रीबी की हालत में वे बीमार पड़ गईं और बिना किसी औषधि और चिकित्सा के 619 में उनका देहांत हो गया, तब वो शअब अबी तालिब से अपने घर आ चुकी थीं। उस समय मुसलमानों के पास कफ़न (वह वस्त्र जिसमें मृतक को दफ़न किया जाता है) का कपड़ा भी न था। इस लिए हज़रत ख़दीजा को उनकी चादर में दफन कर दिया गया। उसके कुछ

दिनों बाद आपके चचा अबू तालिब का भी निधन हो गया।

अबू तालिब के भाई अबू लहब को लोगों ने सूचित किया कि तुम्हारा भाई मर रहा है तो वह वहां गया और अबू तालिब से कहा कि प्रतिज्ञा करो कि तुम मुहम्मद के धर्म को स्वीकार नहीं करोगे, और तुम अपने बाप–दादा के धर्म पर मर रहे हो। अबू तालिब ने वचन दिया कि मैं अपने बाप दादा के धर्म पर मर रहा हूँ।

यह निष्कासण केवल शारीरिक उत्पीड़न न था बल्कि उनका उद्योग और संपदा भी पूरी तरह से नष्ट हो गया। हज़रत अबू बक्र और दूसरे मुसलमान व्यापारियों का सारा व्यापार ठप हो गया। और जमा संपत्ति भी समाप्त हो गई।

इतिहास बताता है कि उस समय भी मक्का में कुछ लोग थे जिनकी चेतना इस अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाती थी। उदाहरणतः एक घटना यह है कि हज़रत ख़दीजा के भतीजे हकीम बिन हज़ाम एक दिन अपनी फूफ़ी के लिए कुछ अनाज लेकर अपने दास के साथ शअब अबी तालिब की ओर गए। मार्ग में अबू जहल मिल गया और रास्ता रोक कर हकीम से लड़ने लगा। संयोगवश अबुल बख़तरी उस ओर आ गया। उसने अबू जहल से कहा यह व्यक्ति अपनी फूफ़ी के लिए कुछ ले जा रहा है तो तुम क्यों उसे रोकते हो। अबू जहल अबुल बख़तरी से भी लड़ पड़ा। अबुलबख़तरी गुस्सैले किस्म का आदमी था। उसने ऊँट की एक हड्डी उठा कर अबू जहल के सर पर दे मारी।

इस प्रकार और भी कुछ लोग थे जिनकी अंतरात्मा उनको इन अत्याचारों के विरूद्ध धिक्कारती थी। हिशाम बिन अम्र आमरी ने इस संबंध में सब से पहले विरोध प्रकट करने का साहस किया। उसने अपने कुछ साथियों को एक मत किया और एक दिन उनको लेकर काबा पहुँचा जहाँ कुरैश के सरदार पहले से मौजूद थे। अबदुल–मुत्तलिब के नवासे जुहैर जो हेशाम के साथ आए थे, उन्होंने बात–चीत को आरंभ करते हुए

मक्का के सरदारों से कहाः

'ऐ मक्का वालो, यह कैसा न्याय है कि हम लोग खाएं–पिएं और खरीदो फरोख़्त (मोल लेना–व बेचना) करें और हमारे संबंधी बनी–हाशिम और बनी–मुत्तलिब भूख से मरें। ख़ुदा की क़सम अब मैं इस संधि को फाड़े बिना नहीं रहूँगा।'

'तुम इस संधि को हाथ भी नहीं लगा सकते। तुम झूठे हो' अबू जहल ने चिल्ला कर कहा।

झूठे तुम हो, ज़मआ बिन असवद ने कहा 'जब यह संधि तैयार हो रही थी तब भी तुमने हमारी सहमति से इसको नहीं लिखा था।' अबुल बखतरी और मुतइम बिन अदी ने भी इसका समर्थन किया। इस प्रकार वो संधि जिसको समझा जाता था कि सर्वसम्मति से बनी है, मक्का निवासियों के बीच विवादित बन गई। इसी बीच एक और घटना घटी जिस ने दोनों पक्षों के बीच कलह की स्थिति को समाप्त कर दिया। यह एक भुगोलिक सत्य है कि गरम देशों में दीमक पाई जाती है जो प्राय लकड़ी और काग़ज़ को खा जाती है। इस लिए तीन वर्ष बीते थे कि इस घोषणा पत्र को दीमक लग गई और उस संधि का मूल भाग ख़त्म हो गया। शेष अल्लाह का नाम बाक़ी रह गया, जिस से यथाविधि लेख का आरंभ किया गया था। इस घटना की जानकारी के बाद सभी भयभीत हो गए और सब इस पर सहमत हो गए कि बनी हाशिम के बहिष्कार को समाप्त कर दिया जाए। नजात (मुक्ति) की यह घटना पैग़म्बरी के दसवें वर्ष के उपरांत पेश आई। मुसलमान जब घाटी से लंबे समय की सख़्त भूख सहन करने के बाद लौटे तो वे अत्यधिक निर्बल हो चुके थे, उनके मुख पर हड्डियां स्पष्ट दिखाई दे रही थीं और शरीर की त्वचा को धूप ने काला कर दिया था। औपचारिक रूप से यह निष्कासन केवल बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब के विरूद्ध था परन्तु परिणाम स्वरूप दूसरे मुसलमानों को भी कष्ट सहन करना पड़ा जो कि प्रथिकरण के अंत के बाद समाप्त हो गया। तीन साल के पश्चात मुसलमानों ने घाटी से निकल

कर मक्का में प्रवेश किया।

तीन वर्ष के इस निर्वासन में मुसलमानों की आर्थिक स्थिति पूर्णतयः बर्बाद हो गई थी। हज़रत अबू बक्र के बारे में कहा जाता था कि उनके पास क़ारून के बराबर धन है। परन्तु उनके पास केवल पाँच हज़ार दरहम शेष रह गए थे।

अबू लहब पारिवारिक लज्जा के कारण हज़रत मुहम्मद के निष्कासन को समाप्त करने पर सहमत तो हो गया परन्तु उसकी इस्लाम दुश्मनी उसको आप के ख़िलाफ़ सदा क्रोधित रखती थी। उसने निश्चय किया कि बनू हाशिम वर्ग से आपको बाहर कर दिया जाए। उसने पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार, एक दिन अपनी बिरादरी के लोगों के लिए खाने का आयोजन किया। लोग एकत्र हो गए तो अबू लहब ने हज़रत मुहम्मद से प्रश्न कियाः 'मैं अपने पूर्वज अब्दुल मुत्तलिब के बारे में आपके विचार जानना चाहता हूँ कि वे जन्नत (स्वर्ग) में होंगे या नर्क में। आपने कहा– अनेकेश्वरवादी चाहे पैग़म्बर के संबंधी ही क्यों न हों, वे दोज़ख़ से नहीं बच सकते। फिर अबू लहब ने कहा मेरे भाई अबू तालिब बख्शे जाएंगे या नहीं। आपने कहा नहीं। अबू लहब ने इसी प्रकार बिरादरी के अलग अलग पूर्वजों के नाम लेकर पूछा। आप ने हर एक के बारे में कहा कि मुश्रिकों की बख़्शिश (छमा) नहीं। यह ख़ुदा का अटल नियम है, इसमें कोई अपवाद नहीं।

प्राचीन अरब में पूर्वजों की बड़ी महत्ता थी। अब तक आप ने एक नया धर्म तो अवश्य पेश किया था, परन्तु आपने पूर्वजों के विषय में इतना स्पष्ट विवरण नहीं दिया था। बिरादरी के लोग यह सुनकर आवाक रह गए। अबू लहब ने बिरादरी के मुखिया की हैसियत से प्रश्न किया कि क्या मुझे यह अधिकार है कि मुहम्मद को बिरादरी से बाहर कर दूँ। लोगों ने पुष्टि की। क्योंकि बिरादरी की परम्परा के अनुसार, आप इसके दोषी हो चुके थे। अबू लहब ने कुछ दिन के बाद आप को बिरादरी से बाहर

निकालने की घोषणा कर दी।

मक्का में जो व्यक्ति अपने क़बीले से बाहर कर दिया जाता तो हर कोई उसके लिए स्वतंत्र होता, चाहे उसका वध करे या उसे दास बना ले। बिरादरी से निष्कासन के उपरांत आप पूरी तरह अकेले हो गए। इस प्रकार अबू लहब ने आपको रेगिस्तान की अन–उपजाऊ धर्ती के सुपुर्द कर दिया। यह घटना उस समय घटी जब वे दोनों इन्सान आपके पास से जा चुके थे जो आकाश के नीचे आपके प्रत्यक्ष रूप से सहायक थे– ख़दीजा और अबू तालिब।

अब आपके शत्रु आपको बिना किसी क़िसास (खून का बदला लेने का नियम) के भय के आप का वध कर सकते थे। उस समय बनू ख़ीफा वर्ग के कुछ लोग उमरा करने  मक्का आए हुए थे। कुरैश के एक व्यक्ति ने कुछ राशि देकर उनमें से एक व्यक्ति को हज़रत मुहम्मद का वद्ध करने के लिए नियुक्त किया। आपको इसकी जानकारी मिली और आप रात्रि के समय हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को लेकर मक्का से तायफ़ की ओर चल पड़े।

तायफ़ मक्का के दक्षिण में स्थित है। समुद्र तल से एक हज़ार फीट ऊँचा हरा–भरा और सरसब्ज़। इसलिए मक्का के अधिकांश धनी लोगों ने वहां अपनी वाटिका और घर बना रखा था। क्योंकि तायफ़ के लोग सुखसंपन्न थे इसलिए उनको साहित्य और कला के लिए भी समय मिल जाता था। उत्तरी अरब का मशहूर वैद्य हारिस बिन किलदा तायफ़ में ही रहता था। उसने ईरानियों से वैद्य विद्या सीखी थी। उस समय का सुप्रसिद्ध अरब ज्योतिषी अम्र बिन उमय्या का भी वहीं पर निवास था। तायफ का अर्थ है दीवार। यह अरब का नगर दीवारों से घिरा था, इसलिए इसको तायफ़ कहते थे।

10 नबवी (पैग़म्बरी का दसवां वर्ष) को इस्लाम के इतिहास में आमुल–हुज़न (ग़म का साल) कहा जाता है। क्योंकि शअबे अबी तालिब

से निकलने के पश्चात उसी वर्ष आपके चचा अबू तालिब और आपकी पत्नी ख़दीजा का निधन हो गया। दोनों मृत्यु के बीच लगभग एक सप्ताह का अंतर था।

प्राचीन मक्का में अबू तालिब आपके सबसे बड़े हिमायती और अभिभावक थे। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक विरोधियों के विरूद्ध अपका बचाव किया। यहां तक कि निर्वासन के समय भी आप के साथ घाटी में चले गए। यद्यपि उन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया।

जब अबू तालिब की मृत्यु का समय आया तो मुहम्मद (सल्ल०) ने उनके निकट जाकर कहाः ''ऐ चचा, आप एक बार ला इलाह ईल्लल्लाह कह दीजिए ताकि अल्लाह के आगे मैं आपकी सिफ़ारिश कर सकूँ।'' अबू जहल और अबदुल्लाह बिन उमय्या पास ही बैठे थे, कहा कि ऐ अबू तालिब क्या तुम अबदुल मुत्लिब की मिल्लत (धर्म) को छोड़ रहे हो। इस तरह अबु तालिब ने ला ईलाहा इल्लल्लाह नहीं कहा। अंतिम शब्द जो उनकी ज़बान से निकला वह यह था। "अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर मरता हूँ"।

## vc rkfyc d fu/ku d i'pkr

अरबों की कबीलाई परम्परा के अनुसार, बनू हाशिम के लिए आवश्यक था कि वो अबू तालिब के निधन के पश्चात क़बीले के लिए किसी दूसरे मुखिया का चयन करें। प्रचलित रिवाज के अंतर्गत यह पद अबू तालिब के भाई अबू लहब को दिया गया। अबू लहब का हाशिम वर्ग के मुखिया बन जाने से हज़रत मुहम्मद की समस्याओं ने और भी विकराल रूप ध ाारण कर लिया। अब उसने हज़रत मुहम्मद को बिरादरी से निष्कासित करने की योजना बनाई, जिसके बाद व्यक्ति निसहाय हो जाता है।

मक्का वालों की इस से पूर्व भी यही मांग थी। वे चाहते थे कि बनू हाशिम हज़रत मुहम्मद को क़बीले से बाहर कर दें ताकि आपका वध किया जा सके। परन्तु अबू तालिब जो कि इस से पूर्व बिरादरी के मुखिया थे उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया और अपने भतीजे को लेकर घाटी में चले

गए, जहां कष्ट सहते हुए उनका देहांत हो गया। यह बात अत्यंत गंभीर थी क्योंकि अरब में प्रत्येक व्यक्ति क़बीले के एक अंग के समान होता था। क़बीले से कट जाने के पश्चात उसका कोई अस्तित्व नहीं होता था।

अबू लहब ने आप को बनू हाशिम वर्ग से निष्कासित कर दिया। यह ऐसा है जैसे कि उसने जीवन निर्वाहण योग्य समस्त साधनों से वंचित कर दिया, आप अपनी बिरादरी से कट कर पूर्णतया अकेले हो गए। इस से पूर्व जब भी आपको कोई आघात पहुंचता तो हज़रत ख़दीजा आपके घाव धोतीं और आपकी सेवा करतीं। आपके चचा अबू तालिब आपको सांत्वना देते। परन्तु अब इस संसार में न तो खदीजा थीं ओर न अबू तालिब।

अब आपने यह किया कि हज के अवसर पर विभिन्न वर्गों के लोग जो मक्का आते उन में से एक एक के पड़ाव पर जाकर उनसे मिलते और उन से कहते कि मुझे अपनी शरण में ले लो ताकि मैं अपना कार्य कर सकूँ।

आप बनू आमिर वर्ग के पास गए तो उन्होंने आप पर पत्थर फेंके। बनू हारिस के पास गए तो उसने अबू लहब के भय के कारण आपको अपनी शरण में लेने से इन्कार कर दिया। उकाज़ के मेले में क़बीला बनू किन्दा के पास गए और उससे कहा "मैं तुम को एक ख़ुदा की ओर बुलाता हूँ, और इस बात की ओर कि जिस प्रकार तुम अपनी जानों की रक्षा करते हो उसी प्रकार मेरी रक्षा करो"। परन्तु उन्होंने आपकी बात पर ध्यान नहीं दिया। एक और समुदाय ने आपके निवेदन पर कहा, "हम न तो तुमको अपमानित करेंगे और न तुम्हारा अनुकरण करेंगे"। विभिन्न परिवारों में से कोई भी परिवार आपको शरण देने पर तैयार नहीं हुआ।

तायफ मक्का का निकटवर्ती क्षेत्र था, वे लोग ब्याज़ का कारोबार भी करते थे। कहा जाता है कि मूल राशि पर पूरा पूरा ब्याज़ लेते थे।

तायफ़ में अबद–या–लैल, मसऊद और हबीब उत्कर्ष रूप से प्रतिष्ठित लोगों में से थे। और तीनों भाई थे। हज़रत मुहम्मद ने सोचा

यदि इन्होंने मेरी बात मान ली तो सारी बस्ती मेरी बात मान लेगी। आप सर्व प्रथम उन्हीं के पास गए। परन्तु तीनों ने बहुत ही हतोत्साहित उत्तर दिए। अबद–या–लैल अबदुल मुत्तलिब का संबंधी भी था।

"खुदा ने काबा को कलंकित करने के लिए तुम को ही नबी बना कर भेजा है" एक ने कहा। "क्या अल्लाह को तुम्हारे अतिरिक्त कोई और पैगम्बर बनाने के लिए नहीं मिला था", दूसरा बोला। "यदि तुम पैगम्बरी के दावे में सच्चे हो तो तुम से बात करना गुस्ताखी है और यदि तुम झूठे हो तो तुम से बात करना हमारी प्रतिष्ठा और मान मर्यादा के विरूद्ध है", तीसरे ने कहा।

हज़रत मुहम्मद तायफ से निराश होकर वापस हुए तो उन लोगों ने बस्ती के लड़कों को आपके पीछे लगा दिया। वे आपको गालियां देते और पत्थर मारते। उस समय आपके साथ केवल ज़ैद बिन हारिसा थे। वो पत्थरों की बौछार को अपनी–चादर पर लेते फिर भी आपका शरीर खून से लथपथ हो गया, यहां तक कि खून बह कर आपके जूतों में भर गया। हज़रत मुहम्मद जब ज़ख़्मों (घाव) से निढाल हो कर बैठ जाते तो वो आपकी बांह पकड़ कर उठा देते और जब दोबारा चलने लगते तो फिर गालियों और पत्थरों की बारिश करते। तायफ़ के सरदारों का आपके प्रति इतना उग्र रूख़ अपनाने का दुस्साहस इस लिए हुआ कि उनको यह ज्ञात हो चुका था कि बनू हाशिम परिवार ने आपको अपनी बिरादरी से बाहर कर दिया है।

यहां तक कि इसी अवस्था में शाम हो गई और तायफ़ के लड़के वापस चले गए। सामने उत्बा और शैबा दो भाईयों का अंगूरों का बाग़ था। यह मक्का के रहने वाले थे। हज़रत मुहम्मद ने इस बाग़ में पनाह ली। उस वक़्त दुआ करते हुए आपकी जुबान से जो शब्द निकले वो आपकी उस समय की स्थिति की पूरी व्याख्या करते हैं। आपने कहाः "ऐ अल्लाह, मैं तुझी से अपनी असहायता और बेतदबीरी और लोगों की

निगाहों में अपने अपमान की शिकायत करता हूँ।"

बाग़ वालों को आपकी हालत पर दया आ गई और उन्होंने अपने एक दास अदास के हाथ अंगूर के कुछ गुच्छे एक बरतन में रख कर आपके पास भेजे। आपने बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम कह कर अंगूर उठाया। गुलाम नसरानी को "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर खाने का यह तरीक़ा उस इलाक़े की रीति के विरूद्ध लगा। उसने आश्चर्य से पूछा कि यह तरीक़ा आपने कहां से सीखा। आपने उत्तर में गुलाम से प्रश्न किया कि तुम कहां के रहने वाले हो, उसने नेनवा का नाम लिया। हज़रत मुहम्मद ने कहा, "उसी नेन्वा के जहां अल्लाह के श्रेष्ठ बन्दे यूनुस बिन मत्ता पैग़म्बर बना कर भेजे गए थे। गुलाम को अब और भी अधिक आश्चर्य हुआ "आप यूनुस बिन मत्ता को जानते हैं", उसने कहा। आपने उत्तर दिया "हाँ वह मेरे भाई हैं, वह भी नबी थे, मैं भी नबी हूँ", गुलाम यह सुनकर आपके हाथ और पैरों को चूमने लगा और उसी समय इस्लाम का अनुसरण कर लिया।

हज़रत मुहम्मद तायफ़ से वापस आकर हिरा पहाड़ की गुफा में ठहरे। मक्का में दोबारा प्रवेश करके शांति के साथ रहने के लिए आप को जातीय परम्परा के अनुसार किसी के संरक्षण की आवश्यक्ता थी क्योंकि आप अपने समुदाय से कट चुके थे। आपने अख़नस बिन शुरैक़ और सुहैल बिन अम्र के पास संदेश भेजा कि वह आपको अपनी शरण में ले ले, परन्तु वे तैयार न हुए। अन्ततः आपका ध्यान मुत्इम बिन अदी पर गया। मुत्इम बिन अदी ने इस से पूर्व भी कई अवसरों पर आपकी सहायता की थी और नबी के परिवार के निर्वासन संबंध्ति समझौते को निरस्त कराने में उनका बड़ा योगदान था। हज़रत मुहम्मद ने मुत्इम को अपनी वापसी की सूचना दी और संदेश भेजा कि वह आपको अपनी शरण में ले ले। मुत्इम ने तुरन्त उसको स्वीकार कर लिया और अपने छ बेटों को आदेश दिया कि हथियार बंद होकर जाओ और मुहम्मद को वापस ले आओ। मक्का में आकर सर्वप्रथम आपने काबा का तवाफ़ किया। मुत्इम

ने घोषणा की किः

"मैंने मुहम्मद को संरक्षण दिया है। सावधान! कोई उनको आघात न पहुँचाए" मुत्इम के इस संरक्षण ने आपको अवसर दिया कि दोबारा मक्का में रह कर पैग़म्बरी का काम कर सकें। मुत्इम, जंगे बदर से पूर्व इस्लाम को स्वीकार किए बिना मर गए। हस्सान बिन साबित ने उनका मर्सिया लिखा। जंगे बदर के उपरांत जब कुरैश के लोग बंधक होकर आपके सम्मुख लाए गए तो आपने कहाः ''यदि आज मुत्इम बिन अदी जीवित होते और वह इन अपराधियों की सिफारिश करते तो मैं उन्हें छोड़ देता।'' मक्का वापस आने के बाद हज़रत मुहम्मद ने उन्हीं दिनों सौदा से विवाह कर लिया। सौदा अपने पति के साथ मक्का छोड़ कर हब्शा गई थीं। परन्तु उनके पति ने वहां पहुंच कर ईसाई धर्म अपना लिया। सौदा इस कारण उनसे तलाक़ लेकर मक्का वापस लौट आई। यह घटना पैग़म्बरी के दसवें साल के बाद पेश आई।

कुछ समय बाद अबू बक्र (रज़ि०) ने पैगम्बरे इस्लाम से निवेदन किया कि वह उनकी पुत्री, आयशा से विवाह कर लें। आयशा की आयु उस समय केवल सात वर्ष थी। हज़रत मुहम्मद ने अल्प आयु कहकर टाल दिया। उसके बाद अबू बक्र के आग्रह पर 620 ई० में इस शर्त पर निकाह (विवाह) हो गया कि विदाई बाद को होगी। आयशा सब से पहली महिला हैं जो मुसलमान मां और मुसलमान बाप से पैदा हुईं।

तायफ का अनुभव हज़रत मुहम्मद के जीवन काल में सबसे ज़्यादा कठोर अनुभव था। हज़रत मुहम्मद की पत्नी आयशा कहती हैं कि मैंने एक बार आप से कहाः ''ऐ खुदा के रसूल, क्या आप पर जंग उहद से भी ज़्यादा कठोर दिन गुज़रा है?'' आप ने कहा कि हां। तुम्हारी क़ौम से मुझको बहुत चोट पहुंची है। परन्तु मेरे ऊपर सबसे कठोर दिन वह था जब मैंने अपना परिचय तायफ के अब्द–या–लैल के बेटे से कराया था। उसने मुझको बहुत बुरा उत्तर दिया।

वहां से मैं बहुत दुखी और आहत वापस हुआ। जब मैं क़र्न–सालब के स्थान पर पहुंचा तो मुझको कुछ आराम मिला। उस समय मैं ने अपना सिर उठाया तो देखा कि एक बादल मुझपर छाया किए हुए है और उसके अन्दर ख़ुदा के फरिश्ते (angel) जिब्राईल थे। जिब्राईल ने वहीं से मुझको आवाज़ दी कि ऐ मुहम्मद, आपकी क़ौम ने आपको जो उत्तर दिया है वो अल्लाह ने सुन लिया है। अब अल्लाह ने आपके पास मलकुल–जिबाल (पहाड़ों का फरिश्ता) को भेजा है। आप उसको जो चाहें आदेश दें, वह आपकी आज्ञा का पालन करेगा।

उसके बाद पहाड़ों का फरिश्ता मेरे सामने आया और मुझको सलाम किया फिर कहा कि ऐ मुहम्मद मैं मलकुल जिबाल हूँ, यह सारे पहाड़ मेरे वश में हैं। आप जो चाहे मुझको आदेश दें। यदि आप आदेश दें तो मैं इन दोनों पहाड़ों को आपस में मिला दूँ और तायफ के सारे लोग इसमें पिस कर रह जाएं। हज़रत मुहम्मद ने कहाः ''नहीं। मैं आशा करता हूँ कि अल्लाह उनके वंश में ऐसे लोग पैदा करे जो उनके जैसे न हों वह एक अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी को साझेदार न ठहराएं।''

तायफ की यह यात्रा हिजरत (प्रवास) से तीन वर्ष पूर्व पेश आई। वहां से लौटते हुए जब आप नख़ला के स्थान पर पहुंचे तो वहां रूक गए। उस समय ज़ैद बिन हारिसा आपके साथ थे। यह पूरी यात्रा आप ने पैदल की थी।

इसी अवसर पर रात को यह घटना घटी कि आप नमाज़ में कुरआन पढ़ रहे थे कि कुछ जिन्नात वहां से गुजरे।, उन्हों ने कुरआन को सुना तो वो प्रभावित हो गए और उस पर ईमान ले आए।

यह जिन्नात लौट कर अपनी क़ौम में पहुंचे तो उन्हों ने अपनी क़ौम में इस्लाम धर्म का प्रचार करना आरंभ कर दिया। यह घटना मुहम्मद (सल्ल०) की जानकारी के बिना घटी। अल्लाह ने कुरआन के द्वारा आपको इसकी सूचना दी। कुरान में कहा गयाः ''और जब हम जिन्नात के एक

दल को तुम्हारी ओर ले आए। वे कुरान सुनने लगे। जब वो इसके समीप आए तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब कुरआन पढ़ा जा चुका तो वो डराने वाले बन कर अपने समुदाय की ओर लौट आए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारे लोगो, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन भविष्यवाणियों की पुष्टि करती है जो इसके पहले से मौजूद है। वो सत्य हैं और सीधे रास्ते का मार्गदर्शन करती हैं। ऐ हमारी क़ौम अल्लाह की ओर बुलाने वाले का संदेश सुनो और उसपर ईमान लाओ। अल्लाह तुम्हारे गुनाहों (पाप) को क्षमा कर देगा और तुमको दर्दनाक कष्ट से बचा लेगा। और जो व्यक्ति अल्लाह की ओर बुलाने वाले को लब्बैक (मैं उपस्थित हूँ) नहीं कहेगा वह ज़मीन में नहीं ठहर सकता। और अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई सहायक नहीं होगा। ऐसे लोग पूर्ण रूप से पथभ्रष्ट हैं।'' (अल–अहक़ाफ़ 32–29)

यह एक शुभ समाचार था, जो अल्लाह ने ठीक उस समय अपने पैग़म्बर को पहुँचाया। इसमें बताया गया था कि पृथ्वी पर निवास करने वाला एक दल यदि कुरआन की भर्त्सना कर रहा है तो ठीक उसी समय एक दल उसको इतने प्रभावशाली रुप से ग्रहण कर रहा है कि उसको स्वीकारते ही वो इस धर्म का प्रचारक बन गया।

## enhu e bLyke dk vkjHk

इस्लाम से पूर्व मक्का और उसके निकट मेले लगते थ। ज़ीक़ादा (ग्यारहवां इस्लामी महीना) के आरंभ में ओक़ाज़ का प्रसिद्ध मेला लगता था। लोग यहां से खाली होकर मजन्ना के मेले में जाते थे जो तीन सप्ताह तक चलता था। उसके पश्चात ज़ुलमजाज़ का मेला था जो हज के अवसर पर होता था। इन मेलों का विशेष उद्देश्य व्यापार होता था। इसी के साथ इन अवसरों पर कवि सम्मेलन और पहलवानी की प्रतियोगिता होती और मदिरा पान की भी व्यवस्था होती। इन मेलों में लोग दूर–दूर से आते थे।

मुहम्मद (सल्ल०) इन मेलों का भ्रमण करते और आप प्रत्येक

समुदाय के पास जाते और उनको इस्लाम का संदेश देते। उस समय की घटना मुहम्मद (सल्ल०) के एक साथी बताते हैं, उस वक़्त तक उन्होंने इस्लाम ग्रहण नहीं किया था। उन्होंने कहा, मैं ज़ुलमजाज़ के बाज़ार में था कि मैं ने देखा कि एक युवक दो लाल यमनी चादर में लिपटा हुआ गुज़र रहा है। वह ऊँची आवाज़ में कह रहा था, ''ऐ लोगो ला इलाह इल्लल्लाह कहो, कामयाब होगे।'' लोग उसकी बातें सुनने के लिए उसके चारों ओर जमा हो रहे हैं। फिर मैंने देखा कि एक आदमी उनके पीछे चल रहा है। उसने आपको पत्थर मार–मार कर आपकी पिंडलियों (टांगों) को खून से लथ–पथ कर दिया था और वह कह रहा था "ऐ लोगो यह झूठा है इसकी बात न मानो"। मैं ने पूछा यह कौन है। लोगों ने बताया कि यह मुहम्मद नाम का हाशमी वर्ग का एक युवक है जो अपने को रसूल बताता है। और उसके पीछे उसका चचा अबदुल उज़्ज़ा (अबू लहब) है।

आप इस प्रकार मेलों में जाकर प्रचार करते थे। एक बार मिना के निकट क़बीला ख़ज़रज के कुछ लोगों ने आप से भेंट की। आप ने उनको भी इस्लाम की ओर बुलाया। मक्का के विपरीत मदीना वालों ने आपकी बात को ध्यानपूर्वक सुना और उनके कुछ लोगों ने उसी समय इस्लाम ग्रहण कर लिया।

मदीना उस समय यस्रिब कहलाता था। और मक्का के उत्तर दिशा में चार सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित था। यस्रिब के निकटवर्ती क्षेत्रों में कई यहूदी परिवार आबाद थे। ईसा से 6 सौ वर्ष पूर्व जब इराक़ के राजा बख़्त नसर ने फलस्तीन पर आक्रमण किया और बैतुल मुक़द्दस को ध्वस्त करके यहूदियों को उनके देश से निकाल दिया तो उनके कुछ समुदाय अरब की ओर भाग आए और खैबर, फ़िदक, और यस्रिब में आकर बस गए। इसी प्रकार कहा जाता है कि जब मसीह से 120 वर्ष पूर्व प्रसिद्ध सैलाब (सैल एरिम) आया और वहां के लोग दूसरे देशों में जाकर बस गए तो उन्हीं में से दो भाई औस और ख़ज़रज थे, जो अपने परिवार

सहित यस्रिब में आकर बस गए। यहां श्रम और कृषि उनकी जीविका का साधन थी। उनकी संख्या बढ़ी यहां तक कि औस और ख़ज़रज दो बड़े समुदाय बन गए।

यहूदियों के लिए औस और खज़रज का परिवार श्रमिक उपलब्धि का साधन था। इसके अतिरिक्त उनका सूदी व्यापार भी इन्हीं लोगों के बीच फैला था। यहूदी आर्थिक रूप से संपन्न होते हुए भी शारीरिक रूप से कमज़ोर थे। इसी कारणवश जब भी कभी झगड़ा होता तो यहूदी उनको धमकाते कि "हमारे धार्मिक ग्रंथों के अनुसार एक बहुत बड़ा नबी पैदा होने वाला है। हम उनके साथ होकर तुमसे लड़ेंगे और तुमको आद और इरम की तरह मिटा देंगे।"

यह चर्चा थी जब पैग़म्बरी के ग्यारहवें वर्ष औस और ख़ज़रज के लोगों को मुहम्मद (सल्ल०) का संदेश मिला। यह लोग उमरा के लिए मदीना से मक्का आए थे। जब उन्होंने आपको देखा और आपकी बातें सुनीं तो उनको वो सब स्मरण हो गया जो उन्होंने अपने पड़ोसी यहूदियों से सुन रखा था,। एक ने दूसरे से कहाः

"यह तो वही नबी प्रतीत होते हैं जिनकी चर्चा यहूदी हम से करते थे।"

इसलिए यस्रिब के 6 व्यक्तियों ने उसी समय इस्लाम का अनुसरण कर लिया। अगले वर्ष 621 ई० में यस्रिब के लोग काबा दर्शन के लिए आए तो वहां के मुसलमानों की संख्या बारह हो चुकी थी। दस व्यक्ति एक वर्ग के थे दो व्यक्ति दूसरे वर्ग के। इन लोगों ने मक्का पहुँचकर एक घाटी में हज़रत मुहम्मद से भेंट की और मदीने में इस्लामी प्रचार के संदर्भ में विचार–विमर्श किया। इस घटना को इस्लामी इतिहास में बैअते ऊला (प्रथम आज्ञाकारिता की शपथ) कहा जाता है। इन लोगों ने हज़रत मुहम्मद के हाथ पर इन शर्तों पर शपथ लीः

1. एक खुदा के अतिरिक्त किसी की इबादत (पूजा) न करेंगे।

2. किसी का धन न चुराएंगे।
3. ज़िना (बलातकार) न करेंगे।
4. अपनी संतानों का वद्ध नहीं करेंगे।
5. किसी पर झूठा दोष नहीं लगाएंगे।
6. भले कामों में पैग़म्बर की अवहेलना नहीं करेंगे।

यस्रिब के यह मुसलमान अपने देश लौटने लगे तो हज़रत मुहम्मद ने उनकी प्रचार संबंधी और शैक्षिक सहायता के लिए अपने दो आदमी को उनके साथ कर दिया। यह अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम और मुस्अब बिन उमैर थे। यह दोनों यस्रिब पहुंच कर असद बिन जुरारह के निवास स्थान पर ठहरे जो एक वर्ष पूर्व इस्लाम ला चुके थे। मदीने का वातावरण इस्लाम के लिए अनुकूल सिद्ध हुआ। क्योंकि यहूद के पड़ोस के कारण वह "आने वाले पैग़म्बर" से परिचित हो चुके थे।

जब उन्होंने देखा कि आने वाला पैग़म्बर यहूदी और ईसाइयों में नहीं बल्कि उनकी अपनी क़ौम (अरब) में पैदा हुआ है। तो वे और भी अधिक प्रसन्न हुए। उन्होनें कहा अब तक यहूदियों की तुलना में हम इस लिए कम थे कि उनके पास आसमानी किताब है और हमारे पास नहीं है। अब हम अरबी पैग़म्बर को मान कर, उस आसमानी किताब के मालिक बन सकते हैं। यस्रिब में इस्लाम को बहुत अधिक मान्यता प्राप्त हुई। अब्दुल्लाह बिन उम्मे–मक्तूम और मुसअब बिन उमैर एक ओर मुसलमानों को इस्लामी आदेशों की शिक्षा देते, दूसरी ओर बाक़ी लोगों के बीच इस्लाम का प्रचार करते। इस प्रचार का तरीक़ा अधिकतर यह होता कि वो लोगों को थोड़ा–थोड़ा कुरआन पढ़ कर सुनाते। कुरआन में अरबी भाषा जानने वाले पर अत्यधिक प्रभाव छोड़ने की योग्यता है। यस्रिब के एक सरदार उसैद बिन हुज़ैर थे, उनको यह प्रचारक गतिविधियां पसन्द नहीं आईं। एक दिन वह तलवार लेकर उनके पास पहुँचे और कहने लगे "तुम लोग हमारे बच्चों और हमारी स्त्रियों को क्यों बहकाते हो, तुम यहां

से चले जाओ अन्यथा ठीक नहीं होगा।"

"हम जो कुछ कहते हैं आप भी उसे सुनें। यदि पसन्द आए तो मानें नहीं तो न मानें" मुसअब बिन उमैर ने कहा।

उसैद बिन हुज़ैर सुनने के लिए तैयार हो गए तो मुसअब बिन उमैर ने कुरआन का कुछ भाग पढ़ना शुरू किया। उसैद उनको सुन कर पुकार उठे यह कथन कितना उत्तम है और उसी वक़्त इस्लाम को अपना लिया।

इसी प्रकार सअद बिन मुआज़ यस्रिब के सम्मानित व्यक्तियों में से थे। उनको जब सूचना मिली कि उसैद बिन हुज़ैर ने इस्लाम का अनुसरण कर लिया है तो वह क्रोधित अवस्था में मुसअब बिन उमैर के पास पहुंचे। मुसअब ने उनसे भी कुरआन सुनने का निवेदन किया और उसके बाद कुरआन का कुछ भाग पढ़ कर सुनाया। साद उस से प्रभावित हो गए और उसी समय वो इस्लाम के अनुयायी बन गए। उनकी जाति बनी अश्हल भी अपने सरदार का साथ देते हुए उसी दिन इस्लाम को मानने वाली बन गई। इस प्रकार 621 के अन्त तक यहूदियों के अतिरिक्त यस्रिब की अधिकांश जन्संख्या मुसलमान हो गई थी।

यस्रिब में प्रचार आरंभ होने के तीन वर्ष बाद 622 में जब हज का अवसर आया तो मदीना के 75 मुसलमान पैग़म्बर इस्लाम से भेंट करने और उनसे परामर्श करने के लिए मक्का आए, उनमें दो महिलाएं भी थीं। यह लोग अपने देश के लोगों के साथ आए जो काबा दर्शन के लिए आ रहे थे और उन्हीं के साथ मिना में ठहरे और पैग़म्बर इस्लाम को गुप्त संदेश दिया था। पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रात्रि एक बजे उक़बा नामक घाटी में आप ने उनसे भेंट की। यह घटना इस्लामी इतिहास में बैअत–अक़बा सानिया (दूसरी आज्ञाकारिता की शपथ) के नाम से विख्यात है।

यस्रिब के मुसलमानों ने इस अवसर पर स्थानीय समस्याओं पर भी विचार–विमर्श किया। उन्होंने बताया कि यस्रिब के समुदायों में आज कल

एक राजा के चयन के प्रश्न पर मतभेद उत्पन्न हो गया है। यद्यपि एक सुनार ने यस्रिब के एक सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैय के सिर का माप लिया है ताकि वह उसके लिए ताज बनाए। परन्तु यस्रिब के अधिकतर सरदार उसके राजा बनाए जाने पर सहमत नहीं। उन्होंने बताया कि इन परिस्थितियों में जबकि यस्रिब वासियों की उचित संख्या 'मुसलमान' हो चुकी है। यदि आप देश छोड़ कर यस्रिब चेलें तो वहां के लोग राजा की अपेक्षा एक पैग़म्बर के चयन पर सहमत हो जाएंगे। क्योंकि आप न केवल पैग़म्बर हैं बल्कि कुरैश वर्ग से हैं और आपके पिता यस्रिब के पास दफ़न हैं।

यह एक संवेदनशील प्रश्न था, क्योंकि हज़रत मुहम्मद इतनी विकट परिस्थितियों के उपरांत भी कुरैश के एक सदस्य थे। मक्का छोड़ कर यस्रिब जाना कुरैश से सदा के लिए संबंध तोड़ लेना था। जातीय व्यवस्था में अपनी जाति से कटना, जैसे कि अपने साथी और मददगार से और अपनी जीविका से कट जाने के जैसा था। हज़रत मुहम्मद ने यस्रिब के लोगों से कहा कि "क्या आप लोग मुझ से बैअत–निसा करने को तैयार हैं। बैअत–निसा का अर्थ यह था कि इस बात का वचन दिया जाए वो बैअत (शपथ) वाले की सुरक्षा अपने बच्चे और औरतों की तरह करेंगे।

बरा बिन मअरूर ने प्रतिनिधित्व करते हुए कहाः "ऐ खुदा के रसूल, क़सम उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है। हम वचन देते हैं कि जिस प्रकार हम अपनी बीवी और बच्चों की सुरक्षा और सहायता करते हैं उसी प्रकार आपकी भी करेंगे। हम रणभूमि के घुड़सवार हैं"।

यस्रिब के लोग शपथ लेने के लिए तैयार हो रहे थे कि अबुल हैसम बिन उल तीहान ने आगे बढ़कर कहाः

"ऐ खुदा के रसूल आप से संबंध के पश्चात यस्रिब के यहूदियों से हमारे संबंध टूट जाएंगे। ऐसा न हो कि किसी समय आप मक्का लौट जाएं और हमको अकेला छोड़ दें।"

हज़रत मुहम्मद ने कहा ऐसा कादपि नहीं हो सकता। तुम्हारा खून मेरा खून है, तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूँ। तुम्हारी और मेरी सन्धि और युद्ध एक है" उसके बाद शपथ आरंभी हुई। शपथ के बीच अब्बास बिन उबादा ने कहाः

"ऐ ख़ज़रज समुदाय, समझ लो कि किस चीज़ पर शपथ ले रहे हो, यह शपथ अरब व अजम के विरूद्ध युद्ध की घोषणा है।" सब ने कहा हां, हम इसी पर शपथ ले रहे हैं। हमारी जान और माल अल्लाह और उसके रसूल के लिए है"। उसके बाद आप ने यस्रिब के मुसलमानों (अन्सार) में से बारह आदमियों को निगरां (निरिक्षण करने वाले) की हैसियत से चुना और उनसे कहाः

तुम यस्रिब के मुसलमानों पर निगराँ (निरिक्षक) हो।"

इस प्रकार एक नया समुदाय बना जो उस समय के रीति रिवाज से पूर्णतयः भिन्न था। इस वर्ग की नींव पारिवारिक या जातीय संबंधों पर न थी। बल्कि कर्म और विश्वास पर थी। इसी परिवेश में इसका नाम उम्मते मुस्लिमा रखा गया। यह अक़बा जहां हज़रत मुहम्मद ने निरंतर दो वर्ष तक यस्रिब के मुसलमानों से शपथ ली, अपनी पूर्व स्थिति में मौजूद नहीं है। परन्तु वहां एक मस्जिद अब भी निशानी के रूप में मौजूद है।

तदोपरांत मुसलमानों की भाषा में दो शब्दों का समावेश हो गया– एक अनसार, दूसरे मुहाजिरीन। अनसार का मत्लब था– मदीने के मुसलमान और मुहाजिरीन का मत्लब था– मक्का के मुसलमान। प्रारंभ में अनसार केवल उन मुसलमानों के लिए बोला जाता था जिन्होंने 622–621 में हज़रत मुहम्मद के हाथ पर बैअत की थी परन्तु बाद में यह शब्द मदीने के सारे मुसलमानों के लिए बोला जाने लगा।

यस्रिब के मुसलमान अगली सुबह को मक्का से रवाना हो गए। तीन दिन के बाद कुरैश को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने तेज़गामी घोड़ों पर अपने आदमी दौड़ाए कि उन्हें पकड़ कर मक्का वापस लाएं। परन्तु

वे लोग मार्ग बदल कर जा रहे थे इस कारण, तेज़ गति के घुड़सवारों के उपरांत उन्हें पाने में सफल नहीं हुए और वे लोग सकुशल मदीना पहुँच गए।

अब मुहम्मद (सल्ल०) ने प्रवास का आदेश देते हुए मक्का के मुसलमानों से कह दिया कि वह मक्का छोड़ कर यस्रिब चले जाएं और वहां अपनी शक्ति को संगठित करें। मुसलमान छोटे–छोटे दल बना कर मक्का से जाने लगे। कुरैश ने भी उनकी गतिविधियों पर अपनी दृष्टि रखनी शुरु की। हाशिम बिन आस को ठीक रवाना होने के समय पकड़ लिया और बेड़ियों में बांध कर नगर के बाहर रेगिस्तान में डाल दिया। यही उस समय की हिरासत थी अर्थात क़ैद, क्योंकि मक्का में कोई कारगार न था। अरब का प्रथम बंदीग्रह हज़रत मुहम्मद के निधन के पश्चात कूफा में बनाया गया। अनसार को सूचना मिली तो उन्होंने अपने कुछ आदमी तेज़गामी घोड़ों पर सवार करके मक्का भेजे जिन्होंने हाशिम की बेड़ियां खोलीं और उन्हें ऊँट पर सवार करके मदीना ले गए। हाशिम के शरीर पर उस समय हड्डी और चमड़े के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं बचा था। एक धनी मुसलमान बनू जाश के बारे में जैसे ही ज्ञात हुआ कि वह यस्रिब चले गए, अबू सुफयान ने उनके बहुत बड़े घर पर क़ब्ज़ा कर लिया। दूसरे मालदार मुसलमान जो सुहैब बिन सिनान रुमी के नाम से प्रसिद्ध थे, उनको कुरैश के लोगों ने पकड़ा और कहा कि, ''ऐ सुहैब! जब तुम मक्का आए तो निर्धन थे। इस नगर में व्यापार कर के तुम धनवान हो गए हो, इसको लेकर हम तुमको जाने नहीं देंगे।'' सुहैब ने सारी धन–संपत्ति उनको दे दी और खाली हाथ यस्रिब चले गए। इस प्रकार मक्का मुसलमानों से खाली हो गया। अब केवल मुहम्मद (सल्ल०) और उनके दो निकट सहयोगी अबू बक्र (रज़ि०) और अली (रज़ि०) रह गए थे। या वो कमज़ोर और निर्धन मुसलमान जो कुरआन के अनुसार इस प्रकार दुआएं करते थेः

"ऐ हमारे रब! हम को और हमारे परिवार वालों को इस नगर के लोगों के अत्याचार से बचा"।

## enhu dh vkj fgtjr ¼iokl½

अब कुरैश के लिए आवश्यक हो गया था कि कोई अंतिम उपाय सोचें क्योंकि जिस इस्लाम को वे अब तक अशक्त समझ रहे थे, वो मदीना पहुँच कर एक नई संगठित शक्ति बन रहा था। कुरैश उस समय दस समुदाय में बंटे हुए थे। प्रत्येक समुदाय का अपना एक मंत्रालय होता था। जिसको अलनादी कहते थे। फिर पूरे कुरैश की एक संयुक्त समीति होती थी जिसको दारूल नदवा कहा जाता था। जिसमें प्रत्येक समुदाय के मंत्रालय के सरदार सम्मिलित होते थे। जब कुरैश के सरदारों को जानकारी मिली कि मुसलमानों के प्रवास ने एक विकराल रुप धारण कर लिया है, तब उन्होंने संयुक्त समिति की एक विशेष बैठक बुलाई जिसमें सारे प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विचारणीय विषय था कि वर्तमान स्थति से कैसे निपटा जाए। पहला प्रस्ताव यह था कि हज़रत मुहम्मद को हाशिम बिन आस की तरह बंदी बना लिया जाए। अर्थात बेड़ियों में बाँधकर उन्हें जंगल में छोड़ दिया जाए। किन्तु इसमें यह भय था कि मदीने के मुसलमानों को इसकी सूचना मिल गई तो वे आएंगे और हज़रत मुहम्मद को उसी प्रकार मुक्त करा लेंगे जिस प्रकार उन्होंने हाशिम को मुक्त करा लिया।

फिर यह प्रस्ताव आया कि आप को मक्का से निष्कासित कर दिया जाए, यह भी असल समस्या का समाधान नहीं था। क्योंकि आशंका थी कि मक्का से निकलने के बाद आप यस्रिब चले जाएंगे और वहां अपनी शक्ति इकट्ठा कर के हमारे लिए एक नई समस्या बन जाऐंगे। अन्ततः अबू जहल के प्रस्ताव के अनुसार यह तय पाया कि मुहम्मद (सल्ल०) का वध कर दिया जाए।

प्राचीन अरब में किसी का वध कर देना न तो धार्मिक रुप से बुरा समझा जाता था और न नैतिक रुप से। केवल धन की हानि थी। क्योंकि

हत्यारे को हत्या के बदले उसके उत्तराधिकारियों को देयत (वो धनराशि जो हत्या के बदले उनके वारिसों को चुकानी पड़े) देना पड़ता था। जो व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल०) की हिमायत करता था उसको भी कुरैश ने राज़ी कर लिया कि वह आपका साथ छोड़ दे और आपका पक्ष लेना बंद कर दे। इस प्रकार संयुक्त समीति के सदस्यों ने निश्चित रुप से आप के वध का निर्णय ले लिया। तय यह पाया कि कुरैश के दस समुदाय के लोग मिलकर आप का वध करें और हाशिम वर्ग का मुखिया भी इसमें शामिल हो ताकि खून का बदला या युद्ध की कोई आशंका न रहे। हत्यारों की सूची भी उसी समय तैयार कर ली गई।

हज़रत मुहम्मद की एक फूफी थीं जिनका नाम रूक़य्या बिन्त अबी सैफ़ था। अल्लाह की सहायता से उनको इस बात की सूचना मिल गई कि कुरैश ने पैग़म्बरे इस्लाम के वध की योजना बनाई है। वे लोग कल रात्रि को भोर से पूर्व आप के घर को घेर लेंगे। योजना यह है कि सब एक साथ आप पर आक्रमण करें और तलवार से उनके टुकड़े–टुकड़े कर डालें। रूक़य्या ख़ामोशी से आपके पास आईं और कहा तुरंत कोई उपाय करो।

हज़रत मुहम्मद उसी समय अबू बक्र के घर पहुंचे और सारा क़िस्सा कह सुनाया। अबू बक्र ने कहाः "इस उद्देश्य के लिए मैंने पहले से दो तेज़गामी ऊँटनियों का प्रयोजन कर रखा है। उनमें से एक को आप स्वीकार करें।" अबू बक्र की पुत्री असमा ने रास्ते के लिए खाने पीने की चीज़े तैयार कीं और उसे एक थैले में रखा। थैले का मुंह बंद करने के लिए समय पर कोई रस्सी न मिली तो असमा ने अपना पटका खोला और उसके दो टुकड़े कर के एक टुकड़े से थैले का मुंह बांधा और दूसरे को अपनी कमर में लगा लिया। इसी कारणवश इस्लामी इतिहास में उनका नाम ज़ातुन निताक़ैन (दो पटकों वाली) पड़ गया।

उसके पश्चात मुहम्मद (सल्ल०) अपने चचेरे भाई अली बिन अबी

तालिब से मिले। उनको पूरी स्थिति बताई और यह कहा कि आज मैं यहां से चला जाऊँगा तुम यह करो कि मेरी चादर पहन लो और सारे दिन मेरे घर में रहो। रात को मेरे बिस्तर पर सो जाना। इस उपाय का एक तात्पर्य यह था कि मक्का वाले यह समझें कि आप घर के भीतर मौजूद हैं। उसके अतिरिक्त आपके पास मक्का वालों की अमानतें (धरोहर) भी थीं, आपने यह सुनिश्चित किया कि आपके जाने के बाद यह अमानतें अली बिन अबी तालिब उनके मालिकों को लौटा दें।

यात्रा की योजना इस प्रकार बनाई गई कि अंधेरा होते ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और अबू बक्र मक्का से रवाना हो कर सौर नामक पहाड़ की गुफा में पहुँच जाएं और कुछ दिन वहां रूकें। क्यों कि कुरैश को जब आप के चले जाने का समाचार मिलेगा तो अवश्य वह तेज़गामी ऊँटों पर सवार होकर मक्का की चारों दिशा में दौड़ेंगे ताकि आपको पकड़ लें। इस कारण गुफा में कुछ दिन रूक कर आप उस समय की प्रतीक्षा कर रहे थे कि जब कुरैश निराश होकर हज़रत मुहम्मद की खोज बन्द कर चुके हों। उस समय दो सफेद ऊँटनियां गुफा के पास पहुँचा दी जाए और आप दोनों उस पर सवार हो कर तेज़ी के साथ यस्रिब के लिए रवाना हो जाएं।

पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार, मक्का के सरदारों ने रात के पिछले पहर आपके घर को घेर लिया। घर के भीतर घुस कर वध करना अरब गरिमा के विरूद्ध था। इसलिए वे सुबह तक मुहम्मद (सल्ल०) की प्रतीक्षा करते रहे कि आप बाहर निकलें और वे लोग सामूहिक रूप से आक्रमण करके आपका वध कर डालें। सुबह हुई तो घर के अन्दर से एक व्यक्ति निकला किन्तु वह मुहम्मद (सल्ल०) न थे बल्कि आपके चचा के बेटे अली बिन अबी तालिब थे। जब सरदारों को ज्ञात हुआ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) घर के भीतर नहीं हैं तो वे आपके साथी अबू बक्र के घर पहुँचे। वहाँ अबू बक्र की पुत्री असमा थीं। पूछ–ताछ के बाद भी जब कुछ जानकारी न मिली तो असमा को एक थप्पड़ मारा और बुरा भला

कहते हुए चले गए।

मुहम्मद (सल्ल०) और अबू बक्र दोनों मक्का से पैदल चल कर तीन मील की दूरी पर सौर नामक पहाड़ की गुफा में छुप कर बैठ गए। अबू बक्र के लड़के अब्दुल्लाह के सुपुर्द यह काम था कि वह दिन भर मक्का में रहें और वहाँ के लोगों की सारी गतिविधियों की सूचना रात को आकर गुफा में पहुंचा दें। अबू बक्र के दास आमिर बिन फुहैरा दिन भर इधर उध ार बकरियां चराते और रात्रि के समय उनको हंकाकर गुफा की ओर ले आते और दोनों को दूध पिला कर चले जाते। अबू बक्र की पुत्री खाना पका कर रात को पहुंचा देतीं।

इधर मक्का वालों ने आप की खोज में दौड़ भाग शुरु कर दी। मक्का में घोषणा करा दी गई कि जो व्यक्ति मुहम्मद को पकड़ कर लाएगा उसको सौ ऊँटों का पुरस्कार दिया जाएगा। कुरैश के कई लोग तेज़गामी ऊँटों पर दौड़ते हुए सौर गुफा के निकट से भी गुज़रे परन्तु उसके भीतर न जा सके। कहा जाता है कि मुहम्मद (सल्ल०) के सौर गुफा में जाने के बाद हबूत (land slide) की घटना हुई जिसके कारण गुफा का मुख बन्द हो गया। बाहर से देखने वाले को संदेह नहीं होता था कि कोई इंसान इस में मौजूद है।

मुहम्मद (सल्ल०) और अबू बक्र तीन दिन तक इस गुफा में रहे उसके बाद निर्धारित नक़्शे के अनुसार अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित दो सफेद ऊँटनियाँ लेकर सौर गुफा पर आ गया। वह मुसलमान नहीं था। उसको रेगिस्तानी रास्तों की बहुत गहरी जानकारी थी और अरब के भूगोल से भी पूरी तरह परिचित था। आप ने उससे मेहनताने पर मामला तय किया था कि वह आपको मक्का से मदीना अपरिचित मार्ग से ले जाए। मुहम्मद (सल्ल०) और अबू बक्र ऊँटनियों पर सवार होकर आगे के लिए रवाना हुए। इस भय से कि पीछा करने वाले रास्ते में पकड़ न लें सामान्य मार्ग को छोड़ कर समुद्र के किनारे–किनारे यात्रा शुरू की।

दो इंसानों का यह क़ाफिला इस हाल में रवाना हुआ कि दोनों के पैरों में न तो जूते थे न शरीर पर पूरे कपड़े। मार्ग में एक व्यक्ति मिला उसने अबू बक्र को संबोधित करते हुए प्रश्न किया तुम कौन हो? उन्होंने एक नाम बताया। इसके बाद मुहम्मद (सल्ल०) की ओर संकेत करते हुए प्रश्न किया यह दूसरा कौन है? उन्होंने उत्तर दियाः

''एक आदमी जो हमें मार्ग दिखाता है।''

बनी मुदलिज समुदाय का सरदार सुराक़ा बिन जुअशुम अपने शिविर में बैठा हुआ था कि एक व्यक्ति आया और उसने कहा "ऐ सुराक़ा, मैंने आज दो ऊँट सवार देखे हैं। वे सफ़ेद ऊँटों पर सवार थे और समुद्र के किनारे–किनारे जा रहे थे। मेरा अनुमान है कि उनमें से एक व्यक्ति मुहम्मद हैं।" सुराक़ा अपने कुछ लोंगों के साथ घोड़े पर सवार होकर बताए हुए मार्ग पर चल पड़ा ताकि आपको पकड़ ले और कुरैश से एक सौ ऊँटों का पुरस्कार पा सके। सुराक़ा घोड़े पर सवार था इसलिए वह तेज़ी से चलकर आप के निकट पहुँच गया। किन्तु जैसे ही वह ऐड़ लगा कर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर जा पड़ना चाहता था, उसका घोड़ा ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसने तीरों से फाल निकाली कि वार करना चाहिए कि नहीं, उत्तर नही में आया। अब वह घोड़े से उतर पड़ा, और विनती करने लगा। उसने कहा ऐसा लगता है कि आप ही सच्चाई पर हैं, आप अवश्य एक दिन कुरैश पर विजय प्राप्त करेंगे। मुहम्मद (सल्ल०) ने पूछा कि तुम क्या चाहते हो। सुराक़ा ने कहा मैं चाहता हूँ कि जब आप विजयी हो जाएं तो मेरा और मेरे परिवार का वध न करें। आपने उसको रक्षा पत्र लिख कर दे दिया।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) चलते हुए 20 सितंबर 622 ई० को यस्रिब के निकट कुबा नाम की बस्ती में पहुंच गए। यह कुल 12 दिन का सफर था। रबीउल–अव्वल का महीना और पैग़म्बरी का तेरहवां वर्ष था। इसी वर्ष से इस्लामी इतिहास में हिजरी कैलेन्डर आरंभ होता है। कुबा मदीने के दक्षिण में स्थित है और हौमा का भाग माना जाता है।

## enhu e: io'k

कुबा मदीने से 3 मील की दूरी पर है। मुहम्मद (सल्ल०) सर्वप्रथम एक खजूर के बाग़ में रूके। कुबा के स्थानीय मुसलमान और यहूदी लोग आ–आकर आपके पास इकट्ठा होने लगे। परन्तु वे मुहम्मद (सल्ल०) से परिचित नहीं थे। क्योंकि अबू बक्र आप से आयु में तीन वर्ष बड़े थे, इसलिए उन्हें यह शंका हुई कि कहीं लोग यह समझने में गलती न करें कि पैग़म्बर कौन है। उन्होंने अपनी चादर जिसको उन्होंने जुबैर बिन अल–अव्वाम से ली थी, आप के ऊपर छाया के लिए फैला दी जो उस समय एक खजूर के पेड़ के नीचे उसकी अधूरी छाया में बैठे हुए थे। अब लोगों ने पैग़म्बर को पहचान लिया, और अरब परम्परा के अनुसार आप का स्वागत करने के लिए शोर मचाने लगे।

उसके बाद बनी अम्र बिन औफ के सरदार कुलसूम बिन अल हदम ने अपने घर चलने का आग्रह किया। हज़रत मुहम्मद ने कहा हम किसी को कष्ट देना नहीं चाहते। कुलसूम ने कहा हमारे घर में एक कमरा खाली है, उसमें कोई नहीं रहता, आप और अबू बक्र चल कर उसमें रहें। हम आपके ऊँटों की रक्षा करेंगे और उनका पेट भरेंगे। आप उनके यहां चले गए। परन्तु शीघ्र ही मदीना के मुसलमान अधिक संख्या में आप से भेंट करने के लिए आने लगे। और वो कमरा छोटा पड़ने लगा। उसके बाद साद बिन ख़ैसमा ने अपने घर चलने का निवेदन किया जो काफ़ी बड़ा था। इसलिए आप दिन को उस घर में रहने लगे परन्तु रात को सोने के लिए कलसूम के घर आ जाते।

कुबा पहुँचने के तीसरे दिन मुहम्मद (सल्ल०) ने वहाँ मस्जिद बनाने का निश्चय किया। यह इस्लाम की प्रथम मस्जिद थी। एक मुसलमान ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मस्जिद के लिए ज़मीन भेंट करनी चाही परन्तु पैग़म्बर इस्लाम ने यह भेंट स्वीकार नहीं की। उसको मूल्य देकर

ख़रीदा। इस मस्जिद को बनाने में सारे मुसलमानों ने भाग लिया। हज़रत मुहम्मद स्वंय भी अबूबक्र के साथ मिट्टी का गारा बनाते और पत्थरों को ढ़ोते और रद्दे जमाते थे। उमर बिन अल–ख़त्ताब जो कभी मक्का के सम्मानित लोगों में से थे, अपने कंधे पर पत्थर ढ़ोते और मिट्टी से भरा हुआ बर्तन उठा कर लाते। इस प्रकार सारे मुसलमानों ने इसके निर्माण में भाग लिया। हज़रत मुहम्मद कुबा में एक सप्ताह ठहरे। और जब मस्जिद तैयार हो गई तो आप वहां से चल कर यस्रिब आ गए।

यस्रिब उस समय दो नामों से प्रसिद्ध था– यस्रिब और तैबा। हज़रत मुहम्मद के यहां आने के पश्चात वह मदीनतुन्नबी (नबी का नगर) कहा गया। और संक्षेप में मदीना के नाम से जाना जाने लगा। मुहम्मद (सल्ल०) ने जब मदीने में प्रवेश किया, उस समय उसका क्षेत्र लग भग 30 कि० मी० था। इस नगर में घरों के अतिरिक्त 72 क़िले थे जिसमें 59 यहूदियों के थे और 13 अरबों के थे। उसके उत्तर और दक्षिण में दो पहाड़ स्थित थे। जो आज भी हैं। मदीना वासी लगभग आधे अरबी और आधे यहूदी थे। अरब लोगों का व्यवसाय कृषि, जानवर पालन और व्यापार होता था। यहूदी लोग कृषि, जवाहरात, सोनार और चमड़ा रंगने का काम करते थे। उस समय अरबों का अपना सिक्का नहीं होता था।

हज़रत मुहम्मद ने कुबा में जो मस्जिद बनाई उसका क़िबला (नमाज़ पढ़ने की दिशा) बैतुलमुकद्दस की ओर रखा गया। उस समय हज़रत मुहम्मद और उनके साथी बैतुल मुकद्दस की ओर मुंह कर के नमाज़ पढ़ते थे। इस से यहूदी समुदाय यह आशा करने लगा कि आप उनका धर्म अपना लेंगे। उन्हें इस बात से और बल मिला कि कुरआन में यहूदी वंश के नबियों का बहुत आदर से नाम लिया गया था। जैसे वे उन्हें मानते थे। उदाहरणार्थ हज़रत इब्राहीम, मूसा, सुलैमान, ईत्यादि। परन्तु कुबा में जब आपने सामूहिक इबादत का दिन जुमा (Friday) रखा तो यहूदी लोगों को निराशा हुई। क्योंकि वह समझ रहे थे कि आप सामूहिक

इबादत के लिए यहूदियों के दिन शनिवार (Saturday) का चयन करेंगे। उसके बाद कुछ यहूदी विद्वानों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से भेंट की और कहा कि यदि पैग़म्बर होना चाहते हो तो सबसे पहले आपको यहूदी होना चाहिए। क्योंकि खुदा केवल यहूदियों के माध्यम से ही बात करता है। पैग़म्बर इस्लाम ने कहा खुदा की दृष्टि में सब बराबर हैं। वो जिसको चाहे पैग़म्बरी के लिए नियुक्त करे।

कुबा का यहुदी समुदाय इस्लाम की ओर आकर्षित नहीं हुआ। केवल एक यहूदी ने इस्लाम क़बूल किया जिसका नाम सलूम था। यह वही व्यक्ति था जिसने कुबा की ओर आते हुए हज़रत मुहम्मद को सबसे पहले देखा था और क़बा वासियों को उसकी सूचना दी थी कि पैग़म्बर इस्लाम परवास करके यहां पहुँच गए हैं।

हज़रत मुहम्मद की ऊँटनी मदीना पहुंची तो यहां के लोग पहले से आपके स्वागत के लिए तैयार थे। लोग आपकी ऊँटनी की ओर दौड़ते, उसकी नकेल पकड़ते और आपसे कहते हमारे घर चलिए। आप ने कहा मेरी ऊंटनी को छोड़ दो यह मुझे स्वंय ही ऐसे स्थान पर ले जाएगी जहां खुदा की इच्छा है। ऊंटनी चलती रही यहां तक कि एक ऐसे स्थान पर जाकर रूक गई जहां कोई घर न था। आप ने प्रश्न किया यह ज़मीन किस की है। असअद बिन ज़ुरारा ने बताया यह ज़मीन दो छोटे–छोटे अनाथ बच्चें की है और मैं उनकी देख–रेख करता हूँ। इस ज़मीन को आप भेंट में स्वीकार करें और इस पर घर और मस्जिद बनाईये। आपने ख़रीदने का आग्रह किया। आपके आग्रह पर असअद बिन ज़ुरारा ने उसका मूल्य सात दीनार बताया। आपने कुछ दीनार बढ़ा कर उस ज़मीन को ख़रीद लिया। यह दीनार अबू बक्र (रज़ि०) ने आपकी ओर से अदा किए। उस समय मक्का और मदीना दोनों स्थानों पर ईरानी या रोमी सिक्के चलते थे। रोमी शासकों की राजधानी बाज़िनतीन था, जिसको आजकल इसतंबोल (Istanbul) कहा जाता है। दीनार सोने के होते थे। ईरानी

दीनार को दीनार खुसरवां और रोमी दीनार को दीनार हिरकली कहते थे।

अगले दिन हज़रत मुहम्मद ने मुसलमानों की सहायता से मदीना की प्रथम मस्जिद का निर्माण कार्य आरंभ किया। पैग़म्बर सहित सारे लोग गारा बनाते, मिट्टी तथा पत्थर उठा कर लाते। इस मस्जिद की दीवारें पत्थर की थीं। ओर छत को खजूर के पत्तों से ढांप दिया गया था। इस मस्जिद के पूरा होने में सात महीने लगे। इस मस्जिद का क़िबला भी बैतुलमुकद्दस की ओर बनाया गया था। क्योंकि उस समय तक काबा की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ने का आदेश नहीं आया था।

मदीने में हज़रत मुहम्मद जहां आकर उतरे, वहां से सबसे निकट घर अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद का था। अबू अय्यूब मां की ओर से हज़रत मुहम्मद के संबंधी भी होते थे। अबू अय्यूब ने अनुरोध किया कि आप मेरे घर चल कर रहें। आप ने कहा कि मैं एक शर्त पर चल सकता हूँ कि खाने का बोझ तुम पर न पड़े। अबू अय्यूब ने कहा कि ऐ मुहम्मद आप कितना खाएंगे कि मुझपर बोझ पड़ेगा। हज़रत मुहम्मद ने कहा मैं जितना भी खाऊं पर उसका दायित्व तुमपर नहीं डालूँगा। जब अबू अय्यूब ने देखा कि आप अपनी बात पर अडिग हैं तब उन्होंने स्वीकार कर लिया।

हज़रत मुहम्मद लगभग सात माह अबू अय्यूब अन्सारी के निवास स्थान पर रहे। अबू अय्यूब का घर दो माले का था। दीवारें कच्ची थीं। ऊपर थोड़ी हलचल से मिट्टी नीचे झड़ती थी। इस कारण अबू अय्यूब ने हज़रत मुहम्मद के रहने के लिए ऊपरी भाग का चयन किया। परन्तु आपने आने वालों की सुविधा के कारण नीचे का भाग पसन्द किया। अबू अय्यूब अन्सारी का परिवार ऊपरी भाग में रहता था। एक दिन संयोगवश उनके पानी का मटका टूट गया। छत साधारण थी, शंका हुई कि पानी टपक कर नीचे न गिर जाए अतः आप को कष्ट हो। घर में ओढ़ने के लिए मात्र एक रज़ाई थी, उन्होंने उस रज़ाई को पानी पर डाल दिया ताकि वह पानी सोख ले (सीरत इबने हिशाम, खंड 1, पृश्ठ 272)। जब मस्जिद पूर्ण हो गई तो उसके किनारों पर हुजरे (छोटे कमरे) बना दिये

गए, आप अपने परिवार सहित उन हुजरों में जाकर रहने लगे।

अबू अय्यूब अन्सारी के घर पर ठहरने के समय में हज़रत मुहम्मद ने ज़ैद बिन हारिसा और अबू राफे को दो ऊंट और पांच सौ दरहम देकर मक्का भेजा कि वे आपके घर वालों को मदीना ले आऐं। आपकी चार पुत्रियां थीं, फातिमा, उममे कुलसूम, रूक़य्या और ज़ैनब। रूक़य्या अपने पति उसमान के साथ मदीना आ चुकी थीं। और तीन लड़कियां मक्का में ही थीं। यह लोग फातिमा, उम्मे कुलसूम और आप की पत्नी सौदा बिन्त ज़मआ, उसामा बिन ज़ैद और उनकी पत्नी उम्मे अयमन को लेकर आ गए। हज़रत मुहम्मद की तीसरी बेटी ज़ैनब को उनके पति अबूल आस (अबुल आस ने इस्लाम धर्म नहीं अपनाया था) ने आने नहीं दिया। हज़रत अबूबक्र के लड़के अबदुल्लाह अपनी बहन आयशा और दूसरे घर वालों को लेकर मदीना आ गए।

मक्का छोड़ कर मदीना आने वाले लोगों में कुछ लोग ऐसे थे जिनके पास रहने और सोने की जगह नहीं थी। हज़रत मुहम्मद ने ऐसे लोगों के लिए मस्जिद से मिला एक चबूतरा बनवा दिया। उसके ऊपर खजूर के पत्तों और डालियों का छप्पर (सुफ्फा) डलवा दिया। इस छप्पर में रहने वाले इस्लामी इतिहास में असहाबे–सुफ़्फ़ा कहलाए, अर्थात छप्पर वाले लोग। सुफ्फा बेघर लोगों के लिए केवल घर न था बल्कि इस्लाम की प्रथम पाठशाला भी थी जहां उनकी शिक्षा की व्यवस्था की गई थी।

अबू हुरैरा भी उनही असहाबे सुफ़्फा में से एक थे। उनका कहना है कि मैंने 70 असहाबे सुफ्फा को इस अवस्था में देखा है। उन में से किसी के पास लंबी चादर न थी, या तो केवल तहमद (धोती) होता था या केवल छोटी चादर जिसका एक किनारा वे गर्दन से बांध लेते थे और दूसरा हाथ से पकड़े रहते ताकि सतर (गुप्तांग) खुल न जाए। यह चादर किसी की आधी टांग तक पहुंचती और किसी के टखने तक। यह लोग निर्धनता के कारण कृषि या व्यापार भी नहीं कर सकते थे। उनमें से कुछ

लोग जंगल की ओर निकल जाते और वहां से लकड़ियां लाते। उसको बेच कर वह अपना और अपने साथियों के पेट भरने का सामान जुटाते। कभी किसी मालदार मुसलमान के यहां खाने का आयोजन हो जाता। एक बार हज़रत मुहम्मद ने सुफ्फा वालों से कहाः

"ऐ अहले सुफ़्फ़ा, तुमको बधाई हो। मेरी उम्मत (मेरे मानने वालों) में से जो कोई निर्धनता के समय तुम्हारी तरह अपने जीवन में धैर्य और कृतज्ञता (gratitude and patience) रखने वाला हो, जन्नत में वह मेरे साथ होगा।"

कहा जाता है कि सुफ्फा में अलग अलग समय पर जो लोग विभिन्न समय में ठहरे उनकी संख्या कुल मिलाकर लगभग 400 है।

हज़रत मुहम्मद ने अपने चचेरे भाई अली बिन अबी तालिब से मुवाखात (बन्धुत्व) किया। आपने कहा ऐ अली हम दानों की जीविका के लिए एक दिन तुम काम करो और एक दिन मैं काम करूंगा। अली ने कहा ऐ खुदा के पैगम्बर, मस्जिद में आपकी उपस्थिति आवश्यक है ताकि आप मस्जिद का प्रबंधन और मुसलमानों की समस्याओं का समाधान करें। मैं अकेले दोनों की जीविका के लिए काम कर लूँगा। आपने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। अली प्रतिदिन रोज़ी कमाने के लिए निकल जाते। उस समय मदीना के एक व्यक्ति के घर का निर्माण कार्य चल रहा था। अली उसके गारे के लिए पानी ढोते थे। घर और कुएं के बीच की दूरी इतनी थी कि अली सुबह से शाम तक केवल सोलह डोल से अधिक पानी नहीं ला पाते थे। पानी के प्रत्येक डोल के लिए परिश्रमिक एक खजूर तय था। अली की सारे दिन की मजदूरी सोलह खजूरें होतीं थीं। जिसका आधा अर्थात आठ खजूरें वह हज़रत मुहम्मद को देते और आठ खजूरें अपने पास रखते। काफी समय तक इसी प्रकार दोनों अपना जीवन यापन करते रहे।

मक्का को प्रवास करने वाले मुसलमान (मोहाजिरीन) अपने ध

ान–संपत्ति और अपने घर को छोड़ कर मदीना पहुंचे थे। आपने मदीना के स्थानीय मुसलमानों से कहा कि एक अन्सारी एक मुहाजिर को अपना भाई बना ले। जब मक्का के मुसलमान स्वंय अपनी व्यवस्था कर लेंगे तो अलग हो जाएंगे। अन्सार ने आपके प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया।

मदीना पहुंचने के पांच मास बाद मुवाखात (बन्धुत्व) के समझौते का गठन किया गया। मुहम्मद (सल्ल०) समान रूचि और परिस्थितियों के एक मोहाजिर और एक अन्सारी को बुलाते और कहते कि तुम दोनों भाई हो। उसके बाद यह दोनों इस प्रकार भाई–भाई हो जाते कि घर और संपत्ति में बराबर के शरीक होते बल्कि मृत्यु के उपरांत भी जीवित रहने वाले भाई को अपने भाई की विरासत का हिस्सा मिलता। इस प्रकार 186 मुहाजिरों ने मदीने के मुसलमानों के साथ मुवाख़ात कर लिया और उनके घरों में रहने लगे। मुवाख़ात समझौते के बाद अन्सारी भाई ने अपनी ज़मीन, बाग़ मकान और घर की संपूर्ण संपत्ति, हर एक चीज़ का आधा भाग अपने भाई को पेश कर दिया।

सअद बिन रबीअ एक मालदार अनसारी थे। अबदुर्रहमान बिन औफ उनके भाई बने। वह अबदुर्रहमान बिन औफ को अपने घर ले गए और अपनी सारी धन–संपत्ति उनके सामने लाकर रख दी और कहा इनमें से आधा ले लो। यह भी कहा मेरी दो पत्नियां हैं, उनमें से एक को पसन्द कर लीजिए। मैं उसको तलाक़ दे दूँगा, आप उससे निकाह (विवाह) कर लीजिए। अबदुर्रहमान बिन औफ ने कहा तुम तो मुझे केवल बाज़ार का मार्ग बता दो। वह बनी क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में गए, घी और पनीर का व्यापार आरंभ किया। उनके व्यापार में इतनी अधिक वृधी हुई कि उनकी व्यापारिक सामग्री 700 ऊँटों पर लदकर आती थी। एक दिन वह हज़रत मुहम्मद के पास आए तो कपड़ों से सुगन्ध आ रही थी। आप ने प्रश्न किया तो बताया कि एक अन्सारी महिला से विवाह कर लिया है। मुहम्मद (सल्ल०) ने उनको वलीमा (विवाह भोज) का आदेश दिया। बाद

को मुवाख़ात संबंधी समझौते की आवश्यक्ता नहीं रही थी। मुहाजिरीन ने मदीना में अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी कर ली थी। और यहूदियों की छोड़ी हुई संपत्ति में उनको हिस्सा मिला था।

## efLt n dk fuekl.k

हज़रत मुहम्मद हिजरत करके मदीना पहुंचे तो सर्वप्रथम आप कुबा में ठहरे। कुबा मदीने से तीन मील की दूरी पर एक क्षेत्र था। इस क्षेत्र में सब से प्रमुख परिवार उमर बिन औफ का था। इस परिवार के मुखिया का नाम कुलसूम बिन हदम था। मुहम्मद (सल्ल०) क़बा में कुलसूम बिन हदम के निवास स्थान पर ठहरे।

आप ने क़बा पहुंच कर सर्वप्रथम एक मस्जिद की नीव रखी। पहला पत्थर आप स्वंय अपने हाथ से उठा कर लाए और वहां रखा, उसके बाद दूसरे सहाबा (companions of the Prophet) ने पत्थर लाना आरंभ किया। और इस प्रकार मस्जिद का निर्माण कार्य आरंभ हो गया। यही वह मस्जिद है जिसके संबंध में कुरआन में कहा गया है कि जिसकी नीव प्रारंभ से ही धर्मपरायण्ता पर रखी गई हो अवश्य ही वह इस योग्य है कि तुम उसमें खड़े हो। इस मस्जिद में ऐसे इंसान है जो पवित्रता को पसन्द करते हैं और अल्लाह भी पवित्रता को पसन्द करता है (अल–तौबाः 108)।

मदीने के मुसलमानों ने जब आपके आने का समाचार सुना तो वह यहां आकर आपसे भेंट करने लगे। शुक्रवार को आपने यहां से प्रस्थान किया। शुक्रवार की नमाज़ आपने बनू सालिम बिन औफ़ की मस्जिद में पढ़ी।

मुहम्मद (सल्ल०) कुबा से चल कर मदीना आए। आप की ऊंटनी चलती रही यहां तक कि वो एक स्थान पर बैठ गई। उसी स्थान पर आपने मस्जिद के निर्माण का निश्चय किया। आपने पूछा कि यह भूमि किसकी है। बताया गया दो अनाथ बालकों की है जिनका नाम सहल

और सुहैल है। उस समय यह भूमि मरबद (खलयान) के रूप में प्रयोग होती थी। आपने कहा यदि यह भूमि तुम हमें बेच दो तो हम यहाँ मस्जिद का निर्माण करेंगे।

बालकों ने कहा यह भुमि हम बिना किसी मूल्य के आपको देते हैं। अल्लाह इसका जो मूल्य हमें दे वो हमारे लिए पर्याप्त होगा। किन्तु हज़रत मुहम्मद ने उनके इस आग्रह को अस्वीकार कर दिया। कहा जाता है कि हज़रत अबू बक्र ने हज़रत मुहम्मद की ओर से उनको इस मूल्य का भुगतान किया। मुहम्मद (सल्ल०) ने धरती को समतल करने का आदेश दिया। जब धरती साफ और बराबर हो गई तब मस्जिद की नीव खोदी गई। इस कार्य में अन्य मुसलमानों के साथ आप ने भी भाग लिया। जब मस्जिद की दीवार बनने लगी तो आप स्वंय भी ईंटें उठा कर लाते और निर्माण कार्य में अपना योगदान देते। आपको कार्य में व्यस्त देख कर मुसलमानों ने कुछ पंक्तियां कहीं जिनका अर्थ यह है:

यदि हम बैठ जाएं जबकि नबी कार्यरत है,
तो हमारा ऐसा करना बहुत बुरा होगा।

एक सहाबी का नाम तलक़ बिन अली था। वह कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने मेरे सुपुर्द यह काम किया कि मैं मट्टी में पानी डाल कर गारा बनाऊं। मैं फावड़ा लेकर गारा बनाने के कार्य में लग गया। उन्होंने बताया कि एक अवसर पर मैंने कहा कि ऐ खुदा के रसूल क्या मैं भी ईंटें उठा कर लाने का कार्य करूं, आपने कहा नहीं, तुम गारा बनाओ इस कार्य को तुम भली भांति जानते हो।

मदीने की यह मस्जिद जो हज़रत मुहम्मद और आपके साथियों ने बनाई थी पूर्णतया साधारण थी। इसमें कच्ची ईंटों की दीवारें थीं। और स्तंभ खजूर के तनों से बनाए गए थे। और छत खजूर के पत्तों और शाखाओं की थी। बाद में छत को गारे से लैप दिया गया था। यह मस्जिद प्रारंभ में लग–भग एक सौ गज़ लंबी और एक सौ गज़ चौड़ी थी। इसमें प्रवेश

द्वार तीन बनाए गए थे।

बताया जाता है कि इस मस्जिद का निर्माण मुहम्मद (सल्ल०) ने दो बार किया। प्रथम बार, जब आप मक्का से हिजरत करके मदीना आए। और दूसरी बार ख़ैबर की विजय के पश्चात, हिजरत के सातवें वर्ष। इसके पुनर्निर्माण की आवश्यक्ता इसलिए पड़ी कि पुरानी होने के कारण वह टूट–फूट गई थी। इस अवसर पर मस्जिद में विस्तार भी किया गया था।

मस्जिद के पुनर्निर्माण की एक घटना यह है कि मुसलमान ईंटें उठा–उठा कर ला रहे थे, साथ में मुहम्मद (सल्ल०) भी ईंटें उठा कर ला रहे थे। हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं एक बार मेरा और आपका सामना हो गया। मैंने देखा कि आप कई ईंटें उठाए हुए हैं और अपनी छाती से ईंटों को सहारा दे रखा है। मैंने अनुमान लगाया कि कदाचित अधिक वज़न के कारण आप ऐसा किए हुए हैं। मैंने कहा ऐ खुदा के रसूल इन ईंटों को मुझे दे दीजिए। आप ने कहा ऐ अबू हुरैरा तुम दूसरी ईंटें ले लो क्योंकि वास्तविक जीवन तेा केवल आखिरत (मरने के बाद) का है।

## e|ok[kkr ¼cU/k|Ro½

मक्का से हिजरत कर के जो मुसलमान मदीना पहुंचे वहां उनकी स्थिति नए नगर में शरणार्थी की थी। उनके निवास के लिए मुहम्मद (सल्ल०) ने मुवाख़ाता की व्यवस्था की। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि आपने कहा, दो–दो व्यक्ति अल्लाह के मार्ग में भाई–भाई बन जाओ। उसके बाद आपने हज़रत अली बिन अबी तालिब का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा यह मेरा भाई है।

इस प्रकार शरणार्थी मुसलमान मदीने में अजनबी (बाहरी व्यक्ति) नहीं रहे। मुहाजिर और अनुसार दोनों भाई–भाई बन कर एक दूसरे के सहायक बन गए। यह भाईचारा इतना संपूर्ण था कि दोनों को एक दूसरे की विरासत मिलने लगी, जिस प्रकार एक भाई को दूसरे भाई की

मिलती है।

मुहाजरीन की स्थिति लुटे हुए क़ाफ़िले की थी। इसलिए इस मुवाखात के अनुसार अन्सार की स्थिति देने वाले (giver group) की थी। और मुहाजिर की स्थिति पाने वाले की (taker group) की थी। परन्तु अन्सार ने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ इसे स्वीकार किया। अनसार मदीना के स्थानीय लोग थे, इसलिए उनके पास घर, धन–संपत्ति, भूमि तथा बाग़ात थे। पर्त्येक अन्सारी ने अपनी सारी धन–संपत्ति का आधा भाग अपने पास रखा और शेष आधा अपने मुहाजिर भाई को दे दिया। हज़रत अनस कहते हैं कि कोई अन्सारी अपनी धन–संपत्ति में अपने मुहाजिर भाई से अधिक अपने आप को उसका योग्य नहीं समझता था।

अन्सार के इस असाधारण त्याग को देख कर कुछ मुहाजिरीन ने मुहम्मद (सल्ल०) से कहा कि ऐ खुदा के रसूल जिस क़ौम (वर्ग) के पास हम आए, कठिन परिस्थितियों में उनसे अधिक हमदर्दी करने वाला हमने नहीं पाया। और उनसे अधिक उदारता से खर्च करने वाला नहीं पाया। हमें आशंका है कि सारा पुण्य केवल इनको मिल जाए और हम वंचित रह जाएं। आपने कहा नहीं, जबतक तुम उनकी प्रशंसा करते रहो और उनके लिए प्रार्थना करते रहो।

प्रारंभ में मुवाखात में विरासत का हक़ भी सम्मिलित था प्रन्तु बाद में विरासत का अधिकार रद् कर दिया गया। विरासत को पारिवारिक संबंधों के साथ विशेषतः रहने दिया गया।

परन्तु इसके अतिरिक्त शेष सारे मामलों में सारे मुसलमान भाई भाई बन कर रहने लगे। जिनके बीच मुवाख़ात समझौता हुआ उनमें से कुछ नाम निम्नलिखित हैं:

| मुहाजिर | अनसारी |
|---|---|
| 1. अबू बक्र बिन अबी क़हाफा (रज़ि०) | खारिजा बिन ज़ैद (रज़ि०) |
| 2. उमर बिन अल–ख़त्ताब (रज़ि०) | उतबान बिन मालिक (रज़ि०) |

| | |
|---|---|
| 3. अबू उबैदा बिन अल–जर्राह (रज़ि०) | साद बिन मुआज़ (रज़ि०) |
| 4. अबदुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) | साद बिन रबी (रज़ि०) |
| 5. जुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) | सलमा बिन सलामा (रज़ि०) |
| 6. उसमान बन अफफान (रज़ि०) | औस बिन साबित (रज़ि०) |
| 7. तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि०) | काब बिन मालिक (रज़ि०) |
| 8. सईद बिन ज़ैद बिन अम्र (रज़ि०) | उबैय बिन काब (रज़ि०) |
| 9. मुसअब बिन उमैर (रज़ि०) | अबू अय्यूब खालिद बिन ज़ैद (रज़ि०) |
| 10. अबू हुज़ैफा बिन उत्बा (रज़ि०) | अब्बाद बिन बिश्र (रज़ि०) |
| 11. अम्मार बिन यासिर (रज़ि०) | हुज़ैफा बिन अलयमान (रज़ि०) |
| 12. अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) | मुन्ज़िर बिन अम्र (रज़ि०) |
| 13. सलमान अल फारसी (रज़ि०) | अबू दरदा उमैर बिन सालबा (रज़ि०) |
| 14. बिलाल हब्शी (रज़ि०) | अबू रुवैहा अबदुल्लाह बिन अबदुर्रहमान (रज़ि०) |
| 15. हातिब बिन अबी बलतआ (रज़ि०) | उवैम बिन साइदा (रज़ि०) |
| 16. अबू मरसद (रज़ि०) | ओबादा बिन साबित (रज़ि०) |
| 17. अब्दुल्लाह बिन जहश (रज़ि०) | आसिम बिन साबित (रज़ि०) |
| 18. उतबा बिन ग़जवान (रज़ि०) | अबू दुजाना (रज़ि०) |
| 19. अबू सलमा बिन अब्दुल असद (रज़ि०) | साद बिन ख़ैसमा (रज़ि०) |
| 20. उसमान बिन मज़ऊन (रज़ि०) | अबुल हैसम बिन तीहान (रज़ि०) |
| 21. उबैदा बिन अल–हारिस (रज़ि०) | उमैर बिन अल–हुमाम (रज़ि०) |
| 22. सफ़वान बिन बैज़ा (रज़ि०) | शफे बिन मोअल्ला (रज़ि०) |
| 23. जूश्शिमालैन (रज़ि०) | यज़ीद बिन अल–हारिस (रज़ि०) |
| 24. अरक़म बिन अल अरक़म (रज़ि०) | तलहा बिन ज़ैद (रज़ि०) |
| 25. ज़ैद बिन अल–ख़त्ताब | मअन बिन अदी (रज़ि०) |

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि अन्सार ने मुहम्मद (सल्ल०) से कहा कि मदीने में हमारे जो खजूर के बाग़ात हैं उनको हमारे और हमारे भाईयों

के बीच बाँट दीजिए। आप ने कहा नहीं, मुहाजिरों को कृषि और बाग़बानी का अनुभव नहीं है। फिर क्या तुम ऐसा करोगे कि बाग़ में तुम हमारी ओर से परिश्रम करो और आय में हम तुम्हारे हिस्सेदार हों। अन्सार ने कहा हमने सुना और माना।

हज़रत जाबिर बताते हैं कि अन्सार का तरीक़ा यह था कि जब वह खजूर की पैदावार का बटवारा करते तो हर एक अन्सारी उनके दो भाग इस प्रकार करते कि उसका एक भाग कम होता और दूसरा भाग उससे अधिक। फिर कम वाले भाग के साथ खजूर की शाखों को मिला देतें उसके बाद वे मुसलमानों से कहते दोनों में से जो भाग लेना चाहो ले लो। मुहाजिर अधिक पैदावार वाले भाग को ले लेते और अन्सारी उस भाग को ले लेते जिसमें फल की मात्रा कम होती।

ऐसा ख़ैबर की विजय तक चलता रहा, जब खैबर के छेत्र पर विजय प्राप्त हो गई तो मुसलमानों को ख़ैबर के बाग़ात मिले। उस समय मुहम्मद (सल्ल०) ने अन्सार से कहा कि तुम्हारे ऊपर हमारा जो हक़ था वह तुमने पूरा–पूरा अदा कर दिया। अब यदि तुम चाहो तो तुम्हारी संतुष्टि के लिए खैबर में से तुम्हारा हिस्सा तुमको दिया जाए। अन्सार ने कहा ऐ खुदा के रसूल हमारी भी आपके ऊपर एक शर्त थी वह यह कि हमारे लिए जन्नत हो। आप ने जो कहा वह हमने कर दिया, तो अब हमारी शर्त भी हमको मिले। हज़रत मुहम्मद ने कहा हाँ वो तुम्हारे लिए है।

बताया जाता है कि मुहम्मद (सल्ल०) ने बन्धुत्व का तरीक़ा दो बार अपनाया। पहली बार मक्का में, दूसरी बार मदीना में। मक्का में जो लोग इस्लाम लाए थे, उनमें से कई लोग इस्लाम अपना लेने के कारण अपने परिवारजन से कट गए थे, आवश्यक्ता हुई कि उनका कोई प्रबंध किया जाए। इसलिए आपने ऐसे लोगों का मुवाख़ात ऐसे लोगों से कर दिया जिनका परिवार आर्थिक रूप से संपन्न था।

पहली मुवाख़ात मुहाजेरीन और मुहाजेरीन के बीच थी। अब्दुल्लाह

बिन अब्बास बताते हैं कि मक्का में मुहम्मद (सल्ल०) ने जुबैर बिन अल अव्वाम और अब्दुल्लाह बिन मसऊद के बीच मुवाख़ात करवाया था। इसी प्रकार ज़ैद बिन हारिसा की मुवाख़ात हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब और मुसअब बिन उमैर की मुवाख़ात साद बिन अबी वक़्क़ास के साथ इत्यादि।

मुवाख़ात की व्यवस्था दूसरी बार हिजरत के बाद मदीने में अपनाई गई थी। यह मुवाख़ात मुहाजरीन और अन्सार के बीच करायी गयी थी। मदीने की स्थिति उस समय एक छोटे नगर की थी। जब वहां मुहाजेरीन आए तो उनके आने से निवास की एक बड़ी समस्या खड़ी हो गई। तब आपने मुवाख़ात द्वारा इस समस्या का समाधान किया।

इस मुवाख़ात ने केवल कुछ लोगों के आवास की समस्या का समाधान ही नहीं किया, बल्कि इस बात का व्यवहारिक प्रदर्शन भी किया कि इस्लाम में संबंधों का आधार धर्म है। और बाक़ी सारे संबंध इससे अतिरिक्त हैं। छोटा और बड़ा, धनवान और निर्धन, घर वाला और बेघर सब अल्लाह की दृष्टि में एक समान हैं। सारे समाजिक और आर्थिक मतभेदों को मिटा कर धर्म के मार्ग पर एक हो जाना चाहिए।

## enhu dk le>kSrk

मदीने में अरब की दो जातियां (tribes) औस और ख़ज़रज आबाद थीं, उसी के साथ वहां कुछ यहूदी परिवार भी बसे हुए थे। यह लोग अल्पसंख्यक थे। परन्तु यह लोग अरबों की तुलना में विज्ञान में आगे थे। इसी के साथ वे व्यापार भी करते थे। इसी सबब से यहूदियों की आर्थिक स्थिति अरबों से बेहतर थी।

यहूदियों में ऐसे लोग थोड़े थे जो मुहम्मद (सल्ल०) की पैग़म्बरी को पहचान कर आप पर ईमान लाए। उनके अधिकांश लोग हज़रत मुहम्मद और हज़रत मुहम्मद के धर्म के शत्रु बन गए। उनका विचार यह था कि पैग़म्बर केवल बनी इसराईल के वंश में पैदा हो सकता है। मुहम्मद

(सल्ल०) बनी इसमाईल के वंश से थे। इस कारण वो मुहम्मद (सल्ल०) की पैग़म्बरी का विश्वास न कर सके। हज़रत मुहम्मद ने प्रयास किया कि यदि वह ईमान न लाएं तो कम से कम मुसलमानों को उनसे हानि न पहुंचे, इस उद्देश्य को सामने रखकर हज़रत मुहम्मद ने यहूदियों से एक संधि की जिसको सहीफा–ए–मदीना (Madina Pact) कहा जाता है। मदीना के यहूदियों से यह संधि हिजरत के पांच महीने बाद की गई। यह संधि धर्म, संपति और आपसी समस्याओं से संबंधित थी। संक्षिप्त में यहां, इसकी नक़ल दी जारही है:

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहम वाला है।

यह लिखित समझौता है मुहम्मद नबी–ए–उम्मी की ओर से कुरैश और यस्रिब के मुसलमानों और यहूद के बीच जो उनके आदेशों का पालन करना चाहें या उनसे जुड़ना चाहें। प्रत्येक समुदाय अपने धर्म पर रहकर इन आदेशों के लिए बाध्य होगा।

1. क़ेसास और खूंबहा के जो तरीक़े प्राचीन काल से चले आरहे हैं वह न्याय और निष्पक्षता के साथ अपनी जगह बने रहेंगे।
2. प्रत्येक समुदाय को न्याय और निष्पक्षता के साथ अपने वर्ग का फिदया (वो धनराशि जो किसी बन्दी को मुक्त कराने के लिए दी जाए) देना होगा। अर्थात जिस वर्ग का कैदी होगा उस क़ैदी को छुड़ाने के लिए धन राशि देना उसी वर्ग का उत्तरदायित्व होगा।
3. अपराध, अत्याचार और विद्रोह के मामले में सब की एक सहमति होगी इस संदर्भ में कोई पक्षपात नहीं होगा वह चाहे किसी का बेटा ही क्यों न हो।
4. कोई मुसलमान किसी मुसलमान को किसी ग़ैर–मुस्लिम के मुक़ाबले पर हत्या नहीं कर सकता और न ही किसी मुसलमान के

मुक़ाबले पर किसी ग़ैर–मुस्लिम की सहायत की अनुमति होगी।

5. जो यहूदी मुसलमानों के अधीन होंगे उनकी सुरक्षा का दायित्व मुसलमानों पर होगा, उन पर न किसी प्रकार का अत्याचार होगा और न उनके विरूद्ध उनके शत्रु की कोई सहायता की जाएगी।
6. किसी ग़ैर–मुस्लिम या मूर्तिपूजक को यह अधिकार नहीं होगा कि वह मुसलमानों के विरूद्ध कुरैश के किसी व्यक्ति को शरण दे या कुरैश और मुसलमानों के बीच आए।
7. युद्ध के समय यहूद को अपनी जान और माल से मुसलमानों का साथ देना होगा। मुसलमानों के विरूद्ध किसी की सहायता करने की आज्ञा नहीं होगी।
8. अल्लाह के रसूल का कोई शत्रु यदि मदीने पर आक्रमण करे तो अल्लाह के रसूल की सहायता यहूद पर अनिवार्य होगी। जो समुदाय इस संधि और शपथ में शामिल हैं, उन में से कोई समुदाय इस संधि और शपथ से अलग होना चाहे तो मुहम्मद (सल्ल०) की आज्ञा के बिना उसको ऐसा करने का अधिकार न होगा।
10. किसी उपद्रवी की सहायता या उसको अपने पास ठिकाना देने की अनुमति नहीं होगी, यदि कोई व्यक्ति किसी नई बात निकालने वाले की सहायता करे तो उस पर अल्लाह की लानत और ग़ज़ब (खुदा के क्रोध और अभिशाप) है। क़यामत तक उसके किसी कार्य को स्वीकार नहीं किया जाएगा।
11. मुसलमान यदि किसी से समझौता करना चाहें तो यहूदियों को भी उस समझौते में शामिल होना अनिवार्य होगा।
12. जो किसी मुसलमान का वध करे और गवाही मौजूद हो तो उस से खून का बदला लिया जाएगा। या यह कि जो वधित है उस के परिवार वाले देयत (खून के बदले की धन राशि) पर राज़ी हो जाऐं।
13. जब भी किसी मामले में मतभेद पैदा हो जाए तो अल्लाह और

उसके रसूल की ओर लौटना होगा।

मुहम्मद (सल्ल०) ने जिन समदायों से समझौता किया था, उनमें यहूद के तीन बड़े परिवार शामिल थे। यह परिवार मदीना और मदीना के निकटवर्ती क्षेत्रों में बसे हुए थे, उनके नाम हैं बनू कुरैज़ा, बनू नज़ीर, बनू क़ैनुक़ाअ।

बाद में तीनों क़बीलों ने समझौते के नियमों को तोड़ा, संधि के विरूद्ध षडयंत्र रचे, और मुसलमान के शत्रुों का साथ दिया। इसलिए व्यवहारिक रूप से यह संधि जल्द ही समाप्त हो गई।

## e|gkf t jhu d nLr

मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीना पहुंचने के बाद जो कार्य किए, उसमें एक यह था कि आप ने छोटे–छोटे दस्ते बना कर मक्का के मार्गों पर भेजनी शुरू की। इन टुकड़ियों में केवल मुहाजिर मुसलमान होते थे। इन दस्तों के भेजने का उद्देश्य यह होता था कि मक्का वालों की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। क्योंकि हिजरत के बाद उनके मदीने पर आक्रमण करने का भय था।

दूसरा उद्देश्य कुरैश के क़ाफ़िलों को रोकना था, और उनका उत्साह तोड़ना था, दूसरे अर्थों में उनपर धाक जमानी थी और इस्लामी शक्ति का प्रदर्शन करना था ताकि वे मदीने के विरूद्ध जंगी कार्यवाही से अलग रहें।

हिजरत के लगभग सात महीने बाद हज़रत मुहम्मद ने एक टुकड़ी हज़रत हमज़ा की अध्यक्षता में भेजी। इस में तीस मुहाजिर थे। यह लोग सैफुल बह्र की ओर भेजे गए थे, ताकि कुरैश के उन तीन सौ सवारों का पीछा करें जो अबू जहल के नेत्रत्व में शाम से मक्का लौट रहा था। सैफुल बह्र (समुद्र तट) पर दोनों का आमना सामना हुआ। परन्तु लड़ाई नहीं हुई हज़रत हमज़ा बिना किसी मुडभेड़ के लौट आए।

उसके बाद शव्वाल 1 हिजरी में 60 मुहाजिरों की एक टुकड़ी राबेग़

की ओर भेजी गई, उसके सरदार अब्दह बिन अल–हारिस थे। राबेग़ पर कुरैश के दो सौ सवारों से मुडभेड़ हुई। परन्तु लड़ाई की स्थिति उत्पन नहीं हुई। मुसलमान अपनी मौजूदगी का प्रदर्शन करके लौट आए।

ज़ीकादा एक हिजरी में बीस मुहाजिरों का एक दस्ता ख़र्रार की ओर भेजी गई, उसका नेतृत्व साद बिन अबी वक़्क़ास कर रहे थे। यह लोग रात को चलते और दिन को छिप जाते इस प्रकार चलते हुए जब वे ख़र्रार पहुचे तो पता चला कि कुरैश का क़ाफ़िला आगे जा चुका है। ख़र्रार से यह लोग मदीना वापस लौट आए।

दो सफर में 60 मुहाजिरों की एक टुकड़ी रवाना हुई। उसके साथ मुहम्मद (सल्ल०) शामिल थे। आप ने मदीने में अपने स्थान पर साद बिन उबादह अन्सारी को नियुक्त किया और चलते हुए अबवा नामक स्थान तक पहुँच गए। वहां पहुँच कर पता चला कि कुरैश का क़ाफिला आगे जा चुका है। यहाँ हज़रत मुहम्मद ने बनू ज़मरा वर्ग के सरदार मख़शी बिन अम्र से संधि की, जिसकी शर्तें यह थीं कि वे लोग न तो मुसलमानों से युद्ध करेंगे और ना ही मुसलमानों के विरूद्ध किसी शत्रु की सहायता करेंगे। वहां से 15 दिन बाद आप बिना किसी मुडभेड़ के मदीना लौट आए।

रबीउस्सानी दो हिजरी में कुरैश का एक व्यपारिक क़ाफ़िला मक्का जा रहा था। हज़रत मुहम्मद ने मदीने में अपने स्थान पर साएब बिन उस्मान बिन मज़ऊन को नियुक्त किया और स्वंय 200 मुसलमानों को लेकर कुरैश के क़ाफ़िले की ओर रवाना हुए। कुरैश के इस क़ाफिले में 100 आदमी और लगभग 2500 ऊँट थे। उन्होंने अपना सरदार उमैया बिन ख़लफ़ को बनाया था। मुहम्मद (सल्ल०) चलते हुए बवात नामक स्थान तक पहुँचे थे कि समाचार मिला कि कुरैश का क़ाफिला आगे जा चुका है। इसलिए मुडभेड़ की स्थिति नहीं बनी, आप शांतिपूर्वक वापस आ गए।

हज़रत मुहम्मद ने जमादिल ऊला 2 हिजरी में 200 मुहाजिरों की एक टुकड़ी बनाई और उनको लेकर अशीरा की ओर रवाना हुए, जहां

से कुरैश का क़ाफ़िला गुज़रने वाला था। आपने अबू सलमा बिन अब्दुल असद को मदीना का अधिपति नियुक्त किया। इस यात्रा में केवल 30 ऊँट थे और मुसलमान बारी बारी उनपर सवार होते थे। वहां पहुंच कर पता चला कि क़ाफ़िला आगे जा चुका है। यहां आप ने क़बीला बनू मुदलज से समझौता किया। संक्षेप में समझौता यह था कि युद्ध की स्थिति में मुसलमान बनू मुदलज की सहायता करेंगे, और बनू मुदलज मुसलमानों का साथ देंगे। उसके बाद आप मदीना लौट आए।

इस यात्रा के दस दिन बाद यह घटना घटी कि कुर्ज़ बिन जाबिर अल फेहरी ने मदीने की चरागाह पर रात के समय छापा मारा और बहुत से ऊंट और बकरियां लेकर भाग गया। इस घटना की जानकारी मिलते ही हज़रत मुहम्मद ने तुरन्त उसका पीछा किया और अपने साथियों के साथ सफवान तक उसके पीछे गए परन्तु वह वहां से निकल चुका था। इस लिए हज़रत मुहम्मद सफवान से मदीना वापस लौट आए। सूचना देर से मिलने के कारण कुर्ज़ के विरूद्ध समय पर कार्यवाई न की जा सकी।

रजब 2 हिजरी में हज़रत मुहम्मद ने मुहाजिरीन की एक टुकड़ी नख़ला की ओर भेजी। एक सहाबी कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने हमको एक सारिए में भेजने का निश्चय किया और कहा तुम्हारे ऊपर मैं एक ऐसे व्यक्ति को अमीर (सरदार) बनाऊँगा जो तुममें सबसे अधिक भूख और प्यास सहन करने वाला हो। अगले दिन आपने अब्दुल्लाह बिन जहश को इस टुकड़ी का सरदार बनाया।

मुहम्मद (सल्ल०) ने अब्दुल्लाह बिन जहश को एक बन्द पत्र दिया और कहा तुम लोग नख़ला की ओर दो दिन तक चलते रहो, जब दो दिन हो जाए तो पत्र खोल कर देखना, उन्होंने ऐसा ही किया। दो दिन के उपरांत जब अब्दुल्लाह बिन जहश ने पत्र खोला तो उसमें लिख था कि जब तुम मेरे इस पत्र को देखो तो चलते रहो, यहां तक कि तुम मक्का और तायफ के बीच नख़ला के स्थान तक पहुँच जाओ वहां पहुँच कर ठहर जाना। वहां से कुरैश की गतिविधियों पर नज़र रखो, और हमें

उन से सूचित करो।

अब्दुल्लाह बिन जहश ने इस पत्र को पढ़ कर कहा मैंने सुना और माना। यद्यपि आगे जाना ख़तरनाक था क्योंकि वहां से कुरैश की सीमा आरंभ होती थी, और उनसे मुडभेड़ होने का भय था, फिर भी वह पत्र के अनुसार अपने साथियों को लेकर आगे के लिए रवाना हो गए, यहां तक कि नख़ला पहुंच कर ठहर गए।

उस समय कुरैश का एक व्यापारिक क़ाफिला शाम से वापस होकर मक्का जा रहा था। मुसलमानों के दल में से एक व्यक्ति वाक़िद बिन अब्दुल्लाह ने कुरैश के क़ाफ़िले के सरदार अम्र बिन अल–हज़रमी को तीर मारा, यह तीर किसी संवेदनशील स्थान पर लगा और वह मर गया। इसके बाद वे लोग घबरा कर भाग गए। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि मुसलमानों की टुकड़ी जब मदीना पहुची और मुहम्मद (सल्ल०) को पूरी घटना की जानकारी दी गई तो उन्होंने कहा मैंने तुमको हराम महीनो (वो महीने जिसमें लड़ाई झगड़ा मना होता है) में इसलिए नहीं भेजा था कि तुम हत्या करो। अर्थात तुमको कुरैश के क्षेत्र में भेजने का तात्यपर्य यह था कि तुम उनकी गतिविधियों से हमें सूचित करो न कि कुरैश से युद्ध छेड़ दो।

इसके अतिरिक्त सरियों का एक उद्देश्य प्रचार होता था। बाद में मुहम्मद (सल्ल०) ने अधिकांश टुकड़ियां केवल प्रचार के उद्देश्य से भेजीं।

अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद ने अब्दुल्लाह बिन औफ को बुलाया और कहा कि यात्रा की तैयारी करो। उसके बाद अब्दुल्लाह बिन औफ अपने साथियों के साथ रवाना हो गए। वह शाम और मदीना के बीच दौमतुल जन्दल पहुंचे। उन लोगों को तीन दिन तक इस्लाम का संदेश देते रहे, तीसरे दिन अल–अस्बग़ बिन अम्र अल–कलबी ने इस्लाम क़बूल कर लिया। वह नसरानी थे और अपने समुदाया के सारदार थे।

अलबरा कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने ख़ालिद बिन वलीद को यमन के लोगों की ओर भेजा ताकि वहां इस्लाम का प्रचार करें। वे लोग 6 महीने तक उनके बीच रहे, प्रन्तु उनमें से किसी ने भी इस्लाम नहीं अपनाया। मुहम्मद (सल्ल०) को सूचना मिली तो आप ने उनके नाम एक पत्र भेजा, जब उनको आपका पत्र पढ़ कर सुनाया गया तो क़बीला हमदान के सारे लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। हज़रत मुहम्मद को जब यह सूचना दी गई तो आप सजदे में गिर पड़े और कहा क़बीला हमदान पर सलामती हो, क़बीला हमदान पर सलामती हो।

ईब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि मुहम्मद (सल्ल०) ने ख़ालिद बिन वलीद को नजरान की ओर भेजा। ख़ालिद बिन वलीद और उनके साथी ऊँटों पर सवार होकर उनकी बस्तियों में घूमते थे और कहते थे ऐ लोगो इस्लाम क़बूल करो सलामत रहोगे। इस आहवानपरक भ्रमण के प्रभाव से लोगों की अधिकांश संख्या ने इस्लाम कबूल कर लिया।

## fg t jr d ckn

मुहम्मद (सल्ल०) 13 वर्ष तक मक्का में एक ख़ुदा का प्रचार करते रहे। इस प्रचार से कुरैश की अनेकेश्वारवादी सोच पर चोट पड़ती थी इसलिए उन्होंने एकतरफा तौर पर हज़रत मुहम्मद को कष्ट देना शुरू कर दिया। यहां तक कि मक्का में आपके लिए रहना असंभव कर दिया। उस समय आप मक्का छोड़ कर मदीना चले आए।

हज़रत मुहम्मद मक्का में अपना सब कुछ छोड़ कर निकले थे। तब भी मक्का वालों ने आपका पीछा किया कि पकड़ कर आपकी हत्या कर दें। घटनाएं बताती हैं कि मक्का छोड़ने के उपरांत भी मक्का वाले आपको भूले नहीं। अब भी वे आपके विरूद्ध षडयंत्र रचते रहे। हर एक क्षण यह भय रहता कि वे लोग मदीने पर आक्रमण न कर दें।

इन परिस्थितियों को सामने रखते हुए हज़रत मुहम्मद ने मदीना

पहुंचने के पश्चात मुसलमानों की टुकड़ियां विभिन्न स्थानों पर भेजनी शुरु कीं। जिनको सराया कहा जातो है। इन सराया का उद्देश्य युद्ध नहीं था। इसलिए इन सराया के संबंध में सीरत की किताबों में इस प्रकार के शब्द लिखे हुए मिलते हैं कि इनमें युद्ध नहीं हुआ, इनमें मुडभेड़ नहीं हुई।

हिजरत के आरंभिक समय में अबवा, बवात, अशीरा नामक सराया पेश आए। इन सराया का विवरण सीरत की किताबों में इन शब्दों में आता है "इनमें कोई अन्सारी न था।" अन्सार को इन मुहिमों में शामिल न करने की नीति यह थी कि आप नहीं चाहते थे कि जो शत्रुता कुरैश और मुहाजिरीन के बीच स्थापित हो चुकी है, वह समय से पूर्व अन्सार के साथ हो जाए।

इन सराया का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इनका प्रारंभिक उद्देश्य दो था। प्रथम मक्का के निकटवर्ती समुदायों से संधि करना ताकि कुरैश को इन समुदायों से काटा जा सके, अर्थात कुरैश अपनी आक्रामक कार्यवाहियों में उनको अपना सहयोगी न बना सकें।

इन सराया का दूसरा उद्देश्य कुरैश की गतिविधियों की जानकारी लेना था। इसी लिए सरिया सफवान के सरदार को जो आदेश दिए गए थें उनका अनुवाद है "कुरैश की गतिविधियों को पता करना और उससे सूचित करना।"

इन सराया का तीसरा कारण वो घटना बनी जिसको मक्का वालों का मदीने पर पहला आक्रमण कहा जा सकता है। मुहम्मद (सल्ल०) के ग़ज़वः अशीरा से मदीना लौटने के लगभग दस दिन बाद कुरैश के एक सरदार कुर्ज़ बिन जाबिर अल–फिहरी ने मदीना की एक चरागाह पर छापा मारा और मुसलमानों के ऊंट और बकरियां ले भागा। (सीरत इब्ने हिशाम, भाग 2, पृष्ठ 238)

इस घटना को देखते हुए कुरैश के हौसलों को तौड़ना आवष्यक था। इसलिए हज़रत मुहम्मद ने कुरैश के व्यापारिक क़ाफिले पर टुकड़ियां

भेजीं। यह व्यापारिक क़ाफिले मदीना के निकट से होकर गुजरते थे। हज़रत मुहम्मद ने यह टुकड़ियां कुरैश के व्यापारिक क़ाफिले पर उनको सावधान करने के लिए भेजीं कि यदि तुम हमारी अर्थ व्यवस्था को नष्ट करना चाहते हो तो अपने आपको भी सुरक्षित मत समझो।

एक सरिया (अब्दुल्लाह बिन जहश) में ऐसा हुआ कि एक मुसलमान ने एक मुश्रिक (खुदा के साथ भागीदार मानने वाला) की हत्या कर दी। इससे कुछ लोगों को भ्रम हुआ। उन्होंने कहा मदीना पहुंच कर इस्लाम ने धैर्य का मार्ग छोड़ कर युद्ध का मार्ग अपना लिया है। इब्ने अलहज़रमी की हत्या जैसे कि इस बात की घोषणा हो कि अब इस्लाम की ओर से सशस्त्र मुक़ाबले का आरंभ हो चुका हो।

किंतु तथ्यों का विस्तार पूर्वक अध्ययन करने से इस प्रकार के मत का निराधार होना सिद्ध हो जाता है। वास्तविक्ता यह थी कि मुहम्मद (सल्ल०) ने रजब दो हिजरी में अब्दुल्लाह बिन जहश के नेत्रत्व में एक टुकड़ी नख़ला की ओर भेजी। इसमें बारह मुहाजिर थे। इनको रवाना करते हुए आपने सरिए के सरदार को एक आदेश पत्र दिया और कहा कि तुम इसको उस समय तक न खोलना जब तक कि तुम दो दिन की यात्रा पूरी न कर लो। यात्रा के दो दिन बाद इसको खोलना और जो कुछ इसमें लिखा है उसका पालन करना।

दो दिन के पश्चात जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने इस पत्र को खोला तो इसमें लिखा हुआ था– जब तुम मेरे इस पत्र को देखो तो चलते रहो यहाँ तक कि तुम मक्का और तायफ के बीच नख़ला पहुँच जाओ, वहां ठहर जाना और कुरैश की गतिविधियों से हमें सूचित करना।

इसी बीच कुरैश का एक व्यापारिक दल शाम से मक्का की ओर आ रहा था। टुकड़ी के एक व्यक्ति वाक़िद बिन अब्दुल्लाह ने दल के सरदार उमर बिन अल–हज़रमी को निशाना लगा कर तीर मारा। यह तीर किसी संवेदनशील जगह पर लगा और वह मर गया। जब यह लोग मदीना पहुंचे

और मुहम्मद (सल्ल०) को हत्या का ब्योरा दिया गया तो आप ने तुरन्त कहा कि मैंने तुमको माह हराम में किसी युद्ध का आदेश नहीं दिया था। यदि युद्ध उद्देश्य होता तो मैं तुमको क्या हराम महीने में भेजता।

## xTo% cnj Åyk
## ¼xTo% cnj iFke½

हिजरत के अंतिम दिनों में मक्का वालों ने मुहम्मद (सल्ल०) की हत्या का पूरा प्रयत्न किया। उनके बड़े–बड़े सरदारों ने एक संयुक्त बैठक बुलाई ताकि सर्वसम्मति से कोई अंतिम निर्णय लिया जा सके। बात–चीत के बीच यह सुझाव आया कि मुहम्मद (सल्ल०) को पकड़ कर कोठरी में बन्द कर दें ताकि उनकी मृत्यु हो जाए, दूसरा सुझाव था कि जलावतन कर दें। एक सुझाव यह था कि सारे समुदाय वाले एक साथ उन पर वार करें ताकि हत्या का आरोप सारे समुदाय में बंट जाए, और हाशिम परिवार हत्या का बदला न ले सके (सीरत इब्ने हेशाम)

कुरआन में इसका वर्णन इस प्रकार हैः और जब मुंकिर तुम्हारे बारे में तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीर कर रहा था, और अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है। (अल–अन्फालः 30)

अल्लाह की विशेष सहायता से मुहम्मद (सल्ल०) मक्का से मदीना आ गए। परन्तु अब यह साफ हो गया था कि कुरैश केवल विरोधी नहीं हैं। बल्कि वे इस्लाम और इस्लाम के मानने वालों का अंत कर देना चाहते हैं। यही कारण था कि हिजरत के बाद मुहम्मद (सल्ल०) अपने गुप्तचर दस्ते मक्का के निकटवर्ती क्षेत्रों में भेजते रहे ताकि कुरैश कोई जंगी योजना बनाएं तो उसकी पूर्व जानकारी प्राप्त हो सके। हिजरत के बाद मुहाजिरीन के जो भी सराया भेजे गए। अधिकतर उनका उद्देश्य कुरैश की आक्रामक गतिविधियों की जानकारी के लिए होता था।

अशीरा की मुहिम भी इसी प्रकार की थी जो हिजरत के दूसरे वर्ष

जमादिल ऊला के महीने में पेश आई। कुरैश के एक क़ाफ़िले का समाचार सुनकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) 200 मुहाजिरीन को लेकर अशीरा की ओर गए जो यंबूअ नामक स्थान के निकट स्थित है। परन्तु मुडभेड़ नहीं हुई। आप कुछ दिन बाद लौट आए। इसी यात्रा में आप ने बनू मुदलज समुदाय से वह मैत्री संधि की थी जिसका उल्लेख इतिहास की किताबों में है। (ज़रक़ानी 1, 196)

अशीरा से हज़रत मुहम्मद की वापसी के लगभग दस दिन बाद कुरैश की ओर से वो आक्रमण हुआ जिसकी आशंका थी। मक्का से कुरैश के एक सरदार कुर्ज़ बिन जाबिर अल–फेहरी ने एक टुकड़ी के साथ मदीने में मुसलमानों की चरागाह पर छापा मारा यह लोग रात्रि के समय मदीने में घुसे और बकरियां और ऊँट लेकर भाग गए। मुहम्मद (सल्ल०) को जब इस घटना की सूचना मिली तो तुरंत आपने साथियों की टुकड़ी लेकर उसका पीछा करते हुए सफवान नामक स्थान तक गए, परन्तु वे लोग जा चुके थे। आप सफवान से वापस लौट आए आगे नहीं गए। इस वजह से इसको ग़ज़्वः सफवान कहा गया है, और बद्र की जगह यहां से निकट है इसी लिए ग़ज़्वः बदर ऊला (प्रथम ग़ज़्वः बद्र) भी कहा गया। इस ग़ज़्वे पर जाते हुए हज़रत मुहम्मद ने अपने स्थान पर ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) को नियुक्त किया था।

कुर्ज़ बिन जाबिर कुरैश के सरदारों में से थे। बाद को उनको आपनी भूल का पछतावा हुआ, उनपर इस्लाम की सच्चाई खुल गई। उन्होंने मदीना आकर इस्लाम को अपना लिया।

मुसलमान होने के बाद उन्होंने बहुत सी इस्लामी सेवाऐं कीं। हज़रत मुहम्मद ने उरैनिय्यीन का पीछा करने के लिए एक टुकड़ी भेजी उसका अधीक्षक कुर्ज़ बिन जाबिर अल–फेहरी को बनाया।

## xTo% cnj lkfu;k
## ¼xTo% cnj f}rh;½

हिजरत के दूसरे वर्ष (623) रमज़ान के महीने में सीधे तौर पर पहला बाक़ायदा युद्ध हुआ। इस युद्ध को ग़ज़वः बद्र कहा जाता है, बद्र एक गांव का नाम था। जो मदीना से 80 कि० मी० की दूरी पर था। यह जंग इसी स्थान पर हुई थी। इसी कारणवश इसका नाम ग़ज्वः बद्र पड़ा। और यह इस स्थान पर रसूलुल्लाह की कुरैश के विरूद्ध दूसरी मुहिम थी इस लिए इसको ग़ज़वः बद्र द्वितीय कहा गया। उस समय मुसलमानों की संख्या कुरैश की तुलना में बहुत कम थी, और शस्त्र भी बहुत कम थे। परन्तु खुदा की विशेष सहायता से शत्रुओं के विरूद्ध मुसलमानों को ज़बरदस्त सफलता मिली। इसीलिए कुरआन में इस दिन को 'यौमुल फुर्क़ान' अर्थात सत्य और असत्य को अलग करने वाला दिन कहा गया।

मक्का में मुहम्मद (सल्ल०) लोगों को एक खुदा और आख़िरत (मरने के बाद का समय) का उपदेश देते रहे। कुरैश जिनकी हैसियत अरब के सरदार की थी उन्होंने आप पर और आपके साथियों पर हर प्रकार के अत्याचार किए यहां तक कि कुछ मुसलमानों की मार मार कर हत्या कर दी। परन्तु आप हर स्थिति को सहन करते हुए अपने प्रचार को शांतिपूर्ण ढंग से चलाते रहे।

जब कुरैश का अत्याचार बहुत अधिक बढ़ गया तो आपने अपने साथियों को मक्का छोड़कर मदीना जाने की अनुमति दे दी। उन्हों ने हज़रत मुहम्मद को बनू हाशिम वर्ग से निष्कासित कर दिया तब भी आप मक्का में ही रहे। अंततः मक्का वालों ने अपनी संयुक्त समीति बुलाकर यह निर्णय लिया कि आपका वध कर दिया जाए।

622 की एक रात को मक्का के सारे सरदारों ने तलवार लेकर आपके घर को घेर लिया। योजना यह थी कि प्रातः जैसे ही आप घर से बाहर

निकलें सब एक साथ आक्रमण कर के आपकी हत्या कर देंगे।

परन्तु मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह की सहायता से रात को घर से निकलकर सुरक्षित मदीना आगए।

इन सब घटनाओं ने कुरैश को पूर्णरुप से अत्याचारी सिद्ध कर दिया था। इसी लिए कुरान में पैग़म्बर के साथियों से कहा गयाः "क्या तुम उन से न लड़ोग जिन्होंने अपना वचन तोड़ा। और उन्होंने पैग़म्बर को उनके देश से जलावतन (exile) करने की चेष्टा की। और वही हैं जिन्होंने लड़ने में तुमसे पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे, बल्कि अल्लाह का ज़्यादा ह़क़ है कि तुम उससे डरो, अगर तुम मोमिन हो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उनको सज़ा देगा और उनको अपमानित करेगा। और तुमको उनपर विजय देगा और मोमिन के सीने को ठंडा करेगा। (अल–तौबाः 13.14)

पैग़म्बर और पैग़म्बर के साथियों ने अपना देश अपनी धन–संपत्ति सब मक्का में छोड़ कर मदीना आ गए। परन्तु कुरैश का हिंसात्मक रवय्या अब भी समाप्त नहीं हुआ। विभिन्न प्रकार से उनका ऊग्र रुप सामने आता रहता था। इस्लामी इतिहास में प्रथम ग़ज़्वः बद्र इसी कड़ी की एक घटना है।

अब कुरैश ने एक नई योजना बनाई कि पूरी तैयारी के साथ मदीने पर आक्रमण करके मुसलमानों की शक्ति को पूर्ण रुप से तोड़ दिया जाए। इस उद्देश्य के लिए मक्का के सारे समुदाया और परिवारों ने सांझी सम्पत्ति जमा की और फिर मक्का के एक अनुभवी व्यापारी अबू सुफयान बिन हर्ब के नेतृत्व में एक व्यापारिक क़ाफिला शाम भेजा गया। योजना यह थी कि व्यापार में जो लाभ हो उस धन से युद्ध की तैयारी की जाए।

हिजरत के दूसरे वर्ष रमज़ान के महीने में हज़रत मुहम्मद को यह सूचना मिली कि वह व्यापारिक क़ाफ़िला शाम से वापस होकर मक्का जा रहा है। उसके साथ एक हज़ार ऊँट हैं जिनपर व्यापारिक सामग्री लदी हुई है।

हज़रत मुहम्मद ने क़ुरैश की इस अनाचारी योजना को विफल करने का निश्चय किया कि इस क़ाफिले को बीच में पकड़ लें, और इस सामग्री को मक्का न पहुंचने दें। आप मुसलमानों की एक टुकड़ी लेकर क़ाफिले की ओर रवाना हुए।

सरदार अबू सुफयान को संदेह था कि कदाचित मुसलमान इस क़ाफ़िले को न रोक लें। इसलिए वह मार्ग में चलते लोगों से और यात्रियों से मदीना की स्थिति की जानकारी लेते रहते थे। कुछ यात्रियों द्वारा उनको यह समाचार मिला कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथियों के साथ क़ाफिले की ओर आ रहे हैं। उसके बाद अबू सुफयान ने ज़मज़म ग़िफ़ारी को मेहनताना (परिश्रमिक) देकर मक्का कहला भेजा कि तुरंत सहायता के लिए पहुंचो अन्यथा मुसलमान हमारे क़ाफ़िले को लूट लेंगे।

ज़मज़म ग़िफ़ारी ने मक्का पहुंचकर अपने कपड़े फाड़ डाले और चिल्ला चिल्ला कर मक्का वालों को बताया कि तुम्हारा क़ाफिला संकट में है तुरन्त उसकी सहायता के लिए दौड़ो। इस समाचार के मिलते ही सारे मक्का वाले आवेश में आ गए। क्योंकि इस व्यापारिक क़ाफिले में लगभग मक्का के सारे स्त्री पुरूष ने अपनी व्यवसायिक पूँजी लगा रखी थी। तुरन्त मक्का के एक हज़ार आदमी पूरे अस्त–शस्त्र के साथ अबू जहल के नेतृत्व में रवाना हो गए। इस सेना में मक्का के सारे सरदार अतिरिक्त अबू लहब के और युद्ध के योग्य सारे जवान शामिल थे।

मुहम्मद (सल्ल०) बारह रमज़ान को मदीना से चले, उस समय आप के साथ केवल 313 असहाब (मुहम्मद (सल्ल०) के साथी) थे। युद्ध सामग्री भी बहुत कम थी। केवल दो घोड़े और 70 ऊँट थे। एक ऊँट पर दो या तीन व्यक्ति बारी–बारी सवार होते थे। मुहम्मद (सल्ल०) की सवारी में अली बिन अबी तालिब और अबू लुबाबा शामिल थे। जब मुहम्मद (सल्ल०) के पैदल चलने की बारी आई तो दोनों ने कहा ऐ खुदा के रसूल आप ऊँट पर सवार रहें हम आप के स्थान पर पैदल चलेंगे। आपने कहा न ही तुम दोनों मुझसे अधिक सशक्त हो और न ही प्रतिफल में मैं तुम दोनों

की तुलना में बेपर्वा हूँ।

मुहम्मद (सल्ल०) ने स्थिति की समीक्षा के लिए अपने आदमी भेज रखे थे। जैसे ही आप सफरा नामक स्थान के निकट पहुंचे तो आपके गुप्तचर बुसबुस और अदी ने आकर सूचना दी कि कुरैश की सेना आपकी ओर चली आ रही है। इसके अतिरिक्त यह भी जानकारी मिली कि व्यापारिक क़ाफ़िला तेज़ी से मार्ग बदल कर आगे निकल गया। और मक्का की सीमा में प्रवेश कर गया। अबू जहल के नेतृत्व में मक्का से जो सेना चली थी वो अब अपने व्यापारिक क़ाफिले की ओर से निर्भय होकर मदीने की ओर बढ़ती चली आरही थी, ताकि मदीना पर आक्रमण करके उसको नष्ट कर दे।

मुहम्मद (सल्ल०) ने अब वह्य (खुदा द्वारा भेजा गया संदेश) द्वारा यह निर्णय लिया कि वो अबू जहल की सेना की ओर बढ़ें और अल्लाह पर विश्वास करके उसका मुक़ाबला करें।

मुहम्मद (सल्ल०) के पास 313 लोग थे उसमें मुहाजिरीन और कुछ अन्सार शामिल थे। मुहाजिरीन अपनी शपथ के अनुसार प्रत्येक स्थिति में आपकी सहायता के लिए वचनबद्ध थे, परन्तु अन्सार ने जो शपथ ली थी वह बैअत–निसा थी, उसके अनुसार यदि मदीना पर आक्रमण हो तो वे आपके साथ लड़ेंगे। परन्तु मदीने के बाहर इस बैअत के अनुसार वो लड़ने के लिए बाध्य न थे।

इसी कारणवश मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगें को जमा (इकट्ठा) किया और कहा "अब हमारा सामना कुरैश की फौजी ताक़त से है। इसलिए ऐसी स्थिति में तुम लोग मुझको सलाह दो।

इसके बाद हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर ने खड़े होकर कहा कि हम हर प्रकार के बलिदान के लिए तैयार हैं। मिक़दाद बिन असवद ने खड़े होकर कहा कि ऐ खुदा के रसूल, अल्लाह ने आपको जिस बात का आदेश दिया है उसको कर डालिए। हम सब आपके साथ हैं। खुदा

की क़सम, हम बनी इसराईल की तरह यह नहीं कहेंगे कि तुम और तुम्हारा रब जाकर लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं, बल्कि हम तो यह कहेंगे कि आप चलें और आप का रब भी, हम आपके साथ लड़ने के लिए हाज़िर (उपस्थित) हैं।

एक के बाद एक मुहाजिर इसी प्रकार उत्साहपूर्ण सहायता को व्यक्त करते रहे, इसके उपरांत आप अपनी बात को बार बार कहते रहे कि ऐ लोगो मुझको सलाह दो। इसके बाद साद बिन मुआज़ अनसारी खड़े हुए, उन्होंने कहा कि ऐ खुदा के रसूल कदाचित आपका संकेत विशेषतः हमारी ओर है। आप ने कहा हाँ। तत्पश्चात साद बिन माज़ ने अनसार का नेत्रत्व करते हुए कहाः

ऐ खुदा के रसूल, हम आपके ऊपर ईमान लाए और आपकी पुष्टी की और यह गवाही दी कि आप जो धर्म लाए हैं वह सत्य है। और उस पर हम समअ और ताअत (सुन्ना और मान्ना) का वचन दे चुके हैं। ऐ खुदा के रसूल, आप मदीने से एक और चीज़ के लिए निकले, और अल्लाह ने एक और स्थिति उत्पन कर दी, अब आप जिस से चाहें संबंध तोड़ें जिस से चाहें संबंध जोड़ें। जिस से चाहे संधि करें जिस से चाहें शत्रुता करें। हमारी संपत्ति में से जो चाहे आप ले लें। और धन का जो भाग आप लेंगे वह हमको उस से अधिक प्रीय होगा जो आप हमको देंगे। केवल आदेश दीजिए हम आपके अधीन हैं। यदि आप चलें यहां तक कि बर्क ग़म्माद तक पहुंच जाएं तो भी हम आपके साथ अवश्य जाऐंगे। उस हस्ती की क़सम जिसने आपको सच्चाई के साथ भेजा है, यदि आप हमको समुद्र में जाने को कहेंगे तो हम उसमें चले जाएंगे और हम में से कोई भी पीछे नहीं रहेगा। शत्रु का सामना करना हमारे लिए कोई अप्रीय बात नहीं। हम युद्ध में जमे रहने वाले लोग हैं। और हम मुक़ाबले के समय सच्चे सिद्ध होने वाले हैं, और संभवता खुदा हमसे आपको वो दिखाए जिससे आपकी आँखें ठंडी हों। बस अल्लाह पर भरोसा करके हमको लेकर चलिए।

मुहम्मद (सल्ल०) इस उत्तर को सुनकर अति प्रसन्न हुए, और कहा अल्लह के भरोसे पर चलो। तुम्हारे लिए शुभ समाचार है। और अल्लाह ने वादा (promise) किया है कि वह अवश्य हमें विजयी करेगा।

मुहम्मद (सल्ल०) उस दिशा की ओर आगे बढ़े जिस ओर से मक्का वालों की सेना आ रही थी। आप बदर नामक स्थान के निकट पहुँच कर एक जगह ठहर गए। इसका अर्थ यह था कि दूसरा दल यदि बढ़ते हुए यहां तक पहुंच जाए तो हम युद्ध के लिए तैयार हैं और यदि वे लोग यहां तक न पहुंचें और बीच से लौट जाएं, तो हम भी मदीना लौट जाऐंगे।

उस समय आपके एक साथी हब्बाब बिन मुन्ज़िर आपके पास आए। इस प्रकार की परिस्थितियों का उन्हें अनुभव था। उन्होंने कहा कि ऐ खुदा के रसूल इस स्थान का चयन वह्य (खुदा का संकेत) द्वारा है या आपका अपना विचार है। आप ने कहा अपना विचार है। इसके बाद उन्होंने कहा कि ऐ खुदा के रसूल फिर तो यह स्थान उचित नहीं। उन्होंने इसका स्पष्टिकरण दिया कि यह स्थान युद्ध के दृष्टिकोण से अनुचित है। मुहम्मद (सल्ल०) ने उनके स्पष्टिकरण को माना और कुछ आगे बढ़कर दूसरे स्थान पर पड़ाव डाला।

हज़रत मुहम्मद जंग की परिस्थितियों में दूसरे पक्ष के हालात जानने का प्रयास करते थे। इसी लिए इस अवसर पर भी आप ने कुछ लोगों को सूचना लाने के उद्देश्य से आगे भेज रखा था। वो कुरैश के दो लोगों को पकड़ कर ले आए जो उनको एक चशमे (कुंड) पर मिल गए थे। उनका कार्य पानी भरना था। दोनों हज़रत मुहम्मद के समक्ष प्रस्तुत किए गए। आपने उनसे प्रश्न किया कि कुरैश के जो लोग मक्का से निकले हैं, उनकी संख्या कितनी है। उन्होंने बताने से इन्कार किया। तब हज़रत मुहम्मद ने प्रश्न बदल कर पूछा कि अच्छा यह बताओ कि वे लोग खाने के लिए प्रति दिन कितने ऊँट ज़बह करते हैं। उन्होंने उत्तर दिया किसी दिन नौ और किसी दिन दस। यह सुनकर आपने कहा उनकी संख्या नौ

सौ से हज़ार के बीच है।

उसके बाद कुरैश की सेना जो लगभग एक हज़ार थी, बढ़ते हुए बदर नामक स्थान पर पहुंच गई। यहीं पर दोनों के बीच वो युद्ध हुआ जिसको ग़ज़वः बद्र कहा जाता है। उस समय पैग़म्बर इस्लाम अरीश (छप्पर) में थे। युद्ध से पूर्व आप ने बहुत रूद्धकंठ से अल्लाह से प्रार्थना की, इस अवसर पर आपकी ज़बान से जो शब्द निकले उनमें से एक यह थाः

"ऐ अल्लाह यह कुरैश हैं जो घमंड और अहंकार में निकले हैं उनके मुक़ाबिले पर हमारी सहायता कर। उस समय एक फरिश्ता (angel) आपके समक्ष प्रकट हुआ। उसने कहा ऐ मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह ने आपको सलाम भेजा है। आपने कहा अवश्य वह सलामती है और उससे सलामती है और उसकी की ओर सलामती है (अल बिदायह वन निहायह, 3/367)

अबू जहल के नेत्रत्व में मक्का से जो मुश्रिकीन की सेना आई थी उसमें अधिकांश लोग ऐसे थे जो रसूलुल्लाह से लड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने अबू जहल को युद्ध से रोकना चाहा और वापस लौट जाने को कहा। परन्तु अबू जहल अपनी हठ पर अड़ा रहा। इसी कारणवश दोनों प्रतिद्वंदियों के बीच सशस्त्र युद्ध हुआ। यद्यपि मुसलमानों की संख्या 313 थी, परन्तु अल्लाह की विशेष सहायता से यह लोग विजयी हुए। मुसलमानों में से 14 व्यक्ति इस युद्ध में शहीद हुए। और दूसरी ओर मुश्रिकीन में से 70 आदमी मारे गए और 70 को बन्दी बना लिया गया। उनमें अधिकांश लोग मक्का के सरदार थे। बद्र की जंग के अधिकतर क़ैदी ऐसे लोग थे जिनकी गणना उस समय के शिक्षित लोगों में थी। हज़रत मुहम्मद ने घोषणा कर दी कि उनमें से जो व्यक्ति मदीना के दस लोगों को शिक्षित कर दे उसे मुक्त कर दिया जाएगा। इस प्रकार कई लोगों ने मुसलमानों को शिक्षित करके स्वंय को मुक्त कराया। हज़रत मुहम्मद के कातिब (सेक्रेटरी) हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी पहले शिक्षित नहीं थे उन्हों ने भी बद्र के कैदियों से लिखना पढ़ना सीखा था यहां तक कि वह

आप के विशेष कातिब बन गए। और यही थे जिन्होंने हज़रत अबू बक्र के कार्यकाल में कुरआन की संपूर्ण कापी तैयार की। और फिर यही थे जिन्होंने हज़रत उसमान के कार्यकाल में कई और कापियां तैयार कीं।

उस समय मदीने में क़ैदियों को रखने के लिए कोई स्थान नहीं था। आप ने उसकी व्यवस्था इस प्रकार की कि इन क़ैदिया को विभिन्न मुसलमानों के सपुर्द कर दिया। और कहा उनको अपने घरों में रखो। इस संदर्भ में आप ने आदेश दिया कि इन कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार किया करो। उसके बाद सहाबा (companions) का यह हाल हुआ कि जिनके पास जो क़ैदी थे वह पहले उन क़ैदियों को खाना खिलाते और बाद में स्वंय खाते। यदि खाना न बचता तो स्वंय केवल खजूर पर गुज़ारा करते। इस अच्छे व्यवहार का परिणाम यह हुआ कि उनमें से अधिकतर क़ैदियों ने बाद में इस्लाम कबूल कर लिया।

बद्र के कुछ क़ैदियों ने मदीना के कुछ लोगों को शिक्षित करके मुक्ति पाई। कुछ निर्धन लोगों से यह वचन लेकर मुक्त कर दिया गया कि वे मुसलमानों के मुक़ाबले पर नहीं आएंगे, और कुछ लोगों के परिवार वाले मक्का से आए और उनका फिदया (जुर्माने की राशि) दे कर अपने क़ैदियों को वापस ले गए।

इन्हीं क़ैदियों में एक सुहैल बिन अम्र भी थे, वह उच्चस्तरीय कवी और वक्ता–विषयक भी थे। वह सभाओं में मुहम्मद (सल्ल०) की निन्दा करते थे। और अपनी कविताओं में आप पर दोष लगाते और अपकी भर्त्सना करते थे। हज़रत उमर फारुक़ ने कहा कि ऐ खुदा के रसूल मुझे अनुमति दीजिए कि मैं सुहैल के नीचे के दांत उखेड़ दूँ ताकि उसकी आवाज़ खराब हो जाए और वह आपके विरूद्ध बोलने की स्थिति में न रहे। आपने कहा ऐ उमर छोड़ दो, कदाचित खुदा तुमको उनके द्वारा कोई खुशी दिखाए। कहते हैं कि सुलह हुदैबिया उन्हीं के प्रयासों का परिणाम थी, जो इस्लाम के लिए बहुत बड़ी विजय सिद्ध हुई। बाद को मक्का की

विजय के समय उन्होंने भी इस्लाम कबूल कर लिया।

एक वर्णन के अनुसार जब हज़रत उमर ने यह बात मुहम्मद (सल्ल०) से कही तो आप ने उत्तर दिया कि ऐ उमर, मैं इस प्रकार किसी का मुसला (विकृत) नहीं कर सकता वरण मुझे भय है कि खुदा मेरा मुसला कर देगा, यद्यपि मैं खुदा का रसूल हूँ। —सीरत इब्ने हेशाम

मुहम्मद (सल्ल०) के निधन के पश्चात जब अरब वर्गों में इरतेदाद (धर्म से फिर जाना) फैलने लगा उस समय सुहैल बिन अम्र की भाषण विषयक विशषेता बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। उन्हों ने अरब वर्ग में बहुत प्रभावकारी भाषण दिए और उनके विरोध को शांत किया।

## xTo% dj dj ry dnj

“k0oky 2 fg t jh

ग़ज़वः बद्र से लौटने के बाद आपको यह सूचना मिली कि सुलैम और ग़तफान आपके विरूद्ध इकट्ठा हो रहे हैं। आप 200 लोगों को लेकर उनकी ओर रवाना हुए। आप चलते हुए उस स्थान पर पहुँचे जिसको चश्मा कुदर कहा जाता है। उन लोगों का उद्देश्य विशेषतः युद्ध नहीं था बल्कि छापा मारना था। इसलिए जब उन्हें ज्ञात हुआ कि पैग़म्बर इस्लाम को इस अतिक्रमण की सूचना मिल चुकी है और वे अपने साथियों को लेकर उनकी ओर आ रहे हैं तो वे लोग वापस लौट गए। आप चश्मा कुदर पर तीन दिन रूके उसके बाद बिना किसी मुडभेड़ के वापस लौट आए।

## xTo% cuh dudkv

“k0oky 2 fg t jh

यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम बनी क़ैनुक़ाअ जाति से था। इस जाति के लोगों की वीरता और पौरुष प्रसिद्ध था। इनके अधिकतर लोग सुनार थे। पैग़म्बर इस्लाम उनके बाज़ार में गए और उन लोगों को

इकट्ठा करके इस्लाम का संदेश दिया। आप ने कहा ऐ यहूद वर्ग तुम लोग अल्लाह से डरो। बद्र में जिस प्रकार कुरैश खुदा की पकड़ में आ गए, ऐसा न हो कि तुम भी उसी प्रकार खुदा की पकड़ में आ जाओ। इस्लाम स्वीकार करो, तुम निश्चित रुप से जानते हो कि मैं खुदा का पैग़म्बर हूँ। इसको तुम अपनी किताब में पाते हो और अल्लाह तुम से इसका वचन ले चुका है।

यहूद इस वक्तव्य को सुनकर भड़क गए। उन्होंने कहा इससे पहले आपका मुक़ाबला एक अयोग्य और अज्ञान जाति से था जिसपर आप विजयी हो गए। खुदा की क़सम हम से आपका मुक़ाबला हुआ तो आप जान लेंगे कि हम वीर हैं।

पैग़म्बरे इस्लाम जब मक्का छोड़ कर मदीना आए थे तो वहां की यहूदी जातियों बनू क़ैनुक़ाअ, बनू कुरैज़ा, और बनू नज़ीर से संधि हुई थी कि हम आपसे न युद्ध करेंगे और न आपके शत्रु को किसी प्रकार की सहायता देंगे। परन्तु क़ैनुक़ाअ वर्ग समझौते का उल्लंघन कर युद्ध के लिए तैयार हो गया। यह यहूदी मदीना के निकटवर्ती क्षेत्र में रहते थे। इस सूचना के उपरांत मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीना में अपने स्थान पर अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुन्ज़िर अन्सारी को नियुक्त किया और बनी क़ैनुक़ाअ की और कूच कर गए।

यहूद ने क़िले के भीतर जाकर उसके द्वार बन्द कर लिए। पैग़म्बर इस्लाम ने 15 शव्वाल से जीक़ादा तक उनका घेराव किया। अंततः वे लोग दो सप्ताह के बाद क़िले से उतर पड़े। आपने उनकी हत्या का आदेश नहीं दिया वरण यह कहा कि आवश्यक सामग्री लेकर वहां से चले जाएं।

## xTo% lohd

## 2 ftfYgTtk

ग़ज़्वए बदर की पराजय के पश्चात उनके बचे हुए लोग जब मक्का

पहूँचे तो मक्का में उनकी असफलता का खूब चर्चा हुआ। अबु सुफियान जो मक्का के सरदार थे, उन्होने सौगंध ली की जब तक मैं मुसलमानों पर आक्रमण करके उन से प्रतिशोध न ले लूं तब तक स्नान नहीं करूँगा।

इसलिए वह दो सौ सवारों को लेकर आक्रमण के इरादे से मदीने की ओर चल पड़े। यह लोग अरीज़ नामक स्थान तक पहुँचे जो कि मदीने से तीन मील की दूरी पर है, यहाँ पहुँचकर यह लोग एक खजूर के बाग में घुसे, वहाँ दो व्यक्ति बाग के कामों में लगे हुए थे उनमें एक अनसार था दूसरा श्रमिक, उनलोगों ने दोंनो का वध कर दिया और कुछ वृक्षों को जला डाला और समझा की हमारा प्रतिशोध पूरा हो गया। और वहीं से वह लोग लौट गए। पैग़म्बर इस्लाम को जब इस घटना की सूचना मिली तो आप दो सौ मुसलमानों के साथ अबु सुफियान का पीछा करने के लिये निकले परन्तु आपके पहुँचने से पूर्व वह लोग वहाँ से जा चुके थे। जाते समय वो लोग अपने सत्तू (baked grain powder) के कुछ थैले छोड़ गये थे, वो मुसलमानों को मिल गये। इसी कारण इस ग़ज़्वह का नाम ग़ज़्वए सवीक़ पड़ गया, अर्थात सत्तु वाला ग़ज़्वह।

9 ज़िल्हिज्जा को पैग़म्बर (सल्ल०) ग़ज़्वए सवीक से मदीना वापस आ गये और दस ज़िल्हिज्ज को ईदुलअजहा की दो रकात नमाज मुसलमानों के साथ अदा की। और दो मेढ़ें कुर्बान कीं। और मुसलमानों को कुर्बानी का आदेश दिया। यह इस्लाम की प्रथम ईदुलअज़हा थी।

## fookg l;nk Qkfrek

### 2 fgtjh

2 हिजरी में पैग़म्बरे इस्लाम ने अपनी पुत्री सैयदा फातिमा का विवाह अली बिन अबी तालिब से किया। हज़रत अली कहते हैं कि जब मैं ने विवाह का संदेश देने का इरादा किया तो मन में विचार आया कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। विवाह के लिये कुछ तो होना आवश्यक है। जब हज़रत मुहम्मद के सामने यह बात आई तो आपने मुझसे प्रश्न

किया कि क्या तुम्हारे पास महर (वो राशि जो इस्लाम में लड़के की ओर से लड़की के लिये तय की जाती है) में देने के लिये कोई वस्तु है। मैने कहा नहीं। आप ने प्रश्न किया वो ज़िरह (युद्ध में पहना जाने वाला लोहे की ज़ंजीरों से बना पहनावा) जो तुम्हें बदर के युद्ध में मिली थी, कहाँ है? मैने कहा वो तो मेरे पास है। आप ने कहा वही ज़िरह फातिमा को तुम महर में दे दो।

हज़रत अली ने इस ज़िरह को 480 दिरहम में हज़रत उसमान को बेच दिया। और राशि लाकर हज़रत मुहम्मद को दे दी। पैग़म्बर इस्लाम ने कहा इस से इत्र (सुगंधित द्रव) तथा कपड़े की व्यवस्था कर लो। मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी पुत्री को जहेज़ में जो सामान दिया, वो था– एक साधारण रज़ाई, चमड़े का मामूली गद्दा जिसमें वृक्ष के पत्ते भरे हुए थे। चक्की, पानी की मश्क तथा दो मिट्टी के घड़े। (मुस्नद अहमद)

## xTo% xrQku
## ekgjle 3 fgt jh

मोहर्रम 3 हिजरी में मुहम्मद (सल्ल०) को मदीने में यह सूचना मिली कि बनी सअलबा तथा बनी मुहारिब नज्द में इकट्ठा हो रहे हैं। उनकी योजना मदीना के निकटर्वती क्षेत्रों में छापा मारने और सामान लूटने की है। दासूर ग़तफानी इनका सरदार था। इस सामाचार के मिलते ही, हजरत मुहम्मद, सहाबा का एक दल ले कर ग़तफान की ओर चल पड़े। मदीने में उसमान बिन अफ़्फ़ान को अपने स्थान पर नियुक्त किया। उस समय आप के साथ 450 साथी थे। कबीला ग़तफान के लोगों को जब आपके आने का सामाचार मिला तो वह लोग पहाड़ों की ओर चले गये। केवल एक व्यक्ति पकड़ में आया। आप ने उसको इस्लाम की दावत दी। उसने इस्लाम कबूल कर लिया।

सफ़र का पूरा महीना आप यहीं रूके रहे, परन्तु कोई मुकाबले

पर नहीं आया। आप बिना किसी मुडभेड़ के वापस लौट आये।

इस यात्रा से वापसी में आप एक अवसर पर एक वृक्ष की छाया में अकेले विश्राम कर रहे थे। उस वक़्त मुशरिकीन में का एक व्यक्ति उध ार से गुज़रा। वह आपको एकान्त में देखकर आपके पास आया। उसके हाथ में एक तलवार थी। उसने कहा ऐ मुहम्मद तुम को मुझ से कौन बचाएगा। आप ने उत्तर दिया, अल्लाह! उसके बाद उसने तलवार रख दी और आप के पास बैठ गया। आप ने अपने हाथ में तलवार ले ली और कहा की अब बताओ तुमको मुझसे कौन बचाए। उसने कहा आप बेहतर तलवार लेने वाले हैं। फिर मुहम्मद (सल्ल०) ने उस व्यक्ति से यह वचन लेकर छोड़ दिया की वो भविष्य में आपके मुकाबले में नहीं आएगा।

## xTo% u t jku
## jchmL lkuh 3 fg t jh

हिजरत के तीसरे वर्ष 3 रबिउस्सानी को मदीना में आपको यह सूचना मिली कि नजरान नामक स्थान पर बनी सलीम मुसलमानों के विरूद्ध इकट्ठा हो रहे हैं। इस सामाचार के मिलते ही हजरत मुहम्मद तीन सौ आदमियों के साथ नजरान के लिये रवाना हो गये, और जाने से पहले मदीना में अपने स्थान पर अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को नियुक्त कर दिया। उन लोगों को जब आपके आने का सामाचार मिला तो उन्होने अपना इरादा बदल दिया और इधर–उधर हो गये। आप लगभग दस दिन तक नजरान में ठहरे, उसके बाद मदीना वापस लौट आए।

## xTo% mgn
## 'k0oky 3 fg t jh

मक्का से हिजरत करने के बाद मक्का वालों की आक्रमक गतिविधियों के कारण निरंतर उनसे झड़पें होती रहीं। इन्ही में से पहली

बड़ी घटना ग़ज़्वः बद्र थी। जिसमें मक्का वासियों को ज़बरदस्त पराजय का सामना करना पड़ा था। इस पराजय के बाद वो शांत नहीं हुए, बल्कि उनके बदले की भावना और प्रबल हो गई। यहाँ तक कि वो युद्ध हुआ जिसे ग़ज़्वए उहद कहा जाता है।

बदर के समय कुरैश की उस सेना से मुडभेड़ हुई थी जो अबू जहल के नेतृत्व में मक्का से निकली थी। कुरैश का दूसरा दल वो था जिसकी स्थिति व्यापारिक क़ाफ़िले की थी। यह काफिला अबू सुफयान के नेतृत्व में शाम (Syria) से आ रहा था। यह क़ाफिला सुरक्षित मक्का पहुँचने में सफल हो गया था।

इस व्यापारिक काफ़िले में मक्का वालों ने मिलजुल कर पचास हजार की धन–राशि लगा रखी थी। इससे लगभग दूना लाभ प्राप्त हुआ। अब मक्का के सरदार अबू सुफयान बिन हर्ब, अबदुल्लाह बिन अबी रबीआ और इकरमा बिन अबी जहल इत्यादि, दारूलनदवा (मक्का की चौपाल) में इकट्ठा हुए। आपसी सलाह–मशवरा से यह तय पाया कि इस व्यापार की मूल राशि लोगों को लौटा दी जाए, और लाभ को मदीना के विरुद्ध फौजी कार्यवाही में प्रयोग किया जाए। इस लक्ष्य को लेकर विषेश रूप से तैयारियाँ की गईं। यहाँ तक कि पूर्णरूप से हथियारबंद होकर तीन हजार की सेना पाँच शव्वाल को अबू सुफयान के नेतृत्व में मदीना की ओर रवाना हुई। यह हिजरत का तीसरा वर्ष था।

पैगम्बर इस्लाम को अपने कुछ सूत्रों द्वारा कुरैश की इस फौजी कार्यवाही की सुचना मिली। आप ने स्थिति की समीक्षा के लिये मदीना से दो व्यक्ति भेजे जिनका नाम था अनस और मूनिस।

इन दोनों ने वापस आकर यह सामाचार दिया कि कुरैष की सेना मदीना के निकट आ चुकी है। उसके बाद आपने हब्बाब बिन मुन्ज़िर को भेजा ताकि वह सेना की तादाद (संख्या) का अनुमान लगाऐं, उन्होंने आकर संख्या के संदर्भ में पूरी जानकारी दी।

तत्पश्चात आपने बचाव की तैयारियाँ आरंभ कर दीं, और साथियों को ईकट्ठा करके उनसे सलाह ली। वृद्ध साथियों का कहना था कि नगर के भीतर रहकर मुक़ाबला किया जाए। परन्तु युवा मुसलमानों का कहना था कि नगर से बाहर निकलकर मुकाबला किया जाए। स्वंय हजरत मुहम्मद (सल्ल०) भी इसी राय से सहमत थे कि मदीने में बंद होकर मुकाबला किया जाए। अबदुल्लाह बिन उबैय ने भी यही कहा मदीना एक किले जैसा है। इतिहास बताता है कि जब भी मदीना वासियों ने मदीने में रहकर मुकाबला किया तो वो विजयी हुए और जब मदीना से बाहर निकले, तो सफल न हो सके।

कुछ लोगों का कहना था कि यदि हम मदीने में रहकर बचाव करते हैं तो शत्रु हमें कायर समझेगा। मुहम्मद (सल्ल०) जब मदीना से बाहर निकले तो उनके साथ एक हजार लोग थे परन्तु मतभेद के कारण अबदुल्लाह बिन उबैय के नेतृत्व में तीन सौ लोग बीच में अलग हो गए। उन्होंने कहा हमारी बात मानी नहीं गई इस कारणवश हम इसमें भाग नहीं ले सकते। अब हज़रत मुहम्मद के साथ केवल सात सौ लोग शेष रह गए।

उहद की जंग दोपहर बाद आरंभ हुई और शाम तक समाप्त हो गई। एक ओर से सात सौ मुसलमान थे दुसरी ओर मक्का की सेना जिसमें लगभग तीन हजार लोग थे। इस सेना में मक्का की महिलाऐं भी थीं जो रज्ज़िया अश्आर (युद्ध के मैदान में सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये कविताऐं) पढ़ती थीं। उन्में कुछ महिलाओं के नाम यह हैं– हिन्दा बिन्त उत्बा, उम्मे हकम बिन्त हारिस, फातिमा बिन्त वलीद, बरज़ा बिन्त मसऊद, रीतह बिन्त शैबा, सुलाफा बिन्त साद, खन्नास बिन्त मालिक और अमरा। इनमें से खन्नास तथा अमरा बुतप्रस्ती पर ही रहीं शेष ने इस्लाम कबूल कर लिया।

मक्का के लोगों ने पाँच व्यक्तियों को अपनी सेना का सरदार बनाया था। उनमे खालिद बिन वलीद, अम्र–बिन–अलआस, इकरमा बिन

अबी जहल, सफवान बिन उमय्या, अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ। उहद के अवसर पर यह लोग बहुत बहादुरी और शक्ति से मुसलमानों के विरूद्ध लड़े। परन्तु बाद को उनकी सोच में परिवर्तन आ गया उन पाँचों ने इस्लाम कबूल कर लिया।

युद्ध आरंभ हुआ तो मुसलमान अल्पसंख्यक होने के उपरांत विजयी रहे। उन्होंने विरोधी दल के बहुत से लोगों को मार गिराया। ऐसे अवसर पर भी वो इस्लामी नियमों पर बने रहे। उदाहरणतः अबू दोजाना सहाबी तलवार लेकर विरोधी सेना में घुस गए और मारना शुरू कर दिया। इसी बीच एक महिला (हिन्दा) उनके सामने आ गई, परन्तु जैसे ही उन्होंने देखा वो एक महिला है, उसके हाथ में तलवार नहीं है वो केवल क्रोध और घृण ाा की भावना प्रबल करने वाली कविताऐं पढ़ रही है। यह देखकर उन्होंने अपनी उठी हुई तलवार रोक ली। क्योंकि जंग के मैदान में महिलाओं और जो युद्ध न कर रहें हों उनको मारना इस्लामी नियम के विरूद्ध है।

उहद की जंग में, आरंभ में मुसलमानों की जीत हुई। परन्तु बाद को जीत पराजय में परिर्वतित हो गई। उसका कारण यह था कि मैदान जंग में उहद पर्वत के एक ओर एक घाटी थी। जंग की स्थिति में जिसका विशेष महत्व था। हजरत मुहम्मद ने यहाँ मुसलमानों की एक टुकड़ी तैनात की और आदेश दिया कि तुम किसी भी स्थिति में यहाँ से न हटना। परन्तु जब उन लोगों ने देखा कि जंग में मुसलमानों को विजय प्राप्त हो गई है तो वह लोग घाटी को छोड़ कर बाहर आ गये। खालिद जो उस समय मुशरिकों के सरदार थे, उन्होंने इस भूल से लाभ उठाया और घाटी में दाखिल होकर पीछे से मुसलमानों पर आक्रमण कर दिया। यह आकास्मिक आक्रमण मुसलमानों के लिये इतना घातक सिद्ध हुआ कि विजय दोबारा पराजय में बदल गई।

इस युद्ध में हजरत मुहम्मद के चाचा हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब भी शहीद हो गये। उनको मारने वाला, मक्का का एक दास था। उसका

नाम वहशी बिन हर्ब था। उसकी मुसलमानों से कोई शत्रुता नहीं थी। उसने केवल स्वंय को मुक्त कराने के लिये अपने मालिक के कहने पर ऐसा किया। बाद को वह अपने किये पर लज्जित हुआ और आप के पास आकर इस्लाम ग्रहण कर लिया। उस समय एक व्यक्ति ने आप से कहा कि ऐ खुदा के रसूल यह वही व्यक्ति है जिसने आपके चाचा हमज़ा की हत्या की थी। आपने कहा इसको छोड़ दो एक व्यक्ति का इस्लाम ग्रहण करना मुझे एक हज़ार ग़ैर–मुस्लिम (खुदा का इन्कार करने वालों) की हत्या करने से अधिक प्रिय है।

इस युद्ध में जब प्रतिपक्ष सेना ने पीछे की ओर से आक्रमण किया तो मुसलमानों के पांव उखड़ गये। यहाँ तक कि केवल थोड़े लोग आपकी सुरक्षा के लिये आपके निकट रह गये। स्थिति का लाभ उठा कर विरोधी आपके समिप आ गये। उस समय आप ने ऊँचे स्वर में कहा कि कौन है जो हमारे लिये अपनी जान बेच दे वो जन्नत में हमारे साथ होगा। इस स्वर को सुनकर आपके साथियों की बड़ी संख्या दौड़ पड़ी, और आपको अपने घेरे मे ले लिया। जिसके चलते विरोधियों को आप के ऊपर तलवार से आक्रमण करने का अवसर न मिल सका। परन्तु उन्होंने आपकी ओर कई पत्थर फेंके जिस से आपके मुख पर अत्यधिक चोंटें आईं तथा खून बहने लगा। उस समय आपकी जुबान से निकलाः उस क़ौम को कैसे भलाई मिलेगी जो अपने नबी को खून से लिप्त कर दे अग्रचे कि वो उनको उनके रब की ओर बुला रहा था।

आपके मुख से यह शब्द निकले तो उसी समय खुदा की ओर से एक फरिशता यह आदेश लेकर आ गया कि इस मामले मे तुम्हारा कोई हस्तक्षेप नहीं, अल्लाह या तो उनकी माफी कबूल करेगा या अज़ाब देगा। (आले ईमरानः 128)

एक और वर्णन के अनुसार जब मोम्मद (सल्ल०) ज़ख्मी हो गए तो आपने विरोधियों के कुछ सरदारों के नाम लेकर उनकी हलाकत की

दुआ (खत्म करने की प्रार्थना) मांगी जैसे सफवान बिन उमय्या, सुहैल बिन अम्र और हारिस बिन हेशाम। इतनी अधिक शत्रुता के उपरांत अल्लाह ने इसका समर्थन नहीं किया। और पैग़म्बर को अपशब्द कहने से रोका। इसकी हिकमत बाद में सामने आई। क्योंकि बाद को इन सारे सरदारों ने इस्लाम ग्रहण कर लिया और इस्लाम की शक्ति बने।

जब हजरत मुहम्मद को अल्लाह की ओर से सचेत किया गया तो आपने तुरंत अपना तरीका बदल दिया। अब आप उनके विनाश की दुआ के स्थान पर उनके मार्गदर्शन की कामना करने लगे। अब उनके लिए आपकी ज़बान पर यह शब्द थे– ऐ मेरे रब, मेरी क़ोम को क्षमा कर ,क्योंकि वो नहीं जानते। (सही मुस्लिम)

मुहम्मद (सल्ल०) जब ज़ख़्मी हुए और आपके शरीर से काफी खून निकल गया तो उस समय आप ने एक गुफा में शरण ली कुछ समय के लिए आप लोगों को दिखाई नहीं दिये। यहाँ तक कि यह शोर मच गया कि आप शहीद हो गए हैं। ऐसे में काब बिन मालिक की दृश्टि आप पर पड़ी। वो आप के पास आए और चाहा कि ऊँची आबाज़ से कहे कि ऐ मुसलमानो, खुश हो जाओ कि रसूलुल्लाह यहाँ पर हैं। रसूलुल्लाह ने उनको इशारे से मना किया क्योंकि ऐलान की स्थिति में भय था कि विरोधियों को पता लगने से और कोई नई समस्या न खड़ी हो जाए।

युद्ध के अंतिम चरण में जो घटनाऐं सामने आईं उनमें से एक यह है कि विरोधि सेना का एक सरदार पहाड़ी पर खड़ा हुआ, उसने कहा ''हुबल ऊँचा हो हुबल ऊँचा हो।'' पैग़म्बर इस्लाम ने हज़रत उमर से कहा इसके उत्तर में यह कहो ''अल्लाह ही बड़ा और ऊँचा है।'' विरोधि सेना के सरदार ने दोबारा कहा ''हमारे पास अज़्ज़ा है तुम्हारे पास अज़्ज़ा नहीं है।'' हज़रत मुहम्मद ने दोबारा कहा तुम इस प्रकार उत्तर दो '' अल्लाह हमारा सहायक है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है। ''

फिर विरोधी सेना के सरदार ने अंत में कहा ''यह दिन बदर के दिन

का उत्तर है। और लड़ाई डोल के समान है। कभी ऊपर कभी नीचे।'' यह सुनकर हज़रत उमर ने उत्तर दिया कि ''हम और तुम एक समान नहीं। हमारे जो लोग मारे गए वो जन्नत में हैं तुम्हारे लोग जो मारे गए वो आग में हैं।''

इस युद्ध में मुसलमान पराजित हो गए और उनके बहुत से लोग शहीद हुए तो विरोधी दल ने उनके शरीर का अपमान किया। उनके कान और नाक काटे और इस प्रकार उनकी शक्ल बिगाड़ कर खुशी मनाई। परन्तु युद्ध के बाद जब विरोधी सेना के सरदार अबू सुफयान की भेंट हज़रत उमर से हुई तो उस समय अबू सुफयान ने हज़रत उमर से कहा ''खुदा की क़सम न मैंने इसका आदेश दिया और न मैने इससे रोका।''

ग़ज़्वः उहद में कुछ मुसलमान महिलाऐं भी शामिल थीं। हजरत अनस कहते हैं कि उहद के दिन मैंने हज़रत आयशा और अपनी माँ उम्म सलीम को देखा कि कपड़े समेटे हुए पानी की मश्क में पानी भर भर कर अपनी कमर पर रख कर लाती थीं और युद्ध स्थल पर लोगों को पानी पिलाती थीं। जब मश्क खाली हो जाती तो दुबारा उसे भर कर लाती थीं।

इसी प्रकार हजरत उमर का कहना है कि अबू सईद खुदरी की माँ उम्मे सलीत भी उहुद के दिन हमारे लिए मश्क में पानी भर–भर कर लाती थीं। रबीअ बिन मुअव्वज़ का कहना है कि हम लोग ग़ज़वात में मुहम्मद (सल्ल०) के साथ जाते थे कि लोगों को पानी पिलाऐं और घाव पर पट्टी करें तथा जो लोग मारे गए हों उनको उठा कर लाऐं। परन्तु हम लोग जंग नहीं करते थे।

उम्मे अतिया का कहना है कि हम लोग ग़ज़्वात में मरीज़ों की देख रेख और घायलों के उपचार के उद्देश्य से जाते थे। इन महिलाओ ने केवल लोगों को पानी पिलाया और घायलों की देख–रेख की, युद्ध नहीं किया। परन्तु उम्म अम्मारा ने जब देखा कि इब्न क़मिय्या, हज़रत मुहम्मद पर आक्रमण कर रहा है तो ऐसी स्थिति में उन्होंने आगे बढ़ कर

मुकाबला भी किया।

ग़ज़्वा उहद में 70 सहाबा (हज़रत मुहम्मद के साथी) शहीद हुए। कफन–दफन के समय सामान की कमी अर्थात निर्धनता के कारण बहुत ही दुःखद और शीक्षाप्रद घटनाऐं सामने आईं। जैसे कि मुसअब बिन उमैर को कफन पहनाया जाने लगा तो पता चला कि जिस चादर में दफनाना था वो तो छोटी थी सर ढ़ाकते तो पैर खुल जाता, पैर ढांकते तो सर खुल जाता अंत में मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा ''सर ढ़ांक दो और पैर पर घास डाल दो''।

उहुद के दिन शहीदों को स्नान कराए बिना ही दफन किया गया। कुछ लोगों ने अपने शहीदों को मदीना ले जाने की इच्छा प्रकट की हज़रत मुहम्मद ने असहमति प्रकट की और निर्देश दिया कि जहाँ शहीद हुए हैं वहीं दफन किए जाऐं।

## xTo% gejk vy&vln

### 'k0oky 3 fgt jh

उहुद की जंग मदीना से 3 मील की दूरी पर उहुद नामी पर्वत की तराई में हुई थी। इस युद्ध में मुसलमान पराजित हुए थे। युद्ध समाप्त होने के बाद कुरैश की सेना मक्का की ओर चल पड़ी। लौटते समय उनलोगों ने हमरा–अलअसद नामक स्थान पर पड़ाव डाला।

हज़रत मुहम्मद का तरीक़ा था कि आप सदैव अपने गुप्तचर भेजा करते थे ताकि प्रतिद्वंदी दल का समाचार मिल सके। इस लिए जंग उहद के बाद जब कुरैश की सेना लौटने लगी तो आपने अपने गुप्तचर भी साथ भेज दिए। आपके गुप्तचर जब हमरा अल–असद तक पहुँचे तो उनको पता चला कि कुरैशी सेना के सरदार अबू सुफयान और दुसरे सरदार यह कह रहे हैं कि ''हम से बड़ी भूल हुई जब हमने मुसलमानों को पराजित किया था तो आगे बढ़ कर मदीना में घुस जाना चाहिए था

ताकि मुसलमानों के केंद्र में जाकर उनकी शक्ति को पूर्णतया कुचल देते।'' मुहम्मद (सल्ल०) के गुप्तचरों को जैसे ही यह जानकारी मिली वह तीव्रगति से आपके पास आए और आपको कुरैश के इस नए इरादे से अवगत कराया।

उसके बाद मुहम्मद (सल्ल०) ने तुरंत यह निर्णय लिया कि इससे पूर्व कि कुरैश मदीने पर कोई कार्यवाही करे हमें उनपर हमला बोल देना चाहिए। सहाबा उस समय यद्यपि थके हुए थे उसके उपरांत वह तैयार हो गए। आप सहाबा को लेकर हमरा—उलअसद की ओर चल पड़े। यह यात्रा अनियमित तौर पर पूरे ऐलान के साथ की गई। मुसलमान पूरे रास्ते अल्लाहु अकबर के नारे लगा रहे थे। ग़ज्वः हमरा अल—असद का उद्देश्य जंग नहीं था बल्कि कुरैश को भयभीत करना था ताकि वो मदीना की ओर बढ़ने का साहस न करें। अतः वापस लौट जाऐं।

और हुआ भी ऐसा ही। कुरैश को माबद खुज़ाई द्वारा यह सूचना मिली कि मुसलमानों की सेना अल्लाहु अकबर के नारों के साथ उनकी ओर बढ़ रही हैं तो उन्होंने समझा कि कदाचित मुसलमानों को कोई फोजी सहायता पहुँच गई है और वो अपनी हार का बदला लेने के लिए उनकी ओर आ रहें हैं। उन्होंने आपस में कहा हमको तीव्रगति से मक्का पहुँच जाना चाहिए ताकि यदि मुकाबला हो तो मक्का में हो। हज़रत मुहम्मद के गुप्तचर निरंतर आप को सुचना दे रहे थे। जब आपको यह समाचार मिला कि कुरैश कि सेना मक्का की ओर चल पड़ी है तो आपने मुसलमानों से कहा अब मदीना लैट चलो क्योंकि हमारा जो उद्देश्य था वो प्राप्त हो गया।

## lfj;k vfc lyek vCnYykg fcu vCny vln egjle 4 fgtjh

मुहम्मद (सल्ल०) का तरीक़ा स्वंय जंगी कार्यवाही करने का न था।

परन्तु जब आपको सूचना मिलती कि विरोधी दल आक्रमण करने वाला है तो आप तत्काल कार्यवाही करते । इस प्रकार की जिन मुहिमों में आप स्वंय शामिल रहे उनको ग़ज़्वः कहा गया और जिन मुहिमों में आपने अपने किसी साथी को सरदार बना कर भेजा उसको विशेषतः सरीया कहा गया।

हिजरत के चौथे वर्ष मुहर्रम दिनांक एक को आपको सूचना मिली कि खुवैलिद के बेटे तुलैहा एवं सलमा मुहम्मद (सल्ल०) से मुकाबला करने के लिए अपने लोगों को इकट्ठा कर रहे हैं। तो आपने अबू सलमा बिन अब्दुल्लाह को 150 मुहाजिरीन और अनसार के साथ मुकाबले के लिए भेजा। वो लोग इस सूचना के मिलते ही भाग गये।

तुलैहा बिन खुवैलिद ने बाद को इस्लाम क़बूल कर लिया। परन्तु हजरत मुहम्मद के निधन के पश्चात इस्लाम से फिर गये। अबू बक्र सिद्दीक़ ने उनसे मुकाबला करने के लिए ख़ालिद बिन वलीद को भेजा तुलैहा भाग कर शाम चले गए। परन्तु बाद में पश्चाताप हुआ और दोबारा इस्लाम अपना लिया। और मुसलमानों के साथ मुहिमों में बराबर शामिल रहे। हज़रत उमर के शासन काल में जंग–क़ादसिया और मारका निहावन्द में भी साथ रहे। कहा जाता है मारका निहावन्द में शहीद हुए। तुलैहा के दुसरे भाई सलमा मुसलमान नहीं हुए।

## j thv dh ?kVuk
## lQj 4 fg t jh

अज़ल और कारा क़बीले के कुछ लोग मुहम्मद (सल्ल०) के पास आए और कहा कि हमारे समुदाय ने इस्लाम कबूल कर लिया है। कुछ ऐसे लोग हमारे साथ कर दीजिये जो हमको कुरान पढ़ायें और इस्लाम के आदेशों की शिक्षा दें। आपने मदीना के दस मुसलमानों को उनके साथ कर दिया। और आसिम बिन साबित को उनका मुखिया बना दिया।

उन्होंने मुसलमानों से छल किया। यह लोग जब रजीअ नामक स्थान पर पहुँचे जो मक्का और मदीना के बीच स्थित है। उस समय उन्होंने बनू

लेहयान को सूचित कर दिया, बनू लेहयान अपने दो सौ आदमी जिनमें एक सौ तीरअंदाज़ (तीर चलाने वाले) थे लेकर मुसलमानों के पीछे लग गये। जब वह लोग निकट आ गये तो हजरत आसिम अपने साथियों सहित एक पहाड़ी पर चढ़ गये। उसके बाद दोनों में मुकाबला हुआ, जिसमें दस मुसलमान शहीद हुए। यह दुर्घटना सफ़र 4 हिजरी की है।

## lfj¸;r|y d|jk vFkkr fcvj eÅuk dh ?kVuk

सफर चार हिजरी में दूसरी घटना यह हुई कि आमिर बिन मालिक अबुलबरा आप के पास आया। आपने उसको इस्लाम का संदेश दिया, परन्तु अबुलबरा ने न तो इस्लाम अपनाया न ही अनुचित ठहराया, बल्कि उसके स्थान पर यह कहा कि यदि आप अपने कुछ लोग इस्लाम के प्रचार के उद्देश्य से नजद की ओर भेजें तो मैं आशा करता हुँ कि वह लोग इस्लाम के संदेश को मान लेंगे। आपने कहा मैं नजद वासियों से आशंकित हुँ। अबुलबरा ने कहा मैं जमानत देता हुँ। मुहम्मद (सल्ल०) ने 70 साथियों को जो कुर्रा (कुरान पढ़ कर सुनाने वाले) कहलाते थे उनके साथ भेज दिये। मुन्ज़िर बिन अम्र साइदी को उनके ऊपर मुखिया बना दिया, यह लोग दिन को लकड़ियां चुनते थे और शाम को बेच कर असहाब सुफ्फा के लिए खाना लाते थे।

यह लोग यहाँ से चलकर बैर मऊना नामक स्थान पर रूके। चलते समय हज़रत मुहम्मद ने एक पत्र उस वर्ग के मुखिया आमिर बिन तुफैल के नाम लिख कर हज़रत अनस के मामा हराम बिन मिलहान को दिया। जब यह लोग बिअ्र मऊना पहुँचे तो हराम बिन मिलहान आपका पत्र लेकर आमिर बिन तुफैल के पास गए। आमिर बिन तुफैल ने पत्र देखने से पुर्व ही एक व्यक्ति को उनकी हत्या के लिए इशारा किया उसने उनके पीछे से एक नेज़ा (lance) मारा जो शरीर को पार कर गया और बनू आमिर को बाक़ि बचे दुसरे सहाबा की हत्या के लिए प्रेरित किया। परन्तु आमिर के चाचा अबुलबरा के संरक्षण देने के कारण बनू आमिर ने

सहायता देने से इनकार कर दिया।

आमिर बिन तुफ़ैल जब उनसे निराश हो गया तो बनू सलीम से सहायता मांगी। असिय्या, रअल और ज़क्वान वर्ग सहायता देने के लिए तैयार हो गए और सबने मिलकर लगभग सारे सहाबा को निरपराध शहीद कर डाला।

## xTo% cuh u thj
## jchmy v0oy 4 fgtjh

उमर बिन उमय्या ज़मरी जब बेर–मऊना से वापस लौट रहे थे तो बनू आमिर के दो बुतप्रस्त साथ हो लिए। वो क़नात नामक स्थान पर पहुंच कर एक बाग़ में विश्राम के लिए रूके जब दोनों सो गए तब उमर बिन उमय्या ज़मरी ने प्रतिषोध में उन दोनां का वध कर डाला और मदीना पहुँच कर मुहम्मद (सल्ल०) को सारी घटना का विवरण दिया। आपने कहा हमारी उनसे संधि है उनको दियत (compensation) देना आवश्यक है।

बनी नज़ीर भी क्यों कि बनू आमिर के साथ संधि में शामिल थे, इस लिये संधि के अनुसार दियत का कुछ भाग उनके ज़िम्में भी आता था। इसी परिवेश में हज़रत मुहम्मद कुछ साथियों के साथ बनू नज़ीर के पास गए। बनू नज़ीर ने उपरी तौर पर प्रसन्नता दिखाई और दियत में भाग लेने का वचन दिया। परन्तु उन्होंने आपस में सलाह करके यह तय किया कि एक व्यक्ति ऊपर से भारी पत्थर मुहम्मद (सल्ल०) के ऊपर गिरा दे ताकी आप इसमें दब कर मर जाऐं।

मुहम्मद (सल्ल०) अभी बैठे ही थे कि वही (ख़ुदा द्वारा भेजा गया संदेश) द्वारा आपको उनके षडयंत्र के बारे में सूचित किया गया। आप तुरंत वहाँ से उठकर मदीना लौट आए। और बनू नज़ीर पर आक्रमण का आदेश दिया। आपने अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम को मदीना का कार्यभार सोंपा और स्वंय बनू नज़ीर की ओर चल पड़े और जाकर उनका घेराव

कर लिया। बनू नज़ीर अपने किले में घुस गये और उसके द्वार बन्द कर लिये। बनू नज़ीर के विश्वास घात और वचन–भंजन के कारण आपने उनपर आक्रमण का आदेश दिया। 15 दिनो तक उनको घेरे में रखा और उनके वृक्षों के काटे जाने और बाग़ों के जलाने का आदेश दिया। अंतः उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

आपने कहा दस दिन का समय है मदीना खाली कर दो। जंगी सामान के अतिरिक्त जितना सामान ऊँटों और सवारियों पर ले जा सकते हो ले जाओ इसकी अनुमति है। यहूद के साथ यह मामला उनकी पवित्र किताब तौरात के अनुसार किया गया। क्योंकि तौरात में विश्वासघात का दंड देष निकाला है।

## xTo% tkrjfjdkv
## tekny&Åyk 4 fgtjh

ग़ज़्वः बनू नज़ीर के बाद रबीउल–अव्वल के महीने से लेकर जुमादुल ऊला महीने के आरंभ तक हज़रत मोहम्मद मदीना में ही रहे। शुरू जमादिल ऊला में आपको यह सूचना मिली कि बनी मुहारिब और बनी सअलबा आप से मुकाबला करने के लिए सेना इकट्ठी कर रहे हैं। आप ने चार सो साथियों  के साथ नजद की ओर प्रस्थान किया। हज़रत मुहम्मद जब वहाँ पहुँचे तो ग़तफान समुदाय के कुछ लोग मिले, परन्तु युद्ध नहीं हुआ। मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों को सलात अल खौफ (डर के वक़्त की दुआ और नमाज़) पढ़ाई। इब्ने साद कहते हैं कि ज़ातुररिक़ाअ एक पहाड़ का नाम है। इस ग़ज़्वः के समय आप इसी स्थान पर रूके थे इसी कारणवश इस ग़ज़्वः का नाम ज़ातुर्रिक़ाअ पड़ गया।

वापसी में हज़रत मुहम्मद ने एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया और अपनी तलवार पेड़ से लटका दी। एक बुतप्रस्त उधर आ गया उसने आपकी तलवार हाथ में लेकर खड़ा हो गया। उसने पूछा ऐ मुहम्मद,

तुमको मेरे हाथ से कौन बचाएगा। आप ने कहा कि अल्लाह, उसके बाद उसने तलवार रख दी। अब आपने तलवार हाथ में लेकर कहा तुमको मुझसे कौन बचाएगा। वो घबरा गया। आपने उसको इस्लाम के बारे में बताया, उसने कहा अब से मैं आपके विरूद्ध युद्ध नहीं करूँगा। कुछ समय के बाद उसने इस्लाम अपना लिया।

## xTo% cnj ekbn

### 'kkcku 4 fg t jh

ग़ज़्वः ज़ातुर्रिक़ाअ से वापसी के बाद रजब के महीने के अंत तक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मदीने में रहे। उहद से वापस लौटते हुए अबू सुफयान ने कहा था कि आगामी वर्ष बदर के स्थान पर मुकाबला होगा। इसलिये हज़रत मुहम्मद 1500 साथियों के साथ बदर रवाना हुए। बदर पहुँच कर आठ दिन अबू सुफयान की प्रतिक्षा की। अबु सुफयान और मक्का वासी मर्रे–ज़हरान नामक स्थान तक आए, परन्तु मुकाबले का साहस नहीं कर पाए और यह कह कर लौट गये कि यह वर्ष अकाल और मंहगाई का है। युद्ध और संग्राम का नहीं। हज़रत मुहम्मद आठ दिन की प्रतिक्षा के बाद बिना किसी मुडभेड़ के वापस लौट आए।

## xTo% nwerqy& tUny

### jchmy v0oy 5 fg t jh

माह रबीउल अव्वल 5 हिजरी में आप को यह सूचना मिली की दौमतुल जन्दल के लोग मदीना पर आक्रमण करना चाहते हैं। आप एक हज़ार सहाबा के साथ दौमतुल जन्दल की ओर रवाना हुए। वह लोग समाचार मिलते ही भाग गए और आप बिना किसी मुडभेड़ के वापस आ गए। इस तरह की सभी मुहीमों का उद्देश्य यही था। वास्तव में यह मुहिमें युद्ध के लिए नहीं वरन् विपक्षी दलों को भयभीत करने के लिए होती थी। ताकी उन लोगों का हौसला टूट जाए और युद्ध कि स्थिति उत्पन्न न हो।

## xTo% ej; lhv ;k cuh&vy eLryd

'kkcku 5 fgtjh

हज़रत मुहम्मद को मदीने में यह सूचना मिली कि बनी अल मुस्तलक़ के सरदार हारिस बिन अबी ज़ुरारा ने एक बड़ी सेना इकट्ठा की है और योजना मुसलमानों पर आक्रमण करने की है। आपने बुरैदा बिन हसीब असलमी को वास्तविकता जानने के लिये भेजा। बुरैदा ने सामाचार के सत्य होने की पुष्टि की। तब हज़रत मुहम्मद ने अपने साथियों को तैयारी का आदेश दिया। सहाबा तुरंत तैयार हो गये। तीस घोड़े साथ लिये जिनमें दस मुहाजिरों के थे और बीस अनसार के थे। मदीने में ज़ैद बिन हारिस को अपने स्थान पर नियुक्त किया। और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा और उम्मे सलमा को साथ लेकर मुकाबले के लिये प्रस्थान किया। इसमें मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई। इस अवसर पर एक घटना हुई। यात्रा के बीच पानी के एक कुंड पर मुहाजिर और अनसार के बीच विवाद हो गया। उस समय मुहाजरीन ने ऐ मुहाजिर और अनसार ने ऐ अनसार कहकर अपने लोगों को आवाज़ लगाई। हज़रत मुहम्मद ने जब यह आवाजें सुनी तो कहा यह अज्ञानता की आवाजें कैसी। लोगों ने आपको स्थिति से अवगत कराया। आप ने कहा '' इन से बचो यह गंदी और बदबुदार हैं।''

## b¶d okyh ?kVuk

इफ़्क वाली घटना भी इसी यात्रा में पेश आई। हजरत आयशा इस यात्रा में साथ थीं। वापसी मे सेना मदीना के निकट एक स्थान पर विश्राम करने के लिये रूकी। हजरत आयशा आवश्यकता पुर्ति के लिये सेना से कुछ दूर चली गईं, वापसी में उनकी माला टूट कर गिर गई, उसको खोजने में देर हो गई। इस बीच सेना को चलने का आदेश दे दिया गया। होदज के पर्दे गिरे हुए थे, लोगों को अनुमान हुआ की हजरत आयशा

अन्दर हैं, इसलिये उन्होंने हौदज को ऊँट पर रखा और चल पड़े। जब हजरत आयशा लौट कर आईं तो वहाँ कोई न था। वो उसी स्थान पर चादर लपेट कर लेट गईं।

सफवान बिन मुअत्तल जो काफिले की गिरी पड़ी वस्तुओं को उठाने के लिये पीछे रहा करते थे। नियमानुसार वहां आए। उन्होंने हजरत आयशा को पहचान लिया उनको देखकर इन्ना–लिल्लाह–व–ईन्ना इलैह–राजिऊन (सब कुछ अल्लाह के सुपुर्द) पढ़ा। हजरत आयशा कहती हैं ''खुदा की कसम सफवान ने मुझसे कोई बात नहीं की, और मैंने उनके मुख से ईन्ना–लिल्लाह के अतिरिक्त कोई और शब्द नहीं सुना।

हजरत सफवान ने अपना ऊँट लाकर हजरत आयशा के निकट बिठाया। हजरत आयशा उसपर बैठ गईं। और हज़रत सफवान ऊँट की नकेल पकड़ कर चल पड़े, यहां तक कि अपनी सेना से जा मिले। जब मुनाफिकी़न (मन में खोट रखने वालों) को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने लोगों का ध्यान इस ओर केंद्रित कर हज़रत आयशा को बदनाम करना शुरू कर दिया।

इस घटना से मदीना में एक हंगामा की स्थिति उत्तपन्न हो गई। अंततः कुरआन में सूरह अल–नूर उतरी जिससे हज़रत आयशा की स्थिति स्पष्ट हो गई और हंगामा ख़त्म हुआ।

## xTo% [kUnd ;k xTo% vgTkkc

'k0oky 5 fgt jh

इस ग़ज़्वः का कारण यह बना कि बनू नज़ीर समुदाय को देश निकाला दिये जाने के बाद, उनका यहूदी सरदार हुयइ बिन अख़तब मक्का गया। और वहाँ के लोगों को हज़रत मुहम्मद के विरूद्ध जंग के लिए उभारा। और कनाना बिन रबी ने जाकर बनी ग़तफान को आपके विरूद्ध मुकाबले के लिए भड़काया और लालच दिया कि ख़ैबर के बाग़ों

में जितनी खजूरें आऐंगी, प्रतिवर्ष उसका आधा हम तुमको दिया करेंगें। यह सुनकर वह लोग तैयार हो गए, कुरैश पहले से ही तैयार थे।

इस प्रकार अबू सुफयान के नेतृत्व में दस हज़ार से अधिक लोगों की सेना इकट्ठा हो गई। इन सबने मिलकर मदीने की ओर कूच किया। हज़रत मुहम्मद को जब यह सुचना मिली, तो आपने अपने साथियों से विचार–विमर्श किया। सलमान फारसी ने ख़न्दक (खाई) खोदने के तरीके की सलाह दी। आप ने इस प्रस्ताव को पसन्द किया। और दस–दस आदमियों पर दस–दस गज़ ज़मीन (भूमि) बाँट दी गई। सहाबा के साथ स्वंय हज़रत मुहम्मद भी खाई खोदने में शामिल थे।

यद्यपि खाई का यह तरीक़ा अरबों के लिए नया था। परन्तु जंग से बचने की उत्तम तदबीर थी। इसी कारणवश आपने इसको पसंद किया। मुसलमान खाई खोदकर पूरा ही कर पाए थे कि कुरैश दस हज़ार से अधिक आदमियों की सेना लेकर मदीना आ पहुँचे। जब इन लोगों ने बाहर खाई देखी तो आश्चर्यचकित रह गए, अतः खाई के बाहर पड़ाव डाल दिया। तीन सप्ताह तक यही स्थिति बनी रही, परन्तु आमने–सामने की लड़ाई नहीं हुई। केवल एक या दो तीर चलाने की घटना हुई।

ग़ज़्वः ख़न्दक इस्लाम के इतिहास में सबसे अधिक विशम थी। कुरआन में इसके बारे में है ''कि जब तुम्हारे ऊपर शत्रु चढ़ आए ,ऊपर से और निचे से और आँखें पथरा गईं, कलेजे मुहँ को आ गए और तुम अल्लाह के बारे में तरह तरह के अनुमान लगाने लगे। उस समय ईमान वालों की परिक्षा ली गई। वो बुरी तरह हिला मारे गए। (सुरह अल–अहज़ाब)''

हिजरत के बाद यहूद का क़बीला बनू नज़ीर अपने षडयंत्रों के कारण मदीना से निकाला गया, उसके बाद वो विभिन्न बड़े–बड़े वर्गों में गए। और मुसलमानों के विरूद्ध उनको खूब भड़काया। यहाँ तक की मदीने पर चढ़ाई करवाने के लिए कुरैश, बनू फ़ज़ारा, गतफ़ान, और हुज़ैल वर्गों को एक जुट करने में सफल हो गया, इसके फलस्वरूप दस हज़ार से ऊपर

सेना ने मदीने को घेर लिया, और मदीने के भीतरी भाग में रहने वाला यहूदी भी उनके साथ हो गया। मदीने में मुसलमानों की कुल संख्या तीन हज़ार थी जिनमें से अच्छी ख़ासी संख्या उन मुनाफ़िक़ीन (मन में कपट रखने वाले लोग) की थी जो विश्वास के पात्र नहीं थे।

इस अवसर पर हज़रत मुहम्मद ने जो जंगी उपाय अपनाया अरब उससे अभी तक परिचित नहीं थे। मदीने की खुली दिशा की ओर खाई खोद दी गई थी। तीन सप्ताह तक इस घेराव के समय इसी ने दोनों के बीच रोक का काम किया था। इस्लाम के विरोधियों की सेना अभी मदीने में घुस नहीं पाई थी कि एक भीशण आँधी आई जिससे विरोधियों के तंबु उखड़ गए। और कंकड़ीयाँ आ–आ कर उनके मुख पर लगने लगीं। उनके चुल्हे बुझ गए और बर्तन ज़मीन पर जा गिरे। घोड़े रस्सी तोड़ा कर भागने लगे। इन सारी घटनाओं से शत्रु की सेना बौखला गई। यहाँ तक कि विवश होकर उन्होंने युद्ध का विचार बदल दिया, और वापस लौट गए। उस समय परिस्थतियाँ इतनी विकट थीं कि हज़रत मुहम्मद के एक साथी मुअत्तब बिन कुशैर के मुख से यह निकल गया कि,''मुहम्मद हमें आश्वासन देते हैं कि हमें शासकों के राजकोष मिलेंगे, आज हमारा एक व्यक्ति अपने आपको इतना भी सुरक्षित नहीं पाता कि वो शौचालय चला जाए'' (सीरत इब्न हिशाम, भाग 3, पृष्टः 138)

एक ओर इतनी विकट परिस्थितियाँ थीं, ठीक उसी समय यह घटना घटी, कि जब मुसलमान ख़न्दक खोद रहे थे, एक भारी चट्टान उनके सामने आ गई, जिस पर उनकी कुदाल काम नहीं कर रही थी। उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को इस बारे में बताया। आप चट्टान के पास आए, कुदाल अपने हाथ में ली और बिस्मिल्लाह कहकर उस पर चोट मारी वो पहली ही बार में एक तिहाई टुट गई। आप ने फरमाया : ''अल्लाहु–अकबर मुझे शाम की कुंजियाँ दे दी गईं।'' फिर दोबारा कुदाल मारी तो दुसरा तिहाई भाग टुट गया। आप ने कहा ''अल्लाहु –अकबर मुझे फारस (Persia) की

कुंजियाँ दे दी गईं। खुदा की कसम मैं मदाईन (Midian) के किलों को देख रहा हुँ।'' फिर आप ने तीसरी कुदाल मारी तो चट्टान का षेश भाग भी टुट गया। आप ने कहा ''अल्लाहु–अकबर मुझको यमन (Yemen) की कुंजियाँ दे दी गईं। खुदा की क़सम मैं इस स्थान से सनआ के दरवाज़े देख रहा हुँ।'' (सीरत ईब्न कसीरः 194)

इस घेराबन्दी के समय गतफान परिवार के एक सम्मानित व्यक्ति नुऐम बिन मसऊद पैग़म्बर इस्लाम के पास आए और इस्लाम कबूल कर लिया, और कहा अभी मेरे इस्लाम लाने का चर्चा नहीं हुआ है, यदि आप अनुमति दें तो कोई उपाय करूँ। आप ने अनुमति दे दी और कहा ''युद्ध नाम है तदबीर और जोड़–तोड़ करने का।''

नुऐम बिन मसूद ने कुछ ऐसा उपाय किया कि कुरैश और बनू कुरैज़ा में फुट पड़ गई। बनू नज़ीर ने कुरैश की सहायता से हाथ खींच लिए, और इसी के साथ तीव्रगति की हवा चली। इस प्रकार अल्लाह ने मुश्रिकीन के मन में भय डाल दिया, उनके पाँव उखड़ गए। अंततः विरोध ी निराश होकर वापस लौट गए।

## xTo% cuw dqjSt+k

## thdknk 5 fgtjh

ग़ज़्वः ख़न्दक़ के समाप्त होने के बाद मुहम्मद (सल्ल०) ने उसी दिन बनू कुरैजा़ पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया। बनू कुरैज़ा पर चढ़ाई का मूल कारण उनका विद्रोह था। बनू कुरैज़ा और मुहम्मद (सल्ल०) के बीच संधि थी। जब कुरैश दस हजार की सेना लेकर मदीने पर आक्रमण करने के लिए आए तो बनू कुरैज़ा मुहम्मद (सल्ल०) से संधि तोड़ कर कुरैश के साथ जा मिले। जब ग़ज़्वः अहज़ाब में उनको पराजय का मुंह देखना पड़ा तो बनू कुरैज़ा क़िलों में घुस गए। आपने अपने साथियों को आदेश दिया कि अतिशीघ्र बनू कुरैज़ा के स्थान तक

पहुँचने की चेष्टा करें। इसी अवसर पर आपने कहा था की कोई व्यक्ति बनू कुरैज़ा की बस्तियों में पहुँचने से पुर्व असर की नमाज़ न पढ़े। फिर हजरत अली को झंडा देकर रवाना किया।

उसके बाद हज़रत मुहम्मद ने स्वंय वहाँ पहुँचकर बनू कुरैज़ा का घेराव कर लिया। यह घेराव 25 दिन तक चला। इस लंबे घेराव के बाद अंततः वो बात करने के लिए तैयार हो गए, कि जो हजरत मुहम्मद आदेश दें, हमें स्वीकार होगा। आप ने उनको यह संदेश भेजा ''कि क्या तुम इसपर सहमत हो कि तुम्हारा निर्णय तुम में का ही एक व्यक्ति करे।'' उन्होने कहा की हाँ या रसूलुल्लाह, साद बिन मआज़ जो निर्णय करें वो हमें स्वीकार होगा। इस लिए साद बिन मुआज़ को बुलाया गया, आप ने कहा साद उन लोगों ने अपना फैसला तुम्हें सौंपा है।

हजरत साद ने तौरात (The Old Testament) के अनुसार, यह निर्णय दिया कि उनके लड़ने वालों का वध कर दिया जाए, महिलाओं और बच्चे दास बना लिये जाऐं और उनकी सारी संपत्ति मुसलमानों में बाँट दी जाए।

## lfj;k egEen fcu efLyek vulkjh ¼jftÆ½ egjZe&vygjke 6 fgtjh

हज़रत मुहम्मद ने 10 मूहर्रम 6 हिजरी को तीस सवारों की एक टुकड़ी मुहम्मद बिन मुस्लिमा अनसारी की अध्यक्षता में क़रता नामक स्थान की ओर भेजी। प्रतिद्वंदियों से मुडभेड़ हुई और मुसलमान विजयी हुए।

इस सरिया में मुसलमानों ने बनी हनीफा वर्ग के मुखिया सुमामा बिन उसाल को बन्दी बना कर हज़रत मुहम्मद के पास पेश किया। आप ने उनको मस्जिद के खम्बे से बाँधे जाने का आदेश दिया। यह इसलिये था कि सूमामा मुसलमानों की इबादत के तरीक़े को और खुदा के आगे उनके समपर्ण को देखें। हज़रत मुहम्मद जब उनके निकट से होकर

जाते तो प्रश्न करते कि ''ऐ सुमामा मेरे बारे में तुम्हारा क्या विचार है।'' वो उत्तर देते यदि आप उपकार करें तो एक आभारी पर उपकार होगा।

हज़रत मुहम्मद ने उनको क्षमा करके मुक्त कर दिया। सुमामा पर उसका यह प्रभाव पड़ा कि मुक्त होते ही उन्होनें इस्लाम कबूल कर लिया।

## xTo% cuh yg;ku

### jchmy v0oy 6 fgtjh

पहली रबीउल अव्वल को हज़रत मुहम्मद आसिम बिन साबित और खुबैब बिन अदी और अन्य सहाबा जिनका रजीअ नामक स्थान पर वध कर दिया गया था, का बदला लेने के लिये रवाना हुऐ। आप के साथ 200 सवार थे। बनू लहयान आपका सामाचार मिलते ही पहाड़ो में छिप गये। आप यहाँ दो दिन रूके और वहाँ से निकटवर्ती क्षेत्रों में छोटी–छोटी मुहिमें भेजीं। इसी में एक मुहिम पर हजरत अबू बक्र सिद्दीक को दस सवारों के साथ भेजा। उसके बाद रसूलुल्लाह बिना किसी मुडभेड़ के वापस लौट आए।

## xTo% th fdjn

### jchmYk v0oy 5 fgtjh

ज़ी क़िरद एक कुंड (spring) का नाम है। यह स्थान बेलाद–ग़तफान के समीप है जो कि हज़रत मुहम्मद की चरागाह थी। उययना बिन मोहसिन फ़ुजारी ने चालीस सवारों के साथ इस चरागाह पर छापा मारा और आपकी ऊँटनियाँ लेकर भाग गया। इसके अतिरिक्त अबूज़र के बेटे जो ऊँटनियों की देख रेख पर नियुक्त थे का वध कर डाला। और उनकी पत्नी को उठा कर ले गया।

सलमा बिन अकवा को जैसे ही यह सूचना मिली, उन्होंने एक टीले पर खड़े होकर ''या सबाह (ऐ लोगों) के तीन नारे लगाए। जिससे पूरा

मदीना गूंज उठा, और फिर उनका पीछा करने के लिये भागे। सलमा बिन अकवा तीर चलाने में बहुत निपुण थे, दौड़कर उनको पानी के एक कुंड पर पकड़ लिया। और उनपर इतने तीर चलाए कि उनसे सारी ऊँटनियाँ मुक्त करा लीं।

उनके जाने के बाद हज़रत मुहम्मद लगभग पाँच सौ आदमी लेकर रवाना हुए और अतिशीघ्र यात्रा करके ज़ी क़िरद कुंड पर पहुँचें और स्वंय के चलने से पुर्व हज़रत मुहम्मद अपने आगे कुछ सवार भेज चुके थे। इन लोगों ने पहले पहुँच कर शत्रुओं से मुकाबला किया। उनके दो लोग मारे गए और एक मुसलमान शहीद हुए।

## lfj;k mdk'kk&fcu egflu
## jchmy&v0oy 6 fgt jh

एक आक्रमण का संकेत मिलने के बाद हज़रत मुहम्मद ने उकाशा–बिन मुहसिन को चालीस आदमीयों के साथ ग़म्र की ओर भेजा। परन्तु वह लोग समाचार पाते ही भाग गए। जब वहाँ कोई नहीं मिला तो शुजाअ बिन वहब को उन लोगों का पता करने के लिए भेजा। वहाँ एक व्यक्ति से उनका पता ठिकाना मिला और वहीं जाकर उनकी खबर ली।

## Lfj;k egEen fcu lyek
## jch my&v0oy 6 fgt jh

रबीउल–अव्वल 6 हिजरी में यह जानकारी मिली कि बनी सालबा और बनी उवाल मदीने पर चढ़ाई की योजना बना रहे हैं। इस सूचना के मिलते ही मुहम्मद (सल्ल०) ने मुहम्मद बिन सलमा को दस आदमियों के साथ बनी सालबा और बनी उवाल से मुकाबला करने के लिए ज़िल क़स्सा की ओर भेजा। यह लोग वहाँ रात को पहुँचे, और पहुँचकर सो गए। शत्रु पहाड़ों में छुपा हुआ था। जब यह लोग सो गए तो, लगभग

एक सौ लोगों ने सहसा आक्रमण करके सबको शहीद कर डाला। केवल मुहम्मद बिन सलमा संयोगवश बच गए।

## lfj¸;k vc mcnk fcu vy&Tkjkg

उपरोक्त घटना को सामने रख कर मुहम्मद (सल्ल०) ने अबू उबैदा को चालीस आदमियों के साथ ज़िल क़स्सा की ओर भेजा। उन्होंने वहाँ पहुँच कर उनसे युद्ध किया। वो पराजित होकर भाग निकले। इस सरिये को ज़िल क़स्सा सानी कहा जाता है, अर्थात ज़िल–क़स्सा नामक स्थान का दूसरा सरिया।

## lfj¸;k tee

### jchmy&vkf[kj 6 fgtjh

इसी प्रकार के एक और आक्रमण का समाचार सुनकर हज़रत मुहम्मद ने ज़ैद बिन हारिसा को बनी सलीम से मुकाबला करने के लिए जमूम की ओर भेजा। यह स्थान मदीना से चार मील की दूरी पर है। यहाँ पहुँच कर एक महिला द्वारा उनके ठिकाने की जानकारी मिली। मामूली मुडभेड़ के बाद मुसलमान वहाँ से वापस लौट आए।

## lfj¸;k bl

### tekfny&Åyk 6 fgtjh

मुहम्मद (सल्ल०) को सुचना मिली कि कुरैश का एक व्यापारिक काफिला शाम से वापस लौट रहा है। इस सूचना के मिलने के बाद आप ने ज़ैद बिन हारिसा को एक सो सत्तर सवारों के साथ ईस की ओर भेजा। यह स्थान मदीना से चार दिन की यात्रा पर समुद्र के तट पर स्थित है। यहाँ से कुरैश का व्यापारिक काफिला जा रहा था।

मुसलमानों ने पहुँच कर क़ाफिले वालों को बन्दी बना लिया और

उनकी धन–सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर लिया। उनको लेकर मदीना आए। बन्दी बनाए लोगों में मुहम्मद (सल्ल०) के दामाद अबुलआस बिन रबीअ भी थे। आपकी पुत्री हज़रत ज़ैनब ने उनको शरण दी, और आप ने भी उनको शरण दी, और उनकी धन–संपत्ति वापस लौटा दी।

## lfj¸;k rfjQ

### tekny&m[kjk 6 fgtjh

बनी सालब मुसलमानों के विरूद्ध विनाशक कार्यवाइयाँ करते रहते थे। इस लिए हज़रत मुहम्मद ने ज़ैद बिन हारिस को 15 लोगों के साथ तरिफ की ओर भेजा।

यह मदीना से 36 मील दुरी पर था। शत्रु उनके आने का समाचार पाते ही भाग गया। और ज़ैद बिन हारिस बिना किसी कार्यवाई के वापस मदीना आ गए।

## lfj¸;k fgek

### tekny&m[kjk 6 fgtjh

दहिया कल्बी मुहम्मद (सल्ल०) का पत्र लेकर कैसर–रोम (Emperor of Rome) के पास गए थे। क़ैसर ने उनको कई उपहार देकर वापस किया। वापसी में जब हिमा के निकट पहुँचे तो हुनिया जुज़ामी ने अपने वर्ग के लोगों को लेकर उन लोगों पर डाका डाला, और सारा सामान छीन लिया। रिफाआ बिन ज़ैद जुज़ामी को जब इस घटना की सूचना मिली तो उन्होंने सारा सामान उन लोगों से छीन कर दहिया कल्बी को वापस किया। जब दहिया कल्बी मदीना पहुँचे और हज़रत मुहम्मद को सारा विवरण दिया, तो आपने 500 सहाबा को ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में रवाना किया। इस मुहिम में मुसलमानों को सफलता मिली। जुज़ाम समुदाय के साथ रिफ़ाआ बिन ज़ैद के लोग भी रहते थे, जो मुसलमान थे,

ग़लती से उनकी महिलाऐं और बच्चे भी बन्दी बना लिए गए। इसके बाद रिफाआ मदीना आए और मुहम्मद (सल्ल०) को पूरी स्थिति की जानकारी दी। आप ने आदेश दिया कि सारे बंदियों को मुक्त कर दिया जाए और उनकी सारी धन–सम्पत्ति लौटा दी जाए।

## lfj;k oknh&my dqjk
### jtc 6 fgtjh

रजब 6 हिजरी में बनी फुज़ारा समुदाय के बारे में जानकारी मिली कि वो मदीने में दहशत फैलाने की योजना बना रहे हैं। इस लिए आप ने ज़ैद बिन हारिसा को बनी फुज़ारा समुदाय का होसला तोड़ने के लिए अलकुरा नामक स्थान की ओर भेजा। वहाँ दोनो में मुकाबला हुआ, उसके बाद वह लोग भाग गए। इसमें कुछ मुसलमान शहीद हुए और जैद बिन हारीसा को चोटें आई।

## ljh;k nkSerqy&tUny
### 'kkcku 6 fgtjh

शाबान 6 हिजरी में मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ से कहाः ‘‘मैं तुम्हें एक मुहिम पर भेजने वाला हूँ, तुम तैयार रहना।’’ अगले दिन हज़रत मुहम्मद जब नमाज़ पढ़ चुके तो अब्दुर्रहमान बिन औफ को बुलाया और अपने हाथों से उनके सर पर अमामा (पगड़ी) बाँधा और झंडा देकर 700 लोगों के साथ दौमतुल–जन्दल नामक स्थान की ओर भेजा। भेजते हुए आप ने उनको यह उपदेश दिया कि बेईमानी न करना, ग़दर न करना, किसी के नाक और कान न काटना, बच्चे का वध न करना, इस्लाम का संदेश देना, यदि वो लोग इस्लाम के संदेश को मान लें तो वहाँ के सरदार की बेटी से विवाह करने मे संकोच न करना।

अब्दुर्रहमान बिन औफ ने वहाँ पहुँचने के बाद लोगों को इस्लाम का

संदेश दिया। तीन दिन तक बराबर उनको इस्लाम का संदेश देते रहे। तीसरे दिन दौमतुल—जन्दल के सरदार असबा बिन उमर ने इस्लाम कबूल कर लिया, और उनके साथ अन्य बहुत सारे लोगों ने भी। और उनकी बेटी तमाज़र का विवाह अब्दुर्रहमान बिन औफ से हुआ। अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ताबई (वो लोग जिन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) के साथीयों को देखा है) इन्हीं के बेटे थे। इस विवाह का उद्देश्य पारिवारिक संबंध स्थापित कर के उनको इस्लाम के निकट लाना था।

## lfj¸;k fQnd

### 'kkcku 6 fgtjh

शाबान 6 हिजरी में मुहम्मद (सल्ल०) को सूचना मिली कि क़बीला बनी साद बिन बक्र ने ख़ैबर समुदाय की सहायता के लिए फिदक नामक स्थान के निकट सेना इकट्ठा की है। आपने हज़रत अली को 200 आदमियों के साथ फिदक की ओर भेजा। मार्ग में एक व्यक्ति मिला पुछताछ से पता चला कि वो बनी साद का गुप्तचर है। उसे शरण देकर बनी साद का ठिकाना पूछा, उसने पता ठीक—ठीक बता दिया। वह बताए हुए पते पर पहुँचे और वहाँ पहुँच कर युद्ध किया। वह लोग भाग गए और मुसलमान कामयाब होकर वापस लोटे।

## Lkfj¸;k mEes fdjQk

### jetku 6 fgtjh

उम्मे क़िरफा एक महिला का उपनाम (surname) था, उसका नाम फातिमा बिन्त रबीआ था। यह महिला बनी फुज़ारा समुदाय की सरदार थी। ज़ैद बिन हारिस एक बार अपनी व्यापारिक सामग्री लेकर जाते हुए इस ओर से गुज़रे। बनी फुज़ारा के लोगों ने उनको मार कर ज़ख़्मी कर दिया और सारी सामग्री छीन ली। ज़ैद मदीना वापस आ गए। जब हज़रत

मुहम्मद को इस घटना की सूचना मिली, तो आपने उनका साहस तोड़ने के लिए एक सेना ज़ैद के नेतृत्व में भेजी जो विजयी होकर वापस लौटी।

## lfj¸;k vCn|Yykg fcu jokgk
## 'kOoky 6 fgtjh

अबू राफेअ के मारे जाने के बाद यहूद ने उसैर बिन रिज़ाम को अपना सरदार बनाया। उसने हज़रत मुहम्मद से मुकाबला करने की तैयारीयाँ आरंभ कर दीं। कबीला ग़तफान और अन्य समुदाय के लोगों को आपके विरूद्ध तैयार किया। आपको जब इसकी जानकारी मिली तो आपने स्थिति की समीक्षा के लिये अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजा। अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने आकर खबर के सत्य होने की पुष्टि की। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने तीस लोगों के साथ अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजा कि वो उनके लोगों को बुला कर लाऐं और आपके साथ उनकी मौखिक बात–चित हो सके।

उसैर बिन रिज़ाम भी अपने तीस लोगों के साथ चला। रास्ते में उसका इरादा (intention) बदल गया। और उसने छल से मुसलमानों की हत्या करनी चाही, जिसके कारण दोनों पक्षों में लड़ाई छिड़ गई, परिमाणतः यहूदियों को भारी हानि और पराजय का सामना करना पड़ा।

## Lfj¸;k d|t fcu tkfcj vy&Qgjh
## 'kOoky 6 fgtjh

शव्वल 6 हिजरी में अक्कल और उरैना समुदाय के कुछ लोगों ने मदीना आकर इस्लाम कबूल कर लिया। कुछ दिन के पश्चात उन्होंने कहा कि हमारा व्यवसाय पशुपालन है। हमारी जीविका दूध पर चलती है। हम लोगों को अनाज की आदत नहीं है, और मदीने की जलवायु भी हमारे लिए अनुकूल नहीं। यदि हमको नगर के बाहर कुर्बानी के ऊँटो में रहने और दूध पीने की अनुमति दे दी जाए तो उत्तम होगा।

हज़रत मुहम्मद ने आज्ञा दे दी। वह लोग वहाँ रहने लगे। कुछ ही समय में यह लोग हष्ट–पुष्ट हो गये। उसके बाद वह लोग इस्लाम से फिर गये। उन लोगों ने वहाँ नियुक्त चरवाहे (herdsman) की हत्या कर दी और सारे ऊँट भगा ले गये। हज़रत मुहम्मद को जब इस घटना की जानकारी मिली तो आपने कुर्ज़ बिन जाबिर अल–फेहरी को 20 आदमियों के साथ उनका पीछा करने के लिये भेजा। सब बन्दी बना लिये गये। आपने क़िसास (खून का बदला लेने का नियम) का आदेश दिया। जिस प्रकार उन्होंने चरवाहे की हत्या की थी उसी प्रकार उनका वध किया गया।

## cvl mej fcu me,;k t'ejh

अबू सुफयान ने एक बार एक जनसमूह के बीच यह कहा कि,''क्या कोई व्यक्ति है जो जाकर मुहम्मद का वध करे।'' एक आराबी (अरब देहाती) ने कहा मैं इस कार्य में बहुत निपुण हूं। यदि तुम मेरी सहायता करो तो इस कार्य को मैं कर सकता हूँ। अबू सुफयान ने उसको सवारी के लिए एक ऊँटनी और यात्रा खर्च दिया, साथ ही सहायता का आश्वासन दिया। वो मदीने की ओर चल पड़ा। उस समय हज़रत मुहम्मद मस्जिद बनी अब्दुल अशहल में थे। वो अरबी वहीं पहुँचा उसको सामने आता देखकर आप ने कहा,''ये किसी बुरे इरादे से आ रहा है।'' उसैद बिन हुज़ैर उठे और उस आराबी को पकड़ लिया, उसने अपने कपड़ों में एक खंजर (Dagger) छिपा रखा था, जो छूट कर गिर गया। आप ने प्रश्न किया सच बताओ, किस इरादे से आए हो! उसने कहा यदि जान की अमान (संरक्षण) हो तो बताऊँ। आप ने कहा तुम सुरक्षित हो। अरबी ने सारी घटना कह सुनाई। आप ने उसको मुक्त कर दिया। उसके बाद उस आराबी ने इस्लाम कबूल कर लिया।

इस घटना के उपरांत रसूलुल्लाह ने उमर बिन उमय्या ज़मरी और सलमा बिन असलम अनसारी को मक्का भेजा कि जाकर अबू सुफयान को चेतावनी दें। जब ये दोनों मक्का पहुँचे तो चाहा कि सर्वप्रथम मस्जिद

हराम (ख़ाना–काबा) में जाकर तवाफ़ (चक्कर) कर लें। अबु सुफयान ने उनको देख लिया और ऊँचे स्वर में चीखा ''देखो ये लोग दंगा करने आए हैं।'' उमर बिन उम्मया ने अपने साथी से कहा कि अबू सुफयान के विरूद्ध अब कोई कार्यवाही संभव नहीं। उचित है कि अब हम यहाँ से वापस लौट जाऐं। इसलिये वह लोग वापस मदीना आ गये।

## gnfc;k lf/k
## thdknk 6 fgt jh

हुदैबिया एक कुएं का नाम है, यह गाँव इसी के निकट स्थित है इसी कारणवश इसको हुदैबिया कहा जाने लगा। यह स्थान मक्का से नौ मील की दूरी पर है।

हज़रत मुहम्मद ने मदीने में सपना देखा, कि आप और आपके साथी मक्का पहुँचे, और वहाँ उन्होंने उमरा किया। इस सपने के पश्चात हज़रत मुहम्मद पहली ज़ीक़ादा, 6 हिजरी को अपने लगभग 1500 असहाब (साथी) जिसमें अनसार और मुहाजिरीन दोंनो सम्मिलित थे, लेकर उमरा के उद्देश्य से मक्का की ओर चल पड़े। क्योंकि उद्देश्य युद्ध नहीं था, इसलिये केवल यात्रा सामग्री साथ ली, उसके अतिरिक्त अपने साथ कुछ नहीं रखा। बुस्र बिन अबी सुफयान को गुप्तचर बना कर आगे कुरैश की ओर भेजा।

जब ग़दीर अशतात नामक स्थान पर मुहम्मद और उनके साथी पहुँचे तो गुप्तचर ने आकर सूचना दी कि कुरैश ने आपके आने का सामाचार सुनकर सेना इकट्ठा की है और उन्होंने निश्चय किया है कि हज़रत मुहम्मद को मक्का में प्रवेश नहीं करने देंगे। और सामाचार यह भी है की खालिद बिन वलीद दो सौ सवारों की टुकड़ी लेकर अमीम नामक स्थान तक पहुंच चुकें हैं। जब यह सामाचार मिला तो टकराव से बचने के लिये आप ने सामान्य मार्ग छोड़कर दुसरे मार्ग से हुदैबिया पहुँचे, यहाँ पर अपना पड़ाव डालकर ख़र्राश बिन उमय्या खुज़ाई को मक्का यह संदेश देकर भेजा कि

वो इस बात का स्पष्टिकरण दें कि हम केवल बैतुल्लाह (ख़ाना–काबा) के र्दशन करने के लिये आए हैं, युद्ध के लिये नहीं। ख़र्राश बिन उमय्या जब मक्का पहुँचे तो उन लोगों ने उन को पकड़ लिया और उनकी हत्या करनी चाही, परन्तु कुछ लोगों ने हस्तक्षेप करके उनको बचा लिया। वापस लौटकर उन्होंने पुरी घटना की जानकारी हज़रत मुहम्मद को दी।

उसके बाद इस विषय पर कुरैश से आगे तक बात–चीत होती रही, यहाँ तक कि बुदैल बिन वरका खुज़ाआ क़बीले के कुछ लोगों के साथ आपके पास आया और कुरैश का दृष्टिकोण आपके समक्ष रखा। हज़रत मुहम्मद ने कहा,''हम युद्ध करने नहीं आए हैं, हम उमरा करने के लिये आए हैं। यदि वो चाहें तो एक निर्धारित अवधि के लिये शांति समझौता कर लिया जाए, और इस अवधि में एक पक्ष दुसरे पक्ष के साथ कोई हस्तक्षेप न करे।

वापस जाकर बुदैल ने कुरैश को बताया कि हज़रत मुहम्मद युद्ध के उद्देश्य से नहीं आए हैं। वह केवल उमरा और संधि चाहते हैं। यह सुनकर उरवा बिन मसऊद जो अपने समुदाय में बहुत ही सम्मानित लोगों में से था, उठकर कहा, ''लोगो, मुहम्मद ने तुम्हारी भलाई की बात कही है, इसको अवश्य स्वीकार कर लो, और मुझे अनुमति दो कि मैं मुहम्मद से बात–चीत करूँ, लोग तैयार हो गये।

उरवा हज़रत मुहम्मद के पास आए और बात आरंभ की। हज़रत मुहम्मद ने वही बात कही जो बुदैल से कही थी। वापस जाकर उरवा ने कुरैश को पुरी बात बताई। उरवा की बात सुनकर हलीस बिन अलक़मा कनानी ने कहा मुझे मुहम्मद के पास जाने दो। जब रसुल्लाह ने हलीस को आते देखा तो सहाबा से कहा कुरबानी के जानवरों को खड़ा कर दो क्योंकि यह व्यक्ति ऐसे परिवार से है जहाँ कुर्बानी के जानवरों को सम्मान दिया जाता है। हलीस कुर्बानी के जानवरों को देखकर रास्ते से ही लौट गया, और जाकर कुरैश से कहा, ''इन लोगों को उमरा करने दो।'' परन्तु कुरैश तैयार नहीं हुए।

अंततः कुरैश ने सुहैल को अपना प्रतिनिधी बना कर भेजा। जब रसूल्लाह ने सुहैल को आते देखा तो कहाः अब तुम्हारा मामला सरल हो गया। सुहैल आपके पास आया, और लंबे समय तक संधि और संधि की शर्तों पर बात चीत चलती रही। जब संधि की शर्तें तय हो गईं तो मुहम्मद (सल्ल०) ने हज़रत अली को संधि लिखने का आदेश दिया। संधि कि शर्तें यह थीं।

1. दस साल तक आपस में जंग बन्दी (no war pact) रहेगी।
2. कुरैश का जो व्यक्ति मुसलमान होकर मदीना आ जाएगा, उसे वापस करना होगा।
3. जो मुसलमान मदीना से मक्का आ जाए उसको वापस नहीं किया जाएगा।
4. इस बीच कोई एक दुसरे पर तलवार नहीं उठाएगा, और न कोई किसी से विश्वासघात करेगा ।
5. मुहम्मद इस वर्ष उमरा किए बिना वापस लौट जाऐं। वो आगामी वर्ष आऐं और केवल तीन दिन मक्का में रहकर उमरा करके वापस लौट जाऐं।
6. अन्य समुदायों को अधिकार होगा कि जिस पक्ष के साथ संधि करना चाहें, कर सकते हैं।

रसूलुल्लाह ने कुरैश की समस्त शर्तों को एकतरफा तौर पर मान लिया। परन्तु आपके सहाबा (companions) को यह बात बहुत ही दुःखद लगी, यहाँ तक कि हज़रत उमर सहन न कर सके, तब रसूलुल्लाह ने उनको सांत्वना दी। संधि पत्र पूरा होने के बाद आपने सहाबा को कुर्बानी करने और सर मुंडवाने का आदेश दिया। लगभग दो सप्ताह हुदैबिया ठहरने के बाद आप वापस हो गए। अभी रास्ते ही में थे कि सुरह–अलफतह उतरी, जिसमें खुली विजय का शुभ समाचार था। (ईन्ना फतहना लक फतहम मुबीना) अर्थात हमने तुमको खुली हुई फतह दे दी।

मुहम्मद (सल्ल०) ने सहाबा को एक स्थान पर इकट्ठा किया और यह आयतें (verses) सुनाईं। इस को सुनकर सहाबा ने आश्चर्य से पूछा ''ऐ खुदा के रसूल, क्या यह विजय है, आप ने कहा कि हाँ, यह विजय है।''

परिणामतः यह एक बहुत बड़ी विजय सिद्ध हुई। इससे पुर्व जंग का वातावरण बने रहने के कारण मुसलमानों का अन्य लोगों से मेल मिलाप नहीं था। अब जबकि शांति स्थापित हो गई, कलह तथा शत्रुता का वातावरण समाप्त हुआ तो आपस में मिलने और विचारों का आदान–प्रदान होने लगा। इस प्रकार लोगों को इस्लाम समझने का मौक़ा मिला। जिसका परीणाम यह हुआ, कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने इस्लाम अपनाना शुरू किया कि मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़म्बर बनाए जाने कि अवधि से लेकर अबतक इतनी बड़ी संख्या में लोग मुसलमान नहीं हुए थे।

दूसरी ओर ऐसा हुआ कि अबुल बसीर इस्लाम क़बूल करके मक्का से मदीना आए, परन्तु संधि के अनुसार आपने उनको लौटा दिया। किन्तु वो मक्का न जाकर समुद्र के तट पर चले गए, और वहीं पड़ाव डाल दिया। उसी मार्ग से क़ुरैश का व्यापारिक क़ाफ़िला (caravan) जाता था। अब जो भी मुसलमान हो जाता मदीना जाने के बजाय यहीं आकर ठहर जाता। यहाँ तक कि 70 लोगों का एक दल बन गया। यह लोग क़ुरैश के क़ाफिले को परेशान करते जिससे क़ुरैश बहुत दुःखी हो गए। अंततः मुहम्मद (सल्ल०) के पास अपना आदमी भेज कर उन लोगों ने धारा 8 को समाप्त करा दिया।

## ljnkjk dk bLyke dcy djuk

हुदैबिया संधि दिलों को विजय करने वाली सिद्ध हुई। मक्का के बड़े–बड़े सरदारों ने सुलह हुदैबिया के बाद ही इस्लाम अपनाया। इन्हीं में ख़ालिद बिन वलीद बिन तलहा तथा अम्र बिन–अलआस हैं। हज़रत ख़ालिद कहते हैं कि हम तीनों एक साथ मक्का से मदीना गए। जब

रसूलुल्लाह को हमारे आने का समाचार मिला तो वो बहुत प्रसन्न हुए। और कहा मक्का ने अपने जिग्र–गोशों (most-loved) को हमें दे दिया। यह सबके सब इस्लामी इतिहास के संरचक (architect) सिद्ध हुए।

## fo'o d: 'kkl dk d: uke i=

सुलह–हुदैबिया 6 हिजरी में हुई इस संधि को खुली फतह (open victory) बताया। और इसके साथ एक निकट फतह का शुभ–समाचार भी दिया गया। और यह एक विशेष सहायता थी जो अल्लाह की ओर से उतारी गई थी। इसकी दूरदर्शिता यह थी कि इस्लाम की आवाहनपरक गतिविधियाँ और विचारों का आदान–प्रदान जो जंग के कारण अपने लिए प्रवेश द्वार नहीं पा रहा था, उसको मैत्री संधी और शांति द्वारा खोल दिया जाए। जो कार्य अशांत वातावरण में सामान्य रूप से नहीं हो रहा था उसको अनुकूल वातावरण मिल जाए ताकि उसके अच्छे परिणाम निकल सकें।

सुलह हुदैबिया इन अर्थो में एक बड़ी विजय सिद्ध हुई। इसके द्व ारा इस्लाम का संदेश बिना किसी व्यवधान के दूर दूर तक फैल गयाा। बुतप्रस्तों का विरोध तथा शत्रुता जो इस संदेश के सार्वजनिक होने में बाधा डाल रही थी, इस संधि द्वारा समाप्त हो गयी। हजरत मुहम्मद जब हुदैबिया से लौट कर आए तब हिजरत के छटे वर्ष ज़िल्हिज्जा के महीने में आपने बादशाहों के नाम पत्र भेजने का निर्णय लिया। तब आप ने सहाबा को इकट्ठा कर के अभिभाषण (sermon) दिया।

ऐ लोगो, मुझे सारे विश्व के लिए शांति दूत बना कर भेजा गया है। तुम यह संदेश सारे विश्व को दे दो, अल्लाह तुम पर दया करेगाा। ईसा के हवारियों (हजरत ईसा के साथी) की तरह मतभेद न करना कि निकट जाने को कहा तो सहमत हो गए और दूर जाने को कहा तो अपने स्थान पर चिपक गए और वहाँ से न टले।

सहाबा (companions) ने लब्बैक (हम हाज़िर हैं) कहा और आदेश

मानने के लिये तैयार हो गए। इसी के साथ हज़रत मुहम्मद  को यह सलाह दी कि बादशाह लोग जिस पत्र पर मुहर (stamp) न हो, उसको ध्यान देने योग्य नहीं समझते हैं। आपने यह बात पसंद की और एक मुहर बनवाई जो हबश की हस्तकला पर आधारित थी। उस पर ''मुहम्मद रसूलुल्लाह'' अंकित था। पत्र के विषय के नीचे नाम के स्थान पर इस मुहर को लगा कर भेजा जाता था।

इससे यह बात सिद्ध होती है कि यदि दूसरी कौमों में कोई ऐसा ढंग अथवा रीत हो जिसका नियमित रूप से चलन हो गया हो और बौद्धिक स्तर अथवा इस्लामी नियम से उसका कोई टकराव न हो तो उसे अपनाया जा सकता है। और यही स्वभाविक है।

## d|l j&jke d| uke i=

कैसर रोम (Roman Emperor) के नाम अल्लाह के रसूल ने जो पत्र भेजा उसका विषय (written matter) कुछ इस प्रकार था। ''यह पत्र है मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल की ओर से महान हेरक्ल रोम को – सलाम हो उस पर जो आदेशों (guidence) को माने, बाद इसके मैं तुमको इस्लाम की ओर आने की दावत देता हूँ। इस्लाम क़बूल करो सलामती पाओगे और अल्लाह दूना अजर (double reward) देगा। और यदि तुम इस्लाम से मुँह फेरो तो तुम्हारी समस्त प्रजा के इस्लाम न लाने का गुनाह (पाप) तुम्हारे सर होगा।

''ऐ अहले किताब, आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच सामान्य (common) है। वो यह कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की इबादत नहीं करेगें और न अल्लाह के साथ किसी को साझी  बनाऐंगे। और अल्लाह के अतिरिक्त आपस में एक दूसरे को अपना रब और पूज्य नहीं बनाऐंगे। यदि वो इस्लाम ग्रहण न करें तो आप कह दीजिए तुम साक्षी रहो कि हम मुसलमान (खुदा के नियम के अधीन) हो

चुके हैं (आले–ईमरानः 64) उपरोक्त पत्र आपने दहिया कलबी के द्वारा हेरक़्ल के पास भेजा। क़ैसर ने पत्र पढ़ कर अबू सुफयान से जो अभी तक इस्लाम नहीं लाए थे, आपके बारे में जानकारी लेने के उद्देश्य से पूछ–ताछ की। जिससे उसको विश्वास हो गया कि आप सच्चे रसूल हैं इसलिए कहा जाता है कि उसने एक विशाल दरबार का आयोजन किया। रोम के बतरीकों (bishops) अथवा पादरियों (priests) को इसमें आमंत्रित किया। और उनके समक्ष इस्लाम की सच्चाई को स्वीकारते हुए उन्हें इस्लाम की दावत दी। परन्तु यह सुनकर वह लोग उत्तेजित हो गए। यह दृश्य देखकर उसने अपना विचार बदल दिया और उसने कहा कि मैं तो तुम लोगों की परीक्षा ले रहा था। तुम्हें अपने धर्म पर अडिग देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। और इस तरह सच्चाई को जान लेने के उपरांत उसको अपनाने से वंचित रहा।

इस पत्र मैं रसूलुल्लाह ने हेरक़्ल को महान रोम से संबोधित किया। इस से यह पता चला कि non Muslim को भी संबोधित करते हुए उसके पद और प्रतिष्ठा का ध्यान रखना आवश्यक है। और इस संदर्भ में उसके विश्वास तथा धार्मिक आस्था से विवाद नहीं होगा।

## [k|ljk ijot+ d uke i=

कैसर रोम के ही ढंग पर रसूलुल्लाह ने क़िसरा शाह फारस के नाम भी अपना प्रचारक पत्र, 'महान फारस' के नाम से संबोधित करते हुए भेजा। इस पत्र को ले जाने वाले अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहमी थे।

खुसरो परवेज़ ने हेरक़्ल से विपरीत प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने क्रोध में आकर पत्र फाड़ डाला और कहा, ''यह व्यक्ति मुझको पत्र लिखता है अग्रचे कि यह मेरा गुलाम है''। और पत्र के टुकड़े–टुकड़े कर डाले। कुछ ही दिनों के बाद यह घटना हुई कि खुसरो की उसके छोटे बेटे शेरवैह ने हत्या कर दी।

रसूलुल्लाह ने इसी प्रकार दर्जनों राजाओं और सरदारों के नाम पत्र लिखे जिनमें से कुछ ने पत्र के साथ अच्छा व्यवहार किया और कुछ ने क्रोध प्रकट किया और कुछ ऐसे थे जिन्होंने स्वीकार किया कि आप अल्लाह के पैगम्बर हैं परन्तु ईमान नहीं लाए उदाहरणतः मक़ोक़स। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने पत्र पाकर प्रसन्नता प्रकट की और ईमान लाए उदाहरणतः नजाशी हब्श़ का राजा।

जिन के नाम पत्र भेजे गए उन्में से कुछ महत्वपूर्ण नाम यह हैं।

| बादशाह | राज्य |
|---|---|
| हेरक़्ल | शाह रोम |
| खुसरो परवेज | शाह फारस |
| नजाशी | शाह हब्शा |
| मक़ोक़स | शाह मिस्र |
| मुन्ज़िर ईब्न सावा | शाह बहरेन |
| अब्दो जैफ़र | शाहान ओमान |
| हौज़ा बिन अली | रईस यमामा |
| हारिस ग़स्सानी | अमीर–दमिश्क |

## xTo% [kcj
## egje 7 fgt jh

रसूलुल्लाह (सल्ल०) हुदैबिया से लौट कर मदीना वापस आए। इस से पूर्व मदीना के यहूदी मक्का के कुरैश से मिल कर शडयंत्र रचते रहते थे। मदीना के यहूदियों के उकसाने पर ही कुरैश ने मदीना पर वो आक्रमण किया था जिसको ग़ज़्वः अहज़ाब कहा जाता है। हुदैबिया समझौते के बाद कुरैश किसी जंगी कार्यवाही न करने के लिये बाध्य हो गए। इस प्रकार हुदैबिया संधि ने कुरैश को यहूद से काट दिया।

अब मुहम्मद (सल्ल०) ने योजना बनाई कि यहूद की ताक़त को

तोड़ दिया जाए ताकि वो मुसलमानों के विरूद्ध लड़ाई न लड़ सकें तथा इस्लाम की प्रचार प्रक्रिया में वाधा (obstacle) न डाल सकें।

हज़रत मुहम्मद ने मोहर्रम 7 हिजरी में खैबर के यहूदियों की ओर रूख किया। उस समय आपके पास 1400 पैदल और 100 सवार थे। रास्ते में जब एक ऊँचे स्थान पर पहुँचे तो कुछ साथियों ने ऊँचे स्वर में अल्लाहु अकबर कहा, रसूलुल्लाह ने कहा अपने ऊपर दया करो तुम किसी बहरे अनुपस्थित (deaf/unpresent) को नहीं पुकार रहे हो। तुम उस खुदा को पुकार रहे हो जो सुनने वाला है अतः तुम्हारे निकट है। आपको यह सूचना मिल चुकी थी कि ग़तफान ने खैबर के यहूदियों की सहायता के लिये सेना इकट्ठा की है इसी कारण आप ने मदीने के निकटवर्ती क्षेत्र रजीअ में पड़ाव डाला जब खैबर और ग़तफान के यहूदियों को ज्ञात हुआ तो वह लोग वापस हो गए।

खैबर के निकट पहुँच कर आप ने एक लंबी दुआ (prayer) की उसकी अंतिम पंक्ति है,''ऐ अल्लाह हम इस बस्ती वासी और इसमें मौजूद सारी चीज़ों की भलाई चाहते हैं और हम सारे शडयंत्रों (evil deed) से रक्षा माँगते हैं।

ख़ैबर में यहूदियों के बहुत सारे किले थे। आपको देख कर वो किलों में बंद हो गये। आपने उनके क़िलों पर आक्रमण करना शुरू किया। और एक के बाद एक करके सारे किलों को जिततते चले गए।

क़िला क़मूस पर चढ़ाई के लिए आपने हज़रत अली को झंडा देकर भेजा। आपने उनको यह आदेश दिया कि युद्ध से पूर्व यहूद को इस्लाम का संदेश देना। खुदा की क़सम यदि अल्लाह एक व्यक्ति को भी तुम्हारे द्वारा सत्य का मार्ग दिखा दे तो यह तुम्हारे लिये लाल ऊँटों से अच्छा है।

जब सारे किले जीते जा चुके तो अंत मे मुसलमानों ने वतीह और सलालम का घेराव किया। 14 दिन के घेराव के पश्चात उन लोगों ने

आप से निवेदन किया कि हमको अमान (शरण) दे दी जाए। हम ख़ैबर को छोड़ कर निकल जाऐंगे। आपने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

## XkTo, evr%
## Tkekny&Åyk 8 fgt jh

मुअतः एक स्थान का नाम है, जो शाम की सीमा पर स्थित था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जब देश के नरेश और राजाओं के नाम प्रचारक पत्र लिखे तो शरहबील बिन उमर ग़स्सानी के नाम भी एक पत्र भेजा था। शरहबील को क़ैसर ने शाम का अधिपति बनाया था। हारिस बिन उमैर जब यह पत्र लेकर मुअतः पहुँचे तो शरहबील ने उनकी हत्या करवा दी। इसके बाद आपने तीन हजार की सेना जमादिल ऊला के महिने में मुअतः की ओर भेजी।

ज़ैद बिन हारिसा को सेनापति बनाया और यह कहा कि यदि ज़ैद मारे जाऐं तो जाफर बिन अबी तालिब लशकर के सेनापति हों और यदि जाफर भी मारें जाऐं तो अब्दुल्लाह बिन अबी रवाहा सेनापति होंगे और यदि अब्दुल्लाह भी मारे जाऐं तो मुसलमान अपनी इच्छा से सेनापति का चयन कर लें।

और एक सफेद झंडा ज़ैद बिन हारिस को दिया और कहा कि वहाँ पहुँचने के बाद उन लोगों को इस्लाम का संदेश देना वो उपदेश न मानें तब युद्ध करना और यह निर्देश दिया कि किसी भी स्थिति में संयम और सदाचारिता को न छोड़ना। और अपने साथियों के हितचिंतक बने रहना।

जब शरहबील को इस सेना की सूचना मिली तो उसने एक लाख की सेना मुसलमानों से मुकाबला करने के लिए इकट्ठा की। इसी के साथ हेरक़्ल ने भी एक लाख की सेना शरहबील की सहायता के लिये भेजी। जब मुसलमानों को पूरी बात का पता चला तो उन्होंने आपस में सलाह मशवरा किया। अंततः यह सहमति बनी कि मुकाबला किया जाए

इसके बाद वो लोग मुअतः की ओर चल पड़े। युद्ध शुरू हुआ और एक के बाद एक जैद़ बिन हारिस, जाफर बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन रवाहा शहीद हो गये।

अन्त में सर्वसम्मति से ख़ालिद बिन वलीद को लशकर का सेनापति नियुक्त किया गया। हज़रत खालिद ने यह अनुमान लगाया कि यह अनुपात बिलकुल असंतुलित और असामान्य है क्योंकि मुसलमान केवल तीन हज़ार हैं और विपक्ष दल की संख्या एक लाख से भी अधिक है। इसलिए विशेश युक्ति से वह वापस मदीना लौट आए बाद को ओसामा बिन जैद़ के नेतृत्व में मुसलमान आगे बढ़े और उन पर विजय प्राप्त कि।

## lfj,;k ve| fcu vy&vkl

### t|ekfn mLlkuh 8 fgtjh

हज़रत मोहम्मद को समाचार मिला कि बनी क़ुज़ाआ वर्ग का एक दल मदीने पर आक्रमण करने की योजना बना रहा है। इस लिए आपने उसके विरूद्ध उमर बिन अल–आस को ज़ातुस सलासिल की ओर भेजा। उनके साथ 300 आदमी थे जिनमे 30 सवार थे। निकट पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि शत्रु की संख्या बहुत अधिक है। उन्होंने राफ़ेअ बिन मकीस को मदीने भेजा ताकि वहाँ से उनकी सहायता के लिए कुछ और लोग भेजे जाऐं।

आपने 200 आदमियों के साथ अबू उबैदा बिन अल–जर्राह को रवाना किया। जिसमें अबू बक्र और उमर भी शामिल थे। और यह आदेश दिया कि तुम अपने साथियों के पास पहुँचो तो दोनों मिलकर काम करना, मतभेद मत करना। अबू उबैदा जब वहाँ पहुँचे और नमाज़ अदा करने का समय आया तो नेतृत्व पर मतभेद हो गया। उमर बिन अल–आस ने कहा कि सेना अध्यक्ष मैं हूं तुम मेरी सहायता के लिये भेजे गये हो इसलिये अधि ापत्य पर मेरा अधिकार है। मतभेद से बचने के लिये हज़रत अबू उबैदा ने उनकी अध्यक्षता को स्वीकार कर लिया। उसके बाद सब मिलकर बनू

कुज़ाआ पहुँचे और आक्रमण किया। क़बीले के लोग भयभीत हो गये अतः उन्होंने अपनी शोरिशें (disturbances) बंद कर दी।

## eDdk dh Qrg ¼fot ;½

## jetku 8 fgt jh

हुदैबिया संधि के अनुसार कुरैश इसके लिये बाध्य थे कि न तो वो मुसलमानों पर आक्रमण करेंगे और न उन लोगों पर जिन से मुसलमानों की संधि है। उस समय बनू बक्र से कुरैश की संधि थी और खुज़ाआ की रसूलुल्लाह से संधि थी।

दोनों समुदायों में अज्ञानता के समय से शत्रुता चली आ रही थी। एक अवसर पर बनू बक्र ने बनू खुज़ाआ पर शब खून (रात का आकास्मिक आक्रमण) मारा। यह लोग पानी के एक कुंड पर सो रहे थे। इस कार्यवाही में कुरैश ने अपने समर्थक बनू बक्र की सहायता की। उनको हथियार भी दिये और लड़ने के लिये आदमी भी। इन लोगों ने बनू खुज़ाआ के लोगों को मारा और उनकी संपत्ति को लूटा। उसके बाद अम्र बिन सालिम खुज़ाई चालिस आदमियों के साथ मदीने आया ताकि आपको पूरी स्थिति से अवगत कराए। जब आपको पूरी जानकारी हुई तो आपने एक संदेशवाहक मक्का भेजा और कहा कि वो तीन बातों में से एक का चयन करें।

1. खुज़ाआ के वधित लोगों (killed persons) की देयत दी जाए।
2. या वो बनू बक्र को सर्मथन देना बंद करें।
3. या मुआहिदा हुदैबिया (हुदैबिया संधि) के नश्टिकरण की घोषणा कर दें।

जब संदेशवाहक उनके पास पहुँचा तो उन्होंने कहा हम हुदैबिया संधि के नष्टिकरण के लिये तय्यार हैं। परन्तु बाद में उनको पश्चाताप हुआ और तुरन्त अबू सुफयान को संधि नवनीकरण अर्थात संधि का समय बढ़ाने के लिये मदीना भेजा। परन्तु अब हज़रत मोहम्मद इसके लिए तैयार

नहीं हुए। और अबू सुफयान को निराश लौटना पड़ा। अबू सुफयान की वापसी के बाद रसूलुल्लाह ने सहाबा को गुप्त रूप से यात्रा की सामग्री और जंग के हथियार ठीक करने का आदेश दे दिया और सचेत किया कि इसको पूर्णतः गुप्त रखा जाए। और अपने निकटर्वती समुदायों को भी निर्देश दिया की वो भी तैयार हो जाऐं।

इस तरह आप ने 10 रमज़ान को लगभग दस हज़ार के लशकर के साथ मदीना से मक्का की ओर प्रस्थान किया। जब आप जुहफा के स्थान पर पहुँचे तो हजरत अब्बास अपने परिवार सहित हिजरत (migrate) कर मदीना जाते दिखाई दिए। उन्होंने आपके आदेशा अनुसार सामान मदीना भेज दिया और स्वंय सेना में शामिल हो गए।

फतह मक्का की यात्रा के मध्य में बहुत से लोगों ने आप से मिल कर इस्लाम क़बूल किया जिसमें अबू सुफयान बिन हारिस बिन अबदुल मुत्तलिब जो आपके चचेरे भाई और आपके रेज़ाई भाई (दूध शरीक भाई) थे जो पैग़म्बरी से पूर्व आपके निकट मित्र भी थे। पैग़म्बरी के बाद आपके विरोधी बन गए थे। यहाँ तक की आपकी आलोचना में कविता कहने लगे। परन्तु बाद में उनको अपनी भूल का एहसास हुआ और वो अपने एक साथी के साथ फ़तह मक्का के अवसर पर रसूलुल्लाह के पास आए और हज़रत यूसुफ़ के भाई की ज़बान मे कहा अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी वास्तव में (certainly) हम गलती पर थे। आपने भी हज़रत यूसुफ की जबान में उत्तर दियाः आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (12: 91–92)

इसके बाद वह लेाग कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। चलते हुए इशा की नमाज के समय आप मक्का के निकट मर्रे ज़हरान पहुँचे। वहाँ पहुँच कर आपने पड़ाव डाल दिया और सेना को आदेश दिया कि प्रत्येक अपने तंबु के आगे आग जलाए। कुरैश को अपने वचन–भंजन के कारण हर समय भय रहता था किसी भी समय हज़रत मुहम्मद हम पर चढ़ाई

न कर दें। इसलिए आग को देखकर अबू सुफयान बिन हर्ब और बुदैल बिन वरक़ा और हकम पता लगाने के लिए मक्का से बाहर निकले। जब मर्रे ज़हरान के निकट पहुँच तो सेना दिखाई दी। यह लोग घबरा गए। अबू सुफयान ने कहा! यह आग कैसी है, बुदैल ने कहा यह आग क़बीला खुज़ाआ की है।

अबू सुफयान ने कहा खुज़ाआ के पास इतनी सेना कहाँ से आई, भाई वो तो थोड़े हैं। रसूलुल्लाह के सुरक्षा कर्मियों ने उनको देखते ही बन्दी बना लिया। उन लोगों ने सुरक्षा कर्मियों से प्रश्न किया, यह सेना किसकी हैं। उन्होंने कहा यह सेना रसूलुल्लाह की है, और हम उनके साथी हैं। बात हो रही थी कि हज़रत अब्बास रसूलुल्लाह के खच्चर (mule) पर चक्कर (patrol) लगाते हुए उधर आ गए और अबू सुफयान की आवाज़ को पहचान कर कहाः खेद है ऐ अबू सुफयान यह रसूलुल्लाह की सेना है। खुदा की क़सम यदि रसूलुल्लाह तुझ पर विजयी हो गए तो तेरी ख़ैर नहीं। कुरैश के लिए उचित यही है कि वो आत्मसमर्पण कर दें और अधीनता स्वीकार करें। अबू सुफयान कहते हैं मैं आवाज़ सुनकर उसी दिश मे चलता हुआ अब्बास तक पहुँचा और कहा कि ऐ अबुल फज़ल बचाव का क्या उपाय है। हज़रत अब्बास ने कहा मेरे पीछे इस खच्चर पर सवार हो जाओ। रसूलुल्लाह की सेवा में लेकर तुमको चलता हुँ। ताकी तुम्हारे लिए अमन (सुरक्षा) मांग लूं। हज़रत अब्बास अबू सुफयान को अपने साथ लेकर लश्कर को दिखाते हुए चलने लगे, चलते हुए जब हजरत उमर की ओर से गुज़रने लगे तो हज़रत उमर देखते ही झपटे और कहा कि यह अबू सुफयान अल्लाह और उसके रसूल का शत्रु बिना किसी शर्त और समझोते के हमारे हाथ आ गया है। हज़रत उमर पैदल और हजरत अब्बास अबू सुफयान को अपने खच्चर पर बिठाऐ हुए तिव्रगति से चलते हुए रसूलुल्लाह की सेवा में पहुँच गए। और हज़रत उमर पिछे–पिछे तलवार लिए हुए वहाँ पहुँचे और कहाः या रसूलुल्लाह यह अबू सुफयान

है, रसूलुल्लाह का शत्रु है जो बिना किसी शर्त और संधि के आज हमारे हाथ आ गया है। मुझको आज्ञा दिजीए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। अब्बास ने कहा या रसूलुल्लाह मैने इसको पनाह दी है। हजरत उमर तलवार लिए खड़े थे और बार–बार यही कह रहे थे कि अबू सुफयान के वध की आज्ञा दिजीए। हज़रत अब्बास क्रोधित हो उठे और कहा कि ऐ उमर, ठहरो, यदि यह बनू अदी से होता तो क्या तुम तब भी इसके वध के लिए इसी प्रकार आग्रह करते। क्योंकि यह अब्द–मुनाफ से है इसलिए तुम उसके वध के लिए आतुर हो रहे हो।

हजरत उमर ने कहा, ऐ अब्बास, खुदा की कसम, तुम्हारा इस्लाम कबूल करना मेरे लिए अपने बाप ख़ताब के इस्लाम से अधिक प्रिय था यदि मेरा बाप इस्लाम लाता तो मुझको उतनी प्रसन्नता न होती जितनी कि तुम्हारे इस्लाम लाने से हुई। इस लिए की मैं खूब जानता हुँ कि रसूलुल्लाह को तुम्हारा इस्लाम लाना ख़त्ताब के इस्लाम से अधिक प्रिय था।

रसूलुल्लाह ने हजरत अब्बास को आदेश दिया कि अबू सुफयान को अपने ख़ेमे (tent) में ले जाऐं। प्रातः मेरे पास ले कर आए। अबू सुफयान रात भर हजरत अब्बास के खेंमे में रहे और हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा ने उसी समय रसूलुल्लाह के पास आकर इस्लाम कबूल कर लिया। कुछ देर तक रसूलुल्लाह उनसे मक्का के हालात पुछते रहे। इस्लाम लाने के बाद यह दोनों मक्का वापस हो गए ताकी मक्का वासियों को आपके आने का समाचार दें।

अबू सुफयान अगली सुबह दोबारा मोहम्द (सल्ल०) के पास आए। उनके साथ अब्बास बिन अब्दुल–मुत्तलिब भी थे। उस समय रसूलुल्लाह और अबू सुफयान के बीच जो बात चीत हुई, सीरत की किताबों में उनका उल्लेख है।

अंततः अबू सुफयान ने इस्लाम कबूल कर लिया। यह घटना मक्का की सिमा पर घटी। रसूलुल्लाह ने अबू सुफयान को सम्मान देने के लिए

घोषणा कर दी कि जो व्यक्ति अबू सुफयान के घर में चला जाए वह सुरक्षित है। अबू सुफयान बिन हर्ब ने कहा या रसूलुल्लाह मेरे घर में सारे आदमी कहाँ आ सकते हैं। आप ने कहा जो व्यक्ति मस्जिद हराम में चला जाए वो भी सुरक्षित हैं। अबू सुफयान बिन हर्ब ने फिर कहा या रसुल्लाह मस्जिद हराम में भी समाई नहीं होगी। आप ने कहा जो व्यक्ति दरवाज़ा बन्द कर ले वो भी सुरक्षित है। अबु सुफयान ने कहा हां अब ठीक है।

अगले दिन रसूलुल्लाह मर्रे ज़हरान से मक्का के लिए रवाना हुए। आपके साथ दस हज़ार सहाबा का लश्कर था। यह संख्या असाधारण थी। जब यह सेना मक्का के निकट पहुँची तो उसकी एक टुकड़ी के सरदार साद बिन ओबादा अंसारी ने ऊँचे स्वर में कहा (आज का दिन रण का दिन है, आज काबा में क़त्ल हलाल (lawful) हो गया।)

रसूलुल्लाह ने इस नारे (द्योश) को पसन्द नहीं किया और कहा आज का दिन दया और करूणा का दिन है, साद ने ग़लत कहा आज के दिन अल्लाह काबा को सम्मान देगा। साद बिन ओबादा जो उस समय झंडा उठाए हुए थे, रसूलुल्लाह ने आदेश दिया कि झंडा उनसे ले लिया जाए और उनके बेटे क़ैस बिन साद को दे दिया जाए। ऐसा ही किया गया।

अबू सुफयान उस समय मक्का के सरदार थे। रसूलुल्लाह और आपके साथ आने वाले विशाल लश्कर को देखकर वो भयभीत हो गये। शीघ्रता से चल कर मक्का पहुँचे और मक्का में लोगों के सामने यह घोषणा कर दी कि मुहम्मद एक ऐसे लशकर के साथ आ रहे हैं जिससे मुकाबला करने की हम में शक्ति नहीं। तुम लोग इस्लाम कबूल कर लो सुरक्षित रहोगे और जो मस्जिद हराम में चला जाए वो भी सुरक्षित है या जो व्यक्ति मेरे घर में आ जाए वो भी सुरक्षित है या जो व्यक्ति अपना दरवाजा बंद कर ले या हथियार डाल दे उसको भी अमान है।

रसूलुल्लाह और आपके साथी मक्का में प्रवेश करके काबा की ओर बढ़े उस समय आप ऊँटनी पर सवार थे। विनम्रता के कारण आप इतना

अधिक झुके थे कि आपकी दाढ़ी के बाल कजावे (saddle) से लग रहे थे।

सहाबा (companions) को सख्ती के साथ यह आदेश दिया था कि तुम लोग किसी से जंग की शुरूआत न करना जो तुमसे लड़े केवल उसी से लड़ना।

मक्का में प्रवेश करने के बाद आप खानए काबा पहुँचे। उस्मान बिन तलहा जो चाबियों के मालिक थे बुला कर उनसे खानए काबा की कुंजियाँ लीं और बैतुल्लाह को खुलवाया। काबा की आंतरिक दीवारों पर उस समय चित्र बने हुए थे और वहाँ 360 बुत रखे हुए थे। आपने तस्वीरों को मिटाने तथा बुतों को काबा से निकालने का आदेश दिया।

उस समय मक्का के लोग बड़ी संख्या में आकर काबा के परिसर में इकट्ठा हो गए। वह लोग प्रतिक्षक थे कि उन लोगों के बारे में क्या र्निदेश दिया जाएगा जो कि अत्याचारी भी थे और जंगी मुजरिम (अपराधी) भी। आपने काबा के दरवाजे पर खड़े होकर यह अभिभाषण (sermon) दिया कि अल्लाह ही एक माबूद है उसका कोई शरीक (साझेदार) नहीं। उसने अपना वादा सच्चा कर दिखाया। और उसने अपने बन्दे की मदद की और अकेले, दलों (groups) को पराजित किया।

हज़रत मुहम्मद ने मक्का के लोगों से कोई बदला नहीं लिया बल्कि सार्वजनिक माफी की घोषणा कर दी। परिणाम यह निकला की समूचा मक्का मुसलमान हो गया। मक्का जो इससे पूर्व बुतप्रस्तों का नगर था, अब एक खुदा के मानने वालों का नगर बन गया।

अभिभाषण के उपरांत आप मस्जिद में बैठ गए। उस समय बैतुल्लाह की कुंजी आपके पास थी। हज़रत अली ने खड़े होकर कहा कि या रसूलुल्लाह यह कुंजी हमको दे दीजिए। आपने उनको उत्तर नहीं दिया बल्कि कहा उस्मान बिन तलहा कहाँ हैं। वो सामने आए तो बैतुल्लाह की कुंजी उन्हें दे दी और कहा ''आज वफ़ा और क्षमा का दिन है।''

जुहर की नमाज़ का वक्त आया तो आपने बिलाल को आदेश दिया

कि काबा के ऊपर चढ़ कर अज़ान दें। हज़रत बिलाल ने जब काबा पर अजान दी तो कुरैश को बहुत आश्चर्य हुआ। इसलिए की बिलाल एक काली चमड़ी के हब्शी (black African) थे। और किसी काले व्यक्ति का काबा पर चढ़ना कुरैश के लिए अविश्वसनीय था। इस तरह आपने व्यवहारिक रूप से यह घोषणा कर दी की प्रतिष्ठा और सम्मान का सम्बन्ध रंग से नहीं बल्कि संयम और धर्मपदायनता से है।

हजरत बिलाल ने जब खाना काबा में अज़ान दी तो कुछ युवक उनकी नकल (mimic) उतारने लगे। उन्हीं में अबू महजूरा भी थे। आपने अबू महजूरा को बुलवाया। अबू महजूरा भयभीत थे कदाचित कुछ गलत हो गया। और अब दंड भोगना पड़ेगा। आपने आदेश दिया की दोबारा अजान दें। उनकी अजान सुन कर आपने दरहम की एक थैली दी और सर, माथा और सीने पर प्रेमपूर्वक हाथ फेरा और दुआँए दीं।

अबू महजूरा कहते हैं तत्पश्चात मेरी सारी घृणा प्रेम मे परिर्वतित हो गई। रसूलुल्लाह ने उनको मक्का से अज़ान देने के लिए नियुक्त कर दीया।

फिर रसूलुल्लाह ने काबा का तवाफ (चक्कर) किया और उसके बाद सफ़ा पहाड़ी पर आए और काबा की ओर मुख करके खुदा की स्तुति (Praise of God) में वयस्त हो गए। आपके कुछ अन्सार साथियों को यह शंका आई कि कहीं आप फतह मक्का के बाद यहीं न रूक जाऐं। यह बात आपको तत्काल वही (खुदा का संदेश) द्वारा बताई गई। आपने अनसार को बुलाकर कहाः यह कदापि नहीं हो सकता। मैं अल्लाह का बन्दा और रसूल हुँ। तुम्हारा जीवन मेरा जीवन है । और तुम्हारी मौत मेरी मौत, यह सुनकर अनसार की आखों में आंसू आ गए।

उसके उपरांत लोग शपथ के लिए इकट्ठा होने लगे और शपथ लेने लगे। पुरूष से केवल इस्लाम पर और यथा शक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानने पर शपथ लेते थे। और महिलाओं से शपथ ली

जिसका कुरआन मे सुरह अल–मुम्तहिना में उल्लेख है कि वो न तो खुदा के साथ किसी को साझेदार बनाऐंगी ना चोरी करेंगीं न व्यभिचारिता करेंगी और ना औलाद को कत्ल करेंगी। (आयतः 12)

फतह मक्का के दुसरे दिन एक खुज़ाई ने एक हुज़ैली बुतप्रस्त की हत्या कर दी। जब आपको इस से सूचित किया गया तो आपने सफ़ा पहाड़ी पर खड़े हो कर एक तक़रीर की। आपने कहा किः

''ऐ लोगो, निसंदेह अल्लाह ने जिस दिन आकाश और पृथ्वी बनाए उसी दिन मक्का को आदरणीय ठहरा दिया था। इस लिए वो क़्यामत तक श्रद्धा योग्य और सम्माननीय रहेगा। हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन (Day of Judgement) पर विश्वास रखता हेा, यह उचित नहीं कि मक्का में खून बहाए और न किसी का किसी वृक्ष का काटना उचित है।'' इसके बाद आपने वधित को अपने पास से सौ ऊँट दियत (वो राशी जो खून के बदले में दी जाती है) के रूप में दिए।

मक्का वालों ने मुहाजिरीन की संपत्ति, भवन आदि पर क़ब्ज़ा कर लिया था। इस संदर्भ में कुछ मुहाजिरीन ने अपने अधिकारों की वापसी की मांग करनी चाही तो आपने उन्हें यह कहकर चुप करा दिया कि तुम क्षमा करो तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा और बदले के रूप में तुम को जन्नत में घर मिलेगा। इसके अतिरिक्त आपने यह भी कहा जो धन अल्लाह के मार्ग में जा चुका उसकी वापसी मैं पसन्द नहीं करता यहाँ तक कि स्वंय आपने अपने घर का नाम तक ना लिया।

फतह मक्का के दिन आपने सार्वजनिक माफ़ी की घोषणा कर दी थी। परन्तु कुछ ऐसे लोग थे जो गंभीर अपराध के दोषी थे। उनके लिए मृत्युदंड का निर्देश दिया गया। उनकी कुल संख्या 16 थी। परन्तु उनमें से कुछ का ही वध किया गया बाकी सबको छोड़ दिया गया। वो इस्लाम में दाख़िल हो गए। उन में इस्लाम लाने वालों के और जिनका मृत्युदंड माफी में परिवर्तित हो गया, कुछ के नाम ये हैंः

इकरमा बिन अबुजहल, कअब बिन ज़ुहैर, वहशी बिन हर्ब, हिन्दा अबू सुफयान की पत्नी, हबार बिन असवद। वहशी बिन हर्ब ने आपके चचा हमज़ा की हत्या की थी। यहाँ तक कि हिन्दा, जिसने हज़रत हमज़ा का कलेजा चबाया था। फिर भी आपने इन लोगों को क्षमा कर दिया।

## xTo% guu] vkrkl vkj rk;Q
## 6 'k0oky 8 fgtjh

हुनैन मक्का और तायफ के मध्य स्थित क्षेत्र है। यहाँ के लोग बड़े योद्धा (warrior) और तीर अंदाज़ (archer) थे।

फतहे मक्का के पश्चात उन्हें अपने बारे में भय हुआ कि अब मुसलमान उन पर आक्रमण न कर दें। उन्होंने आपसी सलाह–मशवरा से तय किया, कि इस से पूॅव कि मुसलमान हम पर आक्रमण करें हमें स्वंय उन पर चढ़ाई कर देनी चाहिए। इस उद्देश्य से उनका सेनापति मालिक बिन औफ नज़री बीस हज़ार की सेना लेकर मुसलमानों पर हमला करने के लिये निकला।

हज़रत मुहम्मद को जब यह सूचना मिली तो आपने पूरी सच्चाई का पता लगाने के लिए अब्दुल्लाह बिन अबी हदर असलमी को भेजा। उन्होंने आकर आपको उनके सैन्य बल का विवरण दिया। तब आपने भी मुकाबले की तैयारी आरंभ कर दी।

8 शव्वाल 8 हिजरी को हज़रत मुहम्मद ने 12 हज़ार लोगों के साथ मक्क़ा से हुनैन की ओर प्रस्थान किया। 12 हजार की सेनी जब हुनैन की ओर बढ़ रही थी तो एक सहाबी (companion) की ज़बान से यह अभिमान भरे शब्द निकल गए कि (संख्या की कमी के कारण आज हम कदापि परास्त होने वाले नहीं) इन वाक्यों में गर्व और अंहकार के भाव थे, जो खुदा को पसन्द नहीं आऐ। इसलिए जब मुसलमानों की सेना हुनैन की घाटी में पहुँची तो शत्रु ने बीस हज़ार तलवारेंा से सहसा आक्रमण

कर दिया। जिससे मुसलमान चकरा गए और उनमें भगदड़ मच गई। आपके पास केवल बारह जान निसार (जान कुर्बान करने वाले) रह गए ।

जो लोग मक्का से आए थे वह इस आकस्मिक पराजय से अनिश्चित्ता में पड़ गए। अबू सुफयान ने कहा ''अब यह पराजय थमती हुई नज़र नहीं आती।'' और कल्दा बिन हंबल ने खुशी से चिल्ला कर कहा ''आज यह इंद्रजाल टूट गया।'' उस समय रसूलुल्लाह अपने खच्चर पर सवार थे और ऊँचे स्वर में कह रहे थेः

मैं नबी हुँ, इसमे कोई झूठ नहीं है और मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हुँ। हजरत अब्बास ने आपके हुक्म से पुकार। ''ऐ अनसार गण, ऐ कीकर के वृक्ष के नीचे शपथ लेने वालो'' इस वाणी को सुनकर सारे लोग फिर आपके चारों ओर इकट्ठा हो गए। आपने दोबारा आक्रमण का आदेश दिया। मुसलमानों ने पूरी शक्ति और साहस के साथ दोबारा उनपर आक्रमण कर दिया। परिणामतः शत्रुओं के पाँव उखड़ गए और वह मैदान छोड़कर भागने लगे। कुछ लोगों ने भाग कर औतास के स्थान पर और कुछ ने नख़ला के स्थान पर शरण ली।

इस प्रकार मुसलमान विजयी हुए और उन लोगों को पराजय का मुंह देखना पड़ा। हवाज़िन समुदाय के कैदियों की संख्या लगभग 6 हज़ार थी। रसूलुल्लाह ने उनको मुक्त कर दिया। बाद को वह लोग ईमान ले आए।

## rk;Q dk egkfl jk

रसूलुल्लाह ने हुनैन के माले ग़नीमत (युद्ध में मिला हुआ माल) और कैदियों के संबंध में यह आदेश दिया कि उनको जअर्राना में रखा जाए। और स्वंय तायफ की ओर रवाना हुए। आपके तायफ पहुँचने के चार दिन बाद तुफैल बिन उमर दौसी भी एक दब्बाबा और मिनजनीक लेकर पहुँच गए। मालिक बिन औफ़ नज़री हवाज़न का सरदार आपके पहुँने से पुर्व स्वंय को तायफ के किले में बन्द कर चुका था। उसके पास कई वर्ष

की खाद्यसामग्री थी। आपने तायफ पहुँच कर उनका घेराव कर लिया। मिनजनीक द्वारा पत्थर बरसाए गए और इसके अतिरिक्त कई अन्य उपाय किए। परन्तु मुसलमान उन्हें क़िले से बाहर निकलने पर विवश न कर सके। आपने उनके बाग़ात कटवाने का आदेश दिया तो क़िले वालों ने अल्लाह, और नातेदारी का वास्ता दिया तो जुँ का त्युँ छोड़ दिया गया। उसके बाद आपने क़िले की दिवार के पास आवाज़ लगाई कि जो गुलाम (दास) उपर से उतर कर निचे आ जाएगा वह आज़ाद है। यह सुनकर 12–13 गुलाम आ गए वह सारे मुक्त कर दिए गए।

कहा जाता है कि हज़रत उमर ने रसूलुल्लाह से कहा कि या रसूलुल्लाह इन लोगों के लिए बद्दुआ (curse) किजिए। आपने उत्तर दिया कि अल्लाह ने हमको इसकी अनुमति नहीं दी। आपने वहाँ से चलने का आदेश दिया और लौटते हुए यह दुआ कीः

''ऐ अल्लाह सकीफ को हिदायत दे और उन्हें मेरे पास पहुँचा दे।'' वास्तव में ऐसा ही हुआ। सभी लोगों ने आपके पास मदीना आकर इस्लाम कबूल कर लिया, और क़िला अपने आप फतेह हो गया। तायफ से वापस होकर आप 5 ज़ीक़ादा को जअराना पहुँचे। जहाँ युद्ध में मिला हुआ माल जमा था। यहाँ पहुँचकर मुहम्मद (सल्ल०) ने दस दिन तक हवाज़िन की प्रतीक्षा की, कि संभवतः वह अपने लोगों को छुड़ाने आऐंगे। परन्तु जब कोई नहीं आया तो आपने माले ग़नीमत (war-booty) को धर्म योद्धाओं में बाँट दिया। हवाज़िन का प्रतिनिधी माले ग़नीमत के वितरण के उपरांत आपके पास पहुँचा। उन्होंने अपने कैदियों के बारे में बात चीत की यह 6 हज़ार लोग थे। आपने उन्हें मुक्त कर दिया। उसके बाद वह लोग इस्लाम में दाख़िल हो गए।

फतह मक्का के बाद जो सरदार इस्लाम लाए थे उनके विश्वास में निश्चिंता नहीं आई थी। मुहम्मद (सल्ल०) ने माल ग़नीमत के वितरण के समय उनको उसके अतिरिक्त धन भी दिया। यह बात अन्सार में से कुछ लोगों को महसूस हुई। कुछ लोगों ने इसको प्रकट भी कर दिया।

उसके बाद रसूलुल्लाह खड़े हुए और एक तक़रीर की जिसमें अन्य विषयों पर चर्चा करते हुए आपने अन्सार को संबोधित करते हुए यह भी कहाः

"क्या तुम इस बात पर सहमत नहीं हो कि दूसरे लोग अपने घर ऊँट और बकरी लेकर जाएें और तुम अल्लाह के रसूल को अपने साथ लेकर जाओ।"

इस तक़रीर को सुनकर अन्सार रोने लगे। और कहा हम इस बटवारे पर सहमत हैं कि अल्लाह का रसूल हमारे हिस्से में आऐ।

18 जीक़ादा को रात के समय आप जअरान से मक्का की ओर उमरा करने के इरादे से रवाना हुए। वहाँ पहुँच कर अत्ताब बिन असीद को मक्का का वाली नियुक्त किया और माज़ बिन जबल को शिक्षा देने के उद्देश्य से उनके पास छोड़ा और लगभग ढाई माह के बाद सहाबा के साथ मदीना वापस लौट आए।

फतह मक्का के बाद लगभग सारे जज़ीरा अरब (Arabian Peninsula) इस्लाम के अधीन हो गए। इसलिए विभिन्न स्थानेां में मुहम्मद (सल्ल०) ने शासनकर्ता नियुक्त किए। जैसे बाज़ान जो किसरा की ओर से यमन का शासक था, उसको यमन के शासन पर बनाए रखा। अबू सुफयान नजरान के और अत्ताब बिन उसैद मक्का के, हज़रत अली को यमन का काज़ी (न्यायाधीश) नियुक्त किया, इत्यादी।

## lfj¸;k m;;uk
## egjle 9 fgtjh

रसूलुल्लाह ने बिश्र बिन सुफयान अदवी को 9 हिजरी में सदक़ात (धार्मिक दान) वसूली के लिए भेजा। अधिकांश क़बीले इस पर सहमत हो गए। परन्तु बनू तमीम इस पर सहमत नहीं हुए और युद्ध लड़ने पर तैयार हो गए। बिश्र यह देख कर वापस आ गए और आकर पूरा ब्योरा रसूलुल्लाह को दिया। इस पर रसूलुल्लाह ने ओययना हसन फुज़ारी को

बनू तमीम की ओर भेजा, उनके साथ 50 सवार थे। वहाँ पहुँचकर उन्होनें बनू तमीम पर छापा मारा और कई पुरूष महिलाओं और बच्चों को बन्दी बना कर मदीना ले आए। बनू तमीम ने विवश होकर दस लोगों पर आध ाारित एक प्रतिनिधिमंडल आप के पास भेजा। यह प्रतिनिधमंडल मदीना पहुँचा और मुहम्मद (सल्ल०) से माँग की कि हमारे आदमियों से तक़रीर और शायरी (भाषण एवं काव्य कला) की प्रतियोगिता कि जाए। आप ने कहा न तो मैं कवि हूँ और न ही मुझे प्रतियोगिता का आदेश दिया गया है। उसके उपरांत दोनों ओर से भाशण और कविता में मुकाबला हुआ। अंत में अक़रा बिन हाबिस ने स्वीकार किया की ख़ुदा की क़सम आपका वक्ता हमारे वक्ता से और आपका कवि हमारे कवि से वढ़कर है। उसके बाद उन लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। आपने उन्हें पुरस्कार दिए और उनके कैदियों को वापस कर दिया।

## cvl oyhn fcu mdck
## egjle y&gjke 9 fg tjh

वलीद बिन उक़बा को आपने सदक़ात वसूली के लिए बनी अल–मुसतलिक की ओर भेजा। परन्तु वलीद बिन उक़बा को ग़लतफहमी हो गई कि यह लोग विद्रोह करना चाहते हैं। उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) से आकर कहा वह लोग सदक़ात देने के लिए तैयार नहीं हैं और इस्लाम से फिर गए हैं। इसी अवधि में बनी अल मुसतलिक़ को वास्तविकता का ज्ञान हो गया। उन्होंने एक प्रतिनिधि मदीना भेजा ताकी आपको सच्चाई से अवगत कराए। इस घटना के बारे में कुरआन में यह आयत उतरी ''ऐ ईमान वालो, यदि कोई बुरा आदमी कोई अहम ख़बर लाए तो तुम खोज (investigation) कर लिया करो''। (अल–हुजुरातः 6)

हिजरत के नवें वर्ष सफर के महीने में मुहम्मद (सल्ल०) ने अबदुल्लाह बिन औसजा को बनी उमर बिन हारिसा की ओर इस्लाम का संदेश देने के

लिए भेजा एवं इसी के साथ सफर में ही कुत्बा बिन आमिर की अध्यक्षता में 20 लोगों को ख़शअम से मुकाबले के लिए भेजा जिस में मुसलमानों को सफलता प्राप्त हुई।

रबीउल–अव्वल के महीने में सरिया ज़हहाक बिन सुफयान पेश आया और इसमें भी मुसलमान विजयी हुए। इसी अवसर पर यह घटना घटी कि कुछ लोगों ने अपने घर लौटने में शिघ्रता दिखाई। हज़रत अलक़मा जो सेनापति थे उनको यह बात अनियमित लगी। अतैव उन्होंने एक अलाव (bonefire) जलवाया और संमबंधित लोगों को आदेश दिया कि उसमें कुद जाऐं। दोशीयों में से कुछ लोग इसके लिए तैयार भी हो गए परन्तु अलक़मा ने तुरन्त ही यह कहकर उनको रोक दिया की मैंने तो केवल तुम्हारी परीक्षा ली थी। रसूलुल्लाह को जब इस घटना की जानकारी मिली तो आप ने कहा की जो तुम को पाप का आदेश दे उसकी आज्ञा का पालन ना करो।

हिजरत के नवें वर्ष रबीउल–अव्वल के महिने में आपने हज़रत अली को तैय समुदाय की ओर भेजा। उसके परिणाम स्वरूप जो लोग बन्दी बनाए गए, उसमें प्रसिद्ध दानवीर हातिम ताई की बेटी सफ्फाना भी थी। उसने अपने पिता की उदारता का हवाला देकर आपसे उपकार करने की विनती की। आपने मंजूर कर लिया और उसको सवारी, यात्रा का खर्च एवं पुरस्कार देकर भेजा।

## xTo% rcd
## j t c 9 fg t jh

हिजरत के नौवें वर्ष में रजब के महिने में हेरक़्ल शाहे रोम को यह निराधार ख़बर पहुँचाई गई की मुहम्मद (सल्ल०) का निधन हो गया है। और लोग भुखमरी और अकाल से पीड़ित हैं। इसलिए अरब पर आक्रमण करने का यह सबसे उचित समय है। हेरक़्ल इस समाचार के मिलते ही

तुरन्त तैयार हो गया। और मुसलमानों पर चढ़ाई करने क लिए चालिस हज़ार का लशकर तैयार किया।

आपको जब यह सूचना मिली की उसकी सेना बलक़ा तक पहुँच चुकी है। और यह कि हिरक़्ल ने अपनी सेना को एक वर्ष की अग्रिम राशि (advanced salary) का भुगतान भी कर दिया है। और रोमी पुरी तरह युद्ध के लिए तैयार हैं, तो आपने इस आक्रमण से आत्म रक्षा की तैयारी का आदेश दे दिया। और लोगों से सहयोग की अपील की। भीषण गर्मी और विकट परिस्थितिध्यों के कारण यह यात्रा बहुत कष्टदायक थी। इस लिए मुनाफिक़ीन (double standard) अर्थात जिनके मन में छल था, मुसलमानों को यह कहकर बहकाना (misguide) शुरू किया कि ऐसी गर्मी में जंग के लिए मत निकलो।

परन्तु सच्चे (true) मुसलमान इसके लिए तैयार हो गए। सर्वप्रथम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने अपनी कुल संपत्ति आगे लाकर रख दी। जब आपने प्रश्न किया बीवी बच्चों के लिए क्या छोड़ा है, तो अबू बक्र ने उत्तर दिया कि केवल अल्लाह और उसके रसूल को। हज़रत उमर फारूक ने अपनी आधी संपत्ति पेश कर दी। हज़रत उस्मान ने 300 ऊँट पुरे संसाधन के साथ और एक हज़ार दीनार लाकर इस मुहिम के लिए पेश कर दिए। हज़रत मुहम्मद बहुत प्रसन्न हुए और कहा इस श्रेष्ठ कार्य के बाद कोई कार्य उस्मान को हानि नहीं पहुँचाएगा और हज़रत उस्मान के लिए प्रार्थना की।

सहाबा का एक दल ऐसा भी था जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार था परन्तु यात्रा खर्च और सवारी न होने के कारण वह लोग स्वंय को विवश पा रहे थे। उन लोगों ने रसूल से सवारी मांगी, परन्तु प्रबंध न होने के कारण वह लोग रोते हुए वापस चले गए।

इन्हीं लोगों के संदर्भ में कुरआन में यह आयत उतरी जिसका अनुवाद यह हैः ''और न उन लोगों पर इल्ज़ाम है कि जब तुम्हारे पास आए कि तुम उनको सवाारी दो। तुमने कहा कि मेरे पास कोई साधन नहीं कि

तुमको उस पर सवार कर दुँ तो वो इस हाल में लौटे कि उनकी आँखों से आंसू बह रहे हैं, इस ग़म में कि उनके पास कुछ नहीं जो वो खर्च करें। (अल–तौबाः 92)

मदीना से कूच करने से पुर्व हज़रत मुहम्मद ने मुहम्मद बिन सलमा अन्सारी को अपने स्थान पर नियुक्त किया और मदीने के शासन का सारा कार्य भार उनके सुपर्द कर दिया और हज़रत अली को परिवार वालों की सुरक्षा और देख रेख के लिए मदीना छोड़ा। उसके बाद 30 हज़ार की सेना के साथ रवाना हुए। मार्ग में वो शिक्षाप्रद स्थान भी पड़ता था जहाँ कौम समूद पर अल्लाह का अज़ाब (punishment) आया था। जब क़ाफिले का उधर से गुज़र हुआ तो आपने मुख पर कपड़ा लटका लिया और ऊँटनी को तेज कर दिया और सारे लोगों को आदेश दिया कि कोई व्यक्ति इन घरों के अन्दर न जाए और न ही यहाँ का पानी इत्यादि प्रयोग करें।

एक स्थान पर आपने पड़ाव डाला तो यहाँ आपकी ऊँटनी गुम हो गई। एक मूनाफ़िक़ (मन में कपट रखनेवाला) ने कहा मुहम्मद आसमान का समाचार बताते हैं। परन्तु पृथ्वी पर उनकी ऊँटनी की उनको खबर नहीं। आपको जब पता चला तो आपने कहाः खुदा की कसम मुझको जो कुछ ज्ञात होता है वो अल्लाह की वही (खुदा द्वारा भेजा गया संदेश) द्व ारा होता है। और अब वही द्वारा मुझे पता चला है कि ऊँटनी प्रायः उस घाटी में है। और उसकी नकेल एक वृक्ष से अटक गई है। इस तरह आपके साथी गए और उस ऊँटनी को ले आए।

तबूक पहुँच कर आप 20 दिन ठहरे परन्तु कोई मुकाबले पर नहीं आया। यहाँ से हज़रत मुहम्मद ने 420 सवारों की एक टुकड़ी को खालिद बिन वलीद के नेतृत्व में अकेदर की ओर भेजा, जो हेरक़्ल की ओर से दौमतुल जन्दल का शासक था।

आपने उनको भेजते समय कहा कि वो तुमको शिकार खेलता हुआ मिलेगा तुम उसका वध मत करना केवल बन्दी बना कर मेरे पास ले

आना। वास्तव में ऐसा ही हुआ। खालिद बिन वलीद उसे पकड़ कर आपके पास ले आए। उसने आपसे संधि कर ली।

बीस दिन रूके रहने के पश्चात आप तबूक से मदीना लौट आए। मदीना पहुँच कर आपने दो व्यक्तियों को आदेश दिया कि जाकर मस्जिद ज़रार को ढा दें। यह वही मस्जिद थी जिसका निर्माण दुष्ट लोगों ने किया था। तबूक जाने से पूर्व उन मुनाफ़िक़ीन ने आपसे कहा था कि आप यहाँ आकर एक बार नमाज़ पढ़ा दें ताकी यह Blessed हो जाए। आपने कहा जब मैं वापस लौटूँगा तब देखा जाएगा। वापस आने के बाद आप ने उसे ढ़ाने का आदेश दे दिया।

इस ग़ज़्वः में लगभग सारे ही लोग शामिल थे अतिरिक्त कुछ लोगों के जिनके पास वास्तविक कारण था। परन्तु तीन व्यक्ति ऐसे थे जो बिना किसी सबब के शामिल नहीं थे। और जिनको कुरान में पीछे रह जाने वाले कहा गया था। उन लोगों ने रसूलुल्लाह के पास आकर अपनी गलती को माना। आपने लोगों को आदेश दिया कि 50 दिन तक कोई उन से बात–चीत न करे। 50 दिन के बाद वही उतरी जिसमें उनकी तौबा (प्रायश्चित) के कबूल होने का शुभ समाचार था। आपने हज़रत काब को जो उन पीछे रह जाने वालों में थे बधाई दी और कहा मुबारक हो तुमको यह दिन जो तुम्हारे जीवन का सब से अच्छा दिन है। हज़रत काब ने कहा या रसूलुल्लाह, अल्लाह ने मुझको केवल सच के कारण नजात दी है, इसलिए मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजीवन झूठ नहीं बोलूँगा।

## vc cØ flÌhd d urRo e gt ;k=k

### thdknk 9 fgtjh

ज़ीक़ादा 8 हिजरी में आप ने अबू बक्र को अमीरे हज नियुक्त करके मक्का भेजा। तीन सौ आदमी मदीना से अबू बक्र सिद्दीक के साथ चले। कुर्बानी के बीस ऊँट उनके साथ थे। उनके सुपूर्द यह कार्य था कि

कुरान की चालीस आयतें (Verses) जो बरअत (बात का पूरी तरह साफ होना) के रूप में उतरी थीं। वहाँ उनकी घोषणा कर दें। परन्तु बाद में रसूलुल्लाह ने अपना निर्णय बदलकर घोषणा के लिए हजरत अली को नियुक्त किया।

इसी वर्ष हब्श के बादशाह नजाशी का निधन हुआ आपको यह सामाचार वही द्वारा दिया गया। आपने सहाबा को इक्ट्ठा करके ग़ायबाना नमाज़ जनाज़ा (offering Namaz in the absence of dead body) पढ़ी। और उसी वर्ष सूद की हुर्मत (सूद लेने की मनाही) का आदेश कुरान में उतारा गया। और एक वर्ष बाद हज्जतुलविदा (अंतिम हज) के अवसर पर सूद के निषेघ होने की घोषणा की।

## vkey oQn ¼ifrfuf/keMy d vku dk o"k½
## 10 fgtjh

क़बाएली समुदायों के प्रतिनिधिमंडल का आना 8 हिजरी से आरंभ हो गया था। परन्तु अधिकतर ऐसे प्रतिनिधिमंडल हिजरत के नवें एवं दसवें वर्ष में आए। फतह मक्का के बाद इस प्रकरण से इन दोनों वर्ष को वफ़ूद का साल (प्रतिनिधिमंडल के आने का वर्ष) कहा गया। यहाँ कुछ मुख्य प्रतिनिधिमंडल का उल्लेख किया जाता है।

वफ़्द हवाज़िनः (हवाज़िन प्रतिनिधिमंडल) फतह मक्का के बाद यह पहला प्रतिनिधिमंडल था जो आपके पास आया। इसमें कुल 14 व्यक्ति थे जिनमें हज़रत मुहम्मद के रज़ाई चचा भी शामिल थे। हज़रत हलीमा सादिया इसी समुदाय से थीं। इन लोगों ने इस संबंध का उल्लेख करके कि आप इसी समुदाय के लोगों की गोद में पले बढ़े थे आप से दया और कृपा का अनुरोध किया इस अवसर पर उन्होंने कुछ कविताऐं भी पढ़ी। आपने उनके साथ आदर–सम्मान का मामला किया।

वफ़्द सक़ीफ़ः (सक़ीफ़ प्रतिनिधिमंडल) रमज़ान 9 हिजरी में सक़ीफ का एक प्रतिनिधिमंडल इस्लाम क़बूल करने एवं शपथ लेने के लिए मदीना

आया। यह वही लोग थे जो तायफ के घेराव के अवसर पर अपने किलों में बंद होकर बैठ गये थे। अब उन्होंने आपकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।

सक़ीफ़ समुदाय का मामला अन्य समुदायों से भिन्न था। जब शपथ का समय आया तो उन्होंने कहा कि वह ईमान लाऐंगे परन्तु उनके ऊपर सदका नहीं होगा और उनके ऊपर जिहाद नहीं होगा। तब भी रसूलुल्लाह ने उनसे शपथ ले ली। आपके कुछ साथियों को इस पर आश्चर्य हुआ तो आपने कहा जब इस्लाम ले आऐंगे तो वह सदक़ा भी देंगे और जिहाद भी करेंगे (सीरत इब्ने कसीर 56:4) बाद में ऐसा ही हुआ।

वफ़्द अब्दुल कैस (अब्दुलकैस का प्रतिनिधिमंडल): अब्दुलकैस एक बहुत बड़ा कबीला था जो बहरैन में आबाद था। उस वफद ने आपसे निवेदन किया कि आप कोई ऐसा जामेअ अमल (प्रभावकारी एवं संपूर्ण कार्य) बताऐं कि जिस से वो जन्नत के भागीदार (entitle) हो सकें। आपने कहा अल्लाह पर ईमान लाओ, नमाज़ क़ायम करो, जक़ात दो और मालग़निमत का पाँचवां भाग अल्लाह के मार्ग में दिया करो।

वफ़्द नजरान (नजरान का प्रतिनिधिमंडल): 9 हिजरी में नजरान के नसारा का एक प्रतिनिधिमंडल आप से भेंट करने आया। जिसमें 60 आदमी थे। उनमें से 14 उनके समुदाय के प्रमुख थे। आप ने इस वफद को मस्जिद नबवी में उतारा। असर की नमाज़ हो चुकी थी। थोड़ी देर के बाद जब उन लोगों की नमाज़ का समय आया तो उन लोगों ने नमाज़ पढ़नी चाही। इस बात को लेकर आपके कुछ साथियों ने आपत्ति जताई तथा उनको रोका। आपने कहा पढ़ने दो। फिर उन्होंने पूर्व (East) की ओर रूख करके नमाज़ पढ़ी।

इन लोगों से विभिन्न विषयों पर बात–चीत हुई। जिनमें विशेशतः ईसा का खुदावंद होना और उनके नबी होने का विषय छाया रहा। उन पर सच स्पष्ट हो गया, इसके उपरांत उन्होंने सच मानने से इन्कार कर दिया। कुरान में आले–ईमरान की आरंभिक आयतें (Verses) इसी अवसर पर उतारी गईं।

## gT t r|y onkv

हिजरी के नवें वर्ष में काबा अज्ञानता के सारे रीति–रिवाज से पाक हो चुका था। अब समय आ गया था कि रसूलुल्लाह स्वंय व्यक्तिगत रूप से हज अदा करें ताकि लोग आपको देखकर हज के मनासिक (हज के तरीके) और आदेशों को जान लें। ज़ीकादा 9 हिजरी में आप ने हज यात्रा का इरादा किया। निकट और दूर चारों ओर घोषणा करा दी गई कि रसूलुल्लाह इस वर्ष हज करने वाले हैं। और मुहम्मद (सल्ल०) 25 ज़िक़ादा को रवाना हुऐ। आपके साथ सहाबा की भारी संख्या थी। जिनमें एक लाख से अधिक लोग शामिल थे। चार ज़िल्हिज्ज को आपने मक्का में प्रवेश किया और मनासिके हज अदा किये। उसके बाद अरफात के मैदान में एक लंबा अभिभाषण (sermon) दिया। अल्लाह की स्तुति और प्रशंसा के बाद कहाः

''ऐ लोगो, जो मैं कहता हूँ उसको सुनो। कदाचित आगामी वर्ष तुमसे मिलना न हो। ऐ लोगो, तुम्हारी जानें और इज़्ज़त और माल आपस में एक दुसरे के लिये हराम हैं। जैसे कि यह दिन, यह महीना, यह नगर हराम हैं। अज्ञानता के सारे मामलात मेरे पैरों के नीचे हैं। और अज्ञानता के सारे खून मैं क्षमा करता हूँ। और सबसे पहले इस परिवेश में मैं रबीआ बिन हारिस का खून जो बनी हुज़ैल पर है क्षमा करता हुँ। अज्ञानता के सारे सूद खत्म करता हूं। तुम्हारे लिए केवल रासुलमाल अर्थात मूल राशि पूँजी है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम अब्बास बिन अब्दुल मूत्तलिब का भार खत्म करता हँ। उसके बाद आप ने पति–पत्नी के संबंधो और दाम्पत्य अधिकारों (conjugal rights) के बारे में निर्देश दिये। फिर कहा मैं तुम्हारे बीच ऐसी मजबूत चीज़ छोड़े जाता हूँ जिसको तुम दृढ़ता से पकड़े रहोगे तो कभी रास्ते से भटकोगे नहीं। यह अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत (prophetic model) है।''

फिर सहाबा को संबोधित करते हुए कहा ''क़यामत के दिन तुमसे मेरे बारे में प्रश्न होगा। तुम क्या उत्तर दोगे।'' सहाबा ने उत्तर दिया कि हम गवाही देंगे कि आपने हम तक अल्लाह का संदेश पहुँचा दिया। और खुदा की धरोहर अदा कर दी और उम्मत की भलाई चाही। हज़रत मुहम्मद ने तीन बार शहादत की ऊँगली से आसमान की ओर संकेत करके कहाः

''ऐ अल्लाह गवाह रह,''

आप का खुत्बा पूरा हो गया तो हजरत बिलाल ने जुहर की अज़ान दी। जुहर और अस्र दोनों नमाजें एक साथ अदा की गईं। उसके बाद आप खुदा की प्रशंसा, स्तुति और इस्तगफ़ार में व्यस्त हो गये। उसी समय कुरान की यह आयत (verse) उतरी, जिसका अनुवाद यह हैः ''आज मैने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) पूरा कर दिया। और तुमपर अपनी अनुकंपा पूरी कर दी। और दीन इस्लाम को तुम्हारे लिए पसन्द कर लिया''। (5ः 3)

रसूलुल्लाह ने मिना में भी इसी प्रकार का अभिभाषण दिया क्योंकि इस हज के खुत्बे में रसूलुल्लाह ने कहा था कि ''शायद तुम से फिर भेंट न हो'' इसी कारण इसको हज्जतुल विदा (विदाई का हज) कहते हैं। आप ज़िल्हिज्जा के महीने के अंत में मदीना लौट आऐ।

## f tCjkbly dh vken

हज्जतुलविदा के कुछ दिनों बाद जिब्राईल अमीन आपके पास आए और दोज़ानू (घुटनों के बल बैठने की मुद्रा) होकर आपके निकट बैठ गए। और आपसे ईमान, एहसान (उपकार) और कयामत के बारे में कुछ प्रश्न किये और आपने उसके उत्तर दिये। जब वो उठकर चले गये तो आपने सहाबा को संबोधित करके कहाः तुम जानते हो यह कौन थे, यह जिब्राईल अमीन थे जो तुमको दीन की शिक्षा देने के उद्देश्य से आए थे।

## lfj¸;k mlkek fcu tn

## 26 lQj 10 fgtjh

26 सफ़र 10 हिजरी को आपने रूमियों से मुकाबले के लिए सेना की तैयारी का आदेश दिया। यह अंतिम सरिया था। आपने उसामा बिन ज़ैद को उसका अमीर (सरदार) नियुक्त किया। और इस सेना में बड़े–बड़े सहाबा को शामिल होने का निर्देश दिया। अतः अपने हाथ से चिन्ह बनाकर दिया। हज़रत उसामा ने सेना को जुर्फ़ के स्थान पर इकट्ठा किया। परन्तु यहाँ से आगे जाने के पुर्व ही रसूलुल्लाह का निधन हो गया। निधन का समाचार सुनकर वह लोग वापस लौट आए।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ जब ख़लीफ़ा (शासक) बन गए तो विरोध के उपरांत उन्होंने सर्वप्रथम उसामा को रवाना किया और जुर्फ तक स्वंय छोड़ने गए।

## vfre le;

हज्जतुलविदा से वापस लौटते हुए सूरह अल–नस्र उतरी। यह आख़िरत की ओर आपकी वापसी का संकेत था। उसके बाद आप इस्तग़फार व तसबीह में व्यस्त हो गए। हज के अवसर पर इस आयत के उतरने से, (कि आज मैनें तुम्हारे दीन को पूर्ण कर दिया) मुहम्मद (सल्ल०) को अनुमान हो गया था कि अब उनका अंतिम समय निकट आ चुका है।

ग़दीरे खुम के अवसर पर आपने अपने अभिभाषण में कहा था कि मुझको यह भय नहीं कि तुम लोग शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझेदार बनाने) में पड़ जाओगे वरन् यह भय है कि दुनिया के लोभ, ईर्ष्या और आपसी नफरत में पड़ जाओगे और आपस में लड़ोगे और हलाक होगे।

## chekjh dh 'k:vkr

सफ़र के महिने के अंतिम सप्ताह में आप एक रोज़ रात में उठे और अपने दास को जगाया और कहा कि मुझको यह आदेश हुआ है कि

बक़ीअ के परीवार वालों के लिए इस्तिग़फार करूँ। वहाँ से वापस आने के बाद तबीयत बिगड़ गई, सिर दर्द और बुख़ार हो गया। जब तकलीफ और ज़्यादा बढ़ गई तो कहा मेरे सिर पर सात मशकें पानी की डालो। आदेश के अनुसार सात मशकें आपके सिर पर पानी की डाली गईं। जब इससे कुछ राहत मिली तो आप हज़रत अली के सहारे मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ाई। यह ज़ोहर की नमाज़ थी। इसके बाद आपने सहाबा को संबोधित करते हुए उपदेश दिया। यह आपका अंतिम उपदेश था।

इसमें आपने अन्य बातों के साथ यह भी कहा कि लानत (अल्लाह की कृपा से वंचित होना) हो अल्लाह की यहूद और नसारा पर जिन्होंने अपने पैग़म्बरेां की क़ब्रों को सजदा करने का स्थान (माथा टेकने का स्थान) बना लिया। इसका उद्देश्य अपनी उम्मत को सावधान करना था ताकि वो आपकी क़ब्र को सज्दागाह न बनाऐं।

## jlyYykg dh vfre lkefgd uekt vkj gtjr vc cØ dk beker dk vkn'k

जब तक आपके अन्दर शक्ति रही आप नियमित रूप से मस्जिद में आते रहे और नमाज़ पढ़ाते रहे। मुहम्मद (सल्ल०) की अंतिम नमाज़ मग़रिब की थी । जिसके चार दिन के बाद आपका देहान्त हो गया। इशा के समय आपने पूछा कि क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं। उत्तर मिला लोग आपकी प्रतिक्षा कर रहे हैं। आपने कई बार उठने की कोशिश की परन्तु स्वास्थ ज़्यादा बिगड़ जाने के कारण उठ नहीं पाए। अंततः आप (सल्ल०) ने कहा अबू बक्र को नमाज़ पढ़ाने के लिए कहो। इसलिए उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) के स्थान पर नमाज़ पढ़ाई।

## fu/ku

हिजरत के दसवें वर्ष सोमवार, दिनांक 12 रबीउल–अव्वल को

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का देहान्त हुआ। उस दिन सुबह को आपने अपने हुजरे का पर्दा उठाया तो देखा कि लोग सफ बाँधे नमाज़ पढ़ रहें हैं। आप देखकर खुश हो गए। उसी दिन आप पर नज़अ (जांकनी) की स्थिति बन गई। हज़रत मुहम्मद अपना सर हज़रत आयशा की गोद में रखकर लेट गए। उसी स्थिति में मिसवाक किया। आपके पास पानी का एक प्याला रखा हुआ था। दर्द से व्याकुल हो कर बार–बार अपना हाथ उस प्याले में डालते और मुख पर फेर लेते और यह कहते की अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद (पुज्य) नहीं हैं। अवश्य ही मौत बड़ी कठिन है। फिर छत की ओर देखते और कहते ऐ अल्लाह, रफीक़े आला। और उसके बाद आपकी रूह (जान) आलमे बाला (सर्वलोक) में सुधार गई। इन्ना लिल्लाह–व इन्ना इलैहि राजिऊन। देहान्त के समय मुहम्मद (सल्ल०) की आयु 63 वर्ष थी। यह 12 रबिउल–अव्वल सोमवार का दिन था।

## l gkck esa csPkSuh

इस समाचार से सहाबा में बेचैनी फैल गई। लोग सन्नाटे में आ गए। हज़रत उमर ने तलवार उठा ली और कहा जो व्यक्ति यह कहेगा कि हज़रत मुहम्मद का निधन हो चुका है, मैं उसकी गर्दन मार दूँगा। उस समय हज़रत अबू बक्र मस्जिद–नबवी में आए और खड़े होकर तक़रीर की। जिसमें उन्होंने कहा जो व्यक्ति मुहम्मद की पूजा करता था वो जान ले कि मुहम्मद पर मौत आ चुकी है, और जो व्यक्ति अल्लाह की पुजा करता था तो, अल्लाह ज़िन्दा है, उसपर मैात आने वाली नहीं। फिर उन्होंने कुरआन की यह आयत पढ़ीः मुहम्मद केवल अल्लाह के रसूल हैं, उनसे पुर्व भी रसूल गुज़र चुके हैं। यदि उनपर मौत आ जाए या वह क़त्ल कर दिये जाएें तो क्या तुम उलटे पाँव फिर जाओगे। और जो व्यक्ति उलटे पाँव फिर जाए तो वो अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्र करने वालों को उसका बदला देगा। (आले–इमरानः 144)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की तक़रीर सुन कर लोगों की अनिश्चित्ता समाप्त हो गई। हज़रत उमर फारूक कहते हैं कि मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैंने पहली बार इन आयतों को सुना है। इसको सुनकर मैंने जान लिया कि रसूलुल्लाह का निधन हो गया।

इसी बीच यह समाचार मिला कि अन्सार सक़ीफा बनी सायेदा में इकट्ठा हैं और आपकी जानशीनी के बारे में विचार–विमर्श कर रहे हैं। और साद बिन ओबादा के हाथ पर शपथ लेना चाहते हैं।

हज़रत अबू बक्र और उमर वहाँ गए और कुछ तर्क–वितर्क के पश्चात यह तय पाया कि अबू बक्र सिद्दीक़ ख़लीफ़ा और रसूलुल्लाह के प्रथम जानशीन होंगे। जब एक मत से यह तय हो गया कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक खलीफ़ा चुन लिए गए तब देहान्त के दुसरे दिन आपकी तजहीज़–तकफीन (burial) हुई। आप मस्जिदे–नब्वी के उसी हुजरे में दफ़न किए गए जहाँ आपका निधन हुआ था।

---

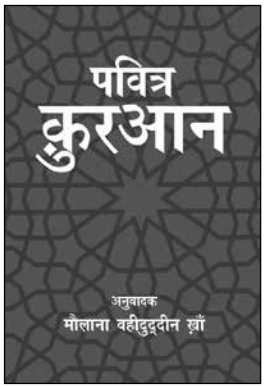


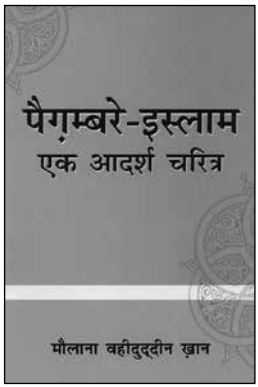

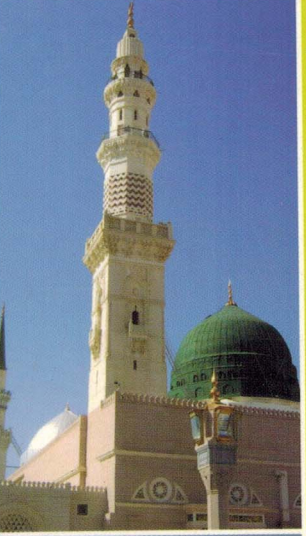

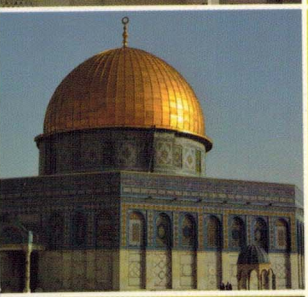

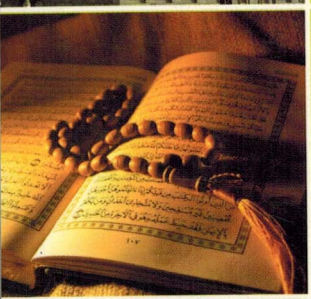

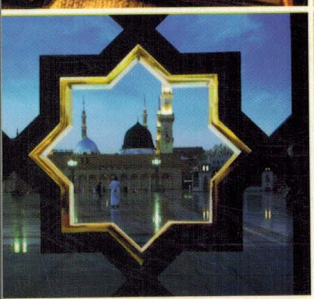

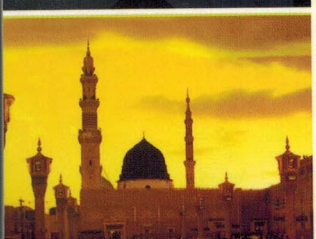

# पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद ﷺ का जीवन

यह किताब, पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद ﷺ के जीवन का एक सादा अध्ययन है। इस में किसी व्याख्या के बग़ैर, इतिहासिक रूप में, पैग़म्बरे इस्लाम के जीवन का वर्णन किया गया है। यह किताब गोया, पैग़म्बरे इस्लाम के जीवन की एक इतिहासिक तस्वीर है।

GOODWORD
www.goodwordbooks.com
info@goodwordbooks.com

ISBN 81-7898-818-4
9788178988184